राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

क्रांति समय

सुरत गुजरात से प्रकाशित, मुंबई, उत्तरप्रदेश, बिहार, राजस्थान, मध्यप्रदेश, उत्तरांचल, उत्तराखंड, दिल्ली, हरियाणा में प्रकाशित

सुरत-गुजरात, संस्करण शुक्रवार 15 अगस्त 2025 वर्ष-8,अंक-177 पृष्ठ-08 मूल्य-01 रूपये

Website : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

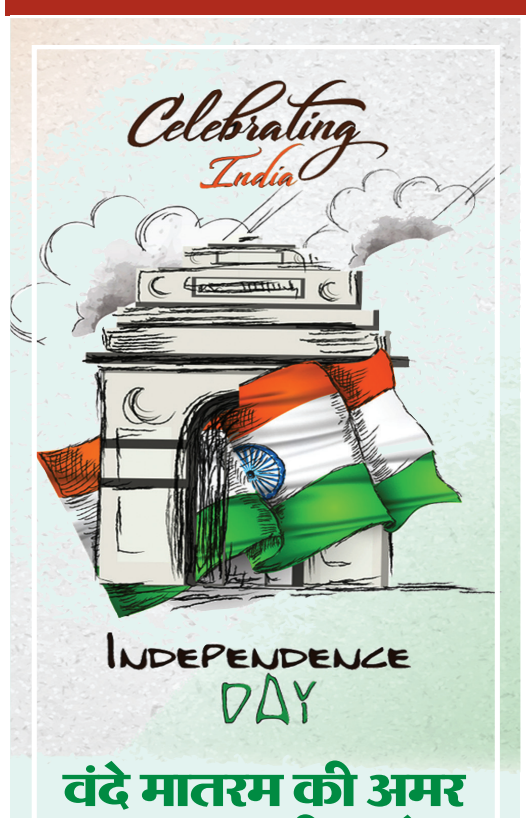

वंदे मातरम की अमर गाथा, एक गीत जो पवित्र ऋचा बन गया

वन्दे मातरम!
सुजलाम, सुफलाम मलयज-शीतलाम
शस्यश्यामलाम मातरम
वन्दे मातरम
शुभ्र ज्योत्स्ना पुलकितयामिनीम
फुल्लकुसुमित द्रुमदल शोभिनीम
सुहासिनीम सुमधुरभाषिणीम
सुखदाम, वरदाम, मातरम!
वन्दे मातरम वन्दे मातरम

ब्रिटिश शासन के दौरान देशवासियों के दिलों में गुलामी के खिलाफ आग भड़काने वाले सिर्फ दो शब्द थे- 'वंदे मातरम' । आइए बताते हैं इस क्रांतिकारी, राष्ट्रभक्ति के अजर-अमर गीत के जन्म की कहानी
बंगाल के महान साहित्यकार श्री बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय के ख्यात उपन्यास 'आनंदमठ' में वंदे मातरम् का समावेश किया गया था। लेकिन इस गीत का जन्म 'आनंदमठ' उपन्यास लिखने के पहले ही हो चुका था। अपने देश को मातृभूमि मानने की भावना को प्रज्वलित करने वाले कई गीतों में यह गीत सबसे पहला है। 'वंदे मातरम' के दो शब्दों ने देशवासियों में देशभक्ति के प्राण फूँक दिए थे और आज भी इसी भावना से 'वंदे मातरम्' गाया जाता है। हम यों भी कह सकते हैं कि देश के लिए सर्वोच्च त्याग करने की प्रेरणा देशभक्तों को इस गीत से ही मिली। पीढ़ियाँ बीत गई पर 'वंदे मातरम्' का प्रभाव अब भी अक्षुण्ण है। 'आनंदमठ' उपन्यास के माध्यम से यह गीत प्रचलित हुआ। उन दिनों बंगाल में 'बंग-भंग' का आंदोलन उफान पर था। दूसरी ओर महात्मा गाँधी के असहयोग आंदोलन ने लोकभावना को जाग्रत कर दिया था। बंग भंग आंदोलन और असहयोग आंदोलन दोनों में 'वंदे मातरम' ने प्रभावी भूमिका निभाई। स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के लिए यह गीत पवित्र मंत्र बन गया था।
बंकिम बाबू ने 'आनंदमठ' उपन्यास 1880 में लिखा। कलकत्ता की 'बंग दर्शन' मासिक पत्रिका में उसे क्रमशः प्रकाशित किया गया। अनुमान है कि 'आनंदमठ' लिखने के करीब पाँच वर्ष पहले बंकिम बाबू ने 'वंदे मातरम' को लिख दिया था। गीत लिखने के बाद यह यों ही पड़ा रहा। पर 'आनंदमठ' उपन्यास प्रकाशित होने के बाद लोगों को उसका पता चला। इस संबंध में एक दिलचस्प किस्सा है। बंकिम बाबू 'बंग दर्शन' के संपादक थे। एक बार पत्रिका का साहित्य कम्पोज हो रहा था। तब कुछ साहित्य कम पड़ गया, इसलिए बंकिम बाबू के सहायक संपादक श्री रामचंद्र बंदोपाध्याय बंकिम बाबू के घर पर गए और उनकी निगाह 'वंदे मातरम्' लिखे हुए कागज पर गई। कागज उठाकर श्री बंदोपाध्याय ने कहा, फिलहाल तो मैं इससे ही काम चला लेता हूँ। पर बंकिम बाबू तब गीत प्रकाशित करने को तैयार नहीं थे। यह बात 1872 से 1876 के बीच की होगी। बंकिम बाबू ने बंदोपाध्याय से कहा कि आज इस गीत का मतलब लोग समझ नहीं सकेंगे। पर एक दिन ऐसा आएगा कि यह गीत सुनकर सम्पूर्ण देश निद्रा से जाग उठेगा। इस संबंध में एक किस्सा और भी प्रचलित है। बंकिम बाबू दोपहर को सो रहे थे। तब बंदोपाध्याय उनके घर गए। बंकिम बाबू ने उन्हें 'वंदे मातरम' पढ़ने को दिया। गीत पढ़कर बंदोपाध्याय ने कहा, 'गीत तो अच्छा है, पर अधिक संस्कृतनिष्ठ होने के कारण लोगों की जुबान पर आसानी से चढ़ नहीं सकेगा।' सुनकर बंकिम बाबू हँस दिए। वे बोले, 'यह गीत सदियों तक गाया जाता रहेगा।' 1876 के बाद बंकिम बाबू ने बंग दर्शन की संपादकी छोड़ दी। 1875 में बंकिम बाबू ने एक उपन्यास 'कमलाकांतेर दफ्तर' प्रकाशित किया। इस उपन्यास में 'आभार दुर्गोत्सव' नामक एक कविता है। 'आनंदमठ' में संत-गणों को संकल्प करते हुए बताया गया है। उसकी ही आवृत्ति 'कमलाकांतेर दफ्तर' के कमलकांत की भूमिका निभाने वाले चरित्र के व्यवहार में दिखाई देती है। धीर-गंभीर देशप्रेम और मातृभूमि की माता के रूप में कल्पना करते हुए बंकिम बाबू गंभीर हो गए और अचानक उनके मुँह से 'वंदे मातरम्' शब्द निकले। यही इस अमर गीत की कथा है।
1896 में कलकत्ता में काँग्रेस का राष्ट्रीय अधिवेशन हुआ। उस अधिवेशन की शुरुआत इसी गीत से हुई और गायक कौन थे पता है आपको? गायक और कोई नहीं, महान साहित्यकार स्वयं गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर थे। कितना भाग्यशाली गीत है यह, जिसे सबसे पहले गुरुदेव टैगोर ने गाया। यह भी माना जाता है कि बंकिम बाबू एक कीर्तनकार द्वारा गाए गए एक कीर्तन गीत 'एसो एसो बंधु माघ आँचरे बसो' को सुनकर बेहद प्रभावित हुए। गीत सुनकर गुलामी की पीड़ा का उन्होंने तीव्र रूप से अनुभव किया। इस एक गीत ने भारतीय युवकों को एक नई दिशा-प्रेरणा दी, स्वतंत्रता संग्राम का महान उद्देश्य दिया। मातृभूमि को सुजलाम्-सुफलाम बनाने के लिए प्रेरित किया। 'वंदे मातरम।' इन दो शब्दों ने देश को आत्मसम्मान दिया और देशप्रेम की सीख दी। हजारों वर्षों से सुप्त पड़ा यह देश इस एक गीत से निद्रा से जाग उठा। तो ऐसी दिलचस्प कहानी है वंदे मातरम गीत की।

भारत का स्वतंत्रता दिवस

आजादी यह एक ऐसा शब्द है जो प्रत्येक भारतवासी की रगों में खून बनकर दौड़ता है। स्वतंत्रता हर मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार है। तुलसीदास जी ने कहा है 'पराधीन सपनेहुं सुखनाहीं' अर्थात पराधीनता में तो स्वप्न में भी सुख नहीं है। पराधीनता तो किसी के लिए भी अभिशाप है। जब हमारा देश परतंत्र था उस समय विश्व में न हमारा राष्ट्रीय ध्वज था, न हमारा कोई संविधान था।
आज हम पूर्ण स्वतंत्र हैं तथा पूरे विश्व में भारत की एक पहचान हैं। हमारा संविधान आज पूरे विश्व में एक मिसाल है। जिसमें समस्त देशवासियों को समानता का अधिकार है। हमारा राष्ट्रीय ध्वज भी प्रेम, भाईचारे व एकता का प्रतीक है। भारत वर्ष के महान संविधान रचयिता बाबा साहेब डॉ.भीमराव आंबेडकर ने संविधान में विशेष रूप से भारत के प्रत्येक नागरिक को आजादी का अहसास कराया है अथवा विशेष अधिकार दिए हैं। जब से हमारा भारत आजाद हुआ है तभी से आर्थिक व तकनीकी रूप से हमारा देश सम्पन्नता की ऊंचाइयों तक पहुंचा है।
आज पूरे विश्व में भारत आशा की किरण बनकर सूर्य की भांति आकाश में चमक रहा है, यह सब आजाद भारत में ही संभव हुआ है। हमें ये आजादी आसानी से नहीं मिली है, इसके लिए देश के शूरवीरों व आजादी के मतवालों ने अपना बलिदान देकर दिलाई है, हमें उनका सदैव आभार मानना चाहिए। आज हम आजादी की खुली हवा में सांस ले रहे हैं, वह सब भारत माता के उन सपूतों की याद दिलाता है, जिन्होंने अपना सर्वस्व देश के नाम कर दिया था। भारत के प्रसिद्ध विद्वानों, कवियों, इतिहासकारों अथवा लेखकों ने भारत का सामाजिक रूप से सुधार करके भारत की आजादी में चार चांद लगाए।
आज भारत पूर्व विश्व में अतुल्य है। सामाजिक कुप्रथाओं का अंत हुआ, गरीबों का आर्थिक शोषण समाप्त हुआ तथा गांवों की दयनीय स्थिति में तेजी से सुधार हुआ। आज भारत सहित पूरा विश्व आतंकवाद से जूझ रहा है, जो आजादी के नाम पर एक सबसे बड़ा कलंक है। यह तो हम सभी जानते हैं कि आतंकवाद का कोई धर्म नहीं होता। कुछ लोग आतंकवाद का चोला पहन लेते हैं तथा निर्दोष लोगों की हत्या करते हैं, देशवासियों में भय का माहौल पैदा करते हैं। जिसके परिणामस्वरूप जनता में सरकारी नीतियों व देश के रक्षातंत्र के प्रति भ्रम उत्पन्न होता है। हम सभी भारतीय को चाहिए कि आतंकवाद के खिलाफ एकमत तथा एकजुट होकर सरकार को सहयोग करें।
यह हमारा सौभाग्य है कि हमने भारत की पुण्यभूमि पर जन्म लिया और आजादी के सुंदर वातावरण में सांस ली। देशप्रेम एक पवित्र भाव है जो हर नागरिक में होना अनिवार्य है। कुछ लोग अपने स्वार्थपूर्ति के लिए हमारे पवित्र देश को भ्रष्टाचार की चादर में समेट रहे हैं और देश की भोलीभाली जनता को गुमराह कर रहे हैं। हमें एकजुट होकर ऐसे भ्रष्ट लोगों से सावधान रहने की आवश्यकता है तथा भ्रष्टाचार रूपी रावण का अतिशीघ्र दहन करना चाहिए।
भारत वर्ष को पहले की भांति सोने की चिड़िया बनाना है तथा आजादी का सही अर्थ समझना है, प्रत्येक भारतीय को अपने अधिकारों से ज्यादा अपने कर्तव्यों का पालन करना होगा, तभी हमारा देश पूरे विश्व में एक महाशक्ति बनकर सामने आएगा। यही हमारा मुख्य ध्येय है। इस आंदोलन में हमारे भारतवासियों ने कई सत्याग्रह आंदोलन किए, लाठियां भी खाईं, कई बार जेल भी गए, और फिर अंग्रेजों को हमारा देश छोड़कर जाने पर मजबूर कर दिया। इस तरह 15 अगस्त 1947 का दिन हमारे लिए स्वर्णिम दिन, इंडिपेंडेंस डे बना। हम, हमारा देश स्वतंत्र हो गए। इसीलिए यह दिन 1947 से लेकर आज तक सभी बड़े उत्साह और प्रसन्नता के साथ मनाते हैं।

भारत माता की जय, हम सब एक हैं, वंदे मातरम।

भारतीय तिरंगे का इतिहास

प्रत्येक स्वतंत्र राष्ट्र का अपना एक ध्वज होता है। यह एक स्वतंत्र देश होने का संकेत है। भारतीय राष्ट्रीय ध्वज को इसके वर्तमान स्वरूप में 22 जुलाई 1947 को आयोजित भारतीय संविधान सभा की बैठक के दौरान अपनाया गया था, जो 15 अगस्त 1947 को अंग्रेजों से भारत की स्वतंत्रता के कुछ ही दिन पूर्व की गई थी। इसे 15 अगस्त 1947 और 26 जनवरी 1950 के बीच भारत के राष्ट्रीय ध्वज के रूप में अपनाया गया और इसके पश्चात भारतीय गणतंत्र ने इसे अपनाया। भारत में ''तिरंगे'' का अर्थ भारतीय राष्ट्रीय ध्वज है। भारतीय राष्ट्रीय ध्वज में तीन रंग की क्षैतिज पटिट्यां हैं, सबसे ऊपर केसरिया, बीच में सफेद ओर नीचे गहरे हरे रंग की पट्टी और ये तीनों समानुपात में हैं। ध्वज की चौड़ाई का अनुपात इसकी लंबाई के साथ 2 और 3 का है। सफेद पट्टी के मध्य में गहरे नीले रंग का एक चक्र है। यह चक्र अशोक की राजधानी के सारनाथ के शेर के स्तंभ पर बना हुआ है। इसका व्यास लगभग सफेद पट्टी की चौड़ाई के बराबर होता है और इसमें 24 तीलियां है।

तिरंगे का विकास

यह जानना अत्यंत रोचक है कि हमारा राष्ट्रीय ध्वज अपने आरंभ से किन-किन परिवर्तनों से गुजरा। इसे हमारे स्वतंत्रता के राष्ट्रीय संग्राम के दौरान खोजा गया या मान्यता दी गई। भारतीय राष्ट्रीय ध्वज का विकास आज के इस रूप में पहुंचने के लिए अनेक दौरों में से गुजरा। एक रूप से यह राष्ट्र में राजनैतिक विकास को दर्शाता है। हमारे राष्ट्रीय ध्वज के विकास में कुछ ऐतिहासिक पड़ाव इस प्रकार हैं :
प्रथम राष्ट्रीय ध्वज 7 अगस्त 1906 को पारसी बागान चौक (ग्रीन पार्क) कलकत्ता में फहराया गया था जिसे अब कोलकाता कहते हैं। इस ध्वज को लाल, पीले और हरे रंग की क्षैतिज पटिट्यों से बनाया गया था। द्वितीय ध्वज को पेरिस में मैडम कामा और 1907 में उनके साथ निर्वासित किए गए कुछ क्रांतिकारियों द्वारा फहराया गया था (कुछ के अनुसार 1905 में)। यह भी पहले ध्वज के समान था सिवाय इसके कि इसमें सबसे ऊपरी की पट्टी पर केवल एक कमल था किंतु सात तारे सप्तऋषि को दर्शाते हैं। यह ध्वज बर्लिन में हुए समाजवादी सम्मेलन में भी प्रदर्शित किया गया था।
तृतीय ध्वज 1917 में आया जब हमारे राजनैतिक संघर्ष ने एक निश्चित मोड लिया। डॉ.एनी बीसेंट और लोकमान्य तिलक ने घरेलू शासन आंदोलन के दौरान इसे फहराया। इस ध्वज में 5 लाल और 4 हरी क्षैतिज पटिट्यां एक के बाद एक और सप्तऋषि के अभिविन्यास में इस पर बने सात सितारे थे। बांयी और ऊपरी किनारे पर (खंभे की ओर) यूनियन जैक था। एक कोने में सफेद अर्धचंद्र और सितारा भी था। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सत्र के दौरान जो 1921 में बेजवाड़ा (अब विजयवाड़ा) में किया गया यहां आंध्र प्रदेश के एक युवक ने एक झंडा बनाया और गांधी जी को दिया। यह दो रंगों का बना था। लाल और हरा रंग जो दो प्रमुख समुदायों अर्थात हिन्दू और मुस्लिम का प्रतिनिधित्व करता है। गांधी जी ने सुझाव दिया कि भारत के शेष समुदाय का प्रतिनिधित्व करने के लिए इसमें एक सफेद पट्टी और राष्ट्र की प्रगति का संकेत देने के लिए एक चलता हुआ चरखा होना चाहिए। वर्ष 1931 ध्वज के इतिहास में एक यादगार वर्ष है। तिरंगे ध्वज को हमारे राष्ट्रीय ध्वज के रूप में अपनाने के लिए एक प्रस्ताव पारित किया गया । यह ध्वज जो वर्तमान स्वरूप का पूर्वज है, केसरिया, सफेद और मध्य में गांधी जी के चलते हुए चरखे के साथ था। तथापि यह स्पष्ट रूप से बताया गया इसका कोई साम्प्रदायिक महत्व नहीं था और इसकी व्याख्या इस प्रकार की जानी थी।
22 जुलाई 1947 को संविधान सभा ने इसे मुक्त भारतीय राष्ट्रीय ध्वज के रूप में अपनाया। स्वतंत्रता मिलने के बाद इसके रंग और उनका महत्व बना रहा। केवल ध्वज में चलते हुए चरखे के स्थान पर सम्राट अशोक के धर्म चक्र को दिखाया गया। इस प्रकार कांग्रेस पार्टी का तिरंगा ध्वज अंततः स्वतंत्र भारत का तिरंगा ध्वज बना।

ध्वज के रंग

भारत के राष्ट्रीय ध्वज की ऊपरी पट्टी में केसरिया रंग है जो देश की शक्ति और साहस को दर्शाता है। बीच में स्थित सफेद पट्टी धर्म चक्र के साथ शांति और सत्य का प्रतीक है। निचली हरी पट्टी उर्वरता, वृद्धि और भूमि की पवित्रता को दर्शाती है।

चक्र

इस धर्म चक्र को विधि का चक्र कहते हैं जो तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व मौर्य सम्राट अशोक द्वारा बनाए गए सारनाथ मंदिर से लिया गया है। इस चक्र को प्रदर्शित करने का आशय यह है कि जीवन गतिशील है और रुकने का अर्थ मृत्यु है।

ध्वज संहिता

26 जनवरी 2002 को भारतीय ध्वज संहिता में संशोधन किया गया और स्वतंत्रता के कई वर्ष बाद भारत के नागरिकों को अपने घरों, कार्यालयों और फैक्टरी में न केवल राष्ट्रीय दिवसों पर, बल्कि किसी भी दिन बिना किसी रुकावट के फहराने की अनुमति मिल गई। अब भारतीय नागरिक राष्ट्रीय झंडे को शान से कहीं भी और किसी भी समय फहरा सकते है। बशर्ते कि वे ध्वज की संहिता का कठोरता पूर्वक पालन करें और तिरंगे की शान में कोई कमी न आने दें। सुविधा की दृष्टि से भारतीय ध्वज संहिता, 2002 को तीन भागों में बांटा गया है। संहिता के पहले भाग में राष्ट्रीय ध्वज का सामान्य विवरण है। संहिता के दूसरे भाग में जनता, निजी संगठनों, शैक्षिक संस्थानों आदि के सदस्यों द्वारा राष्ट्रीय ध्वज के प्रदर्शन के विषय में बताया गया है। संहिता का तीसरा भाग केन्द्रीय और राज्य सरकारों तथा उनके संगठनों और अभिकरणों द्वारा राष्ट्रीय ध्वज के प्रदर्शन के विषय में जानकारी देता है।

26 जनवरी 2002 विधान पर आधारित कुछ नियम और विनियमन हैं कि ध्वज को किस प्रकार फहराया जाए:

क्या करें

- राष्ट्रीय ध्वज को शैक्षिक संस्थानों (विद्यालयों, महाविद्यालयों, खेल परिसरों, स्काउट शिविरों आदि) में ध्वज को सम्मान देने की प्रेरणा देने के लिए फहराया जा सकता है। विद्यालयों में ध्वज आरोहण में निष्ठा की एक शपथ शामिल की गई है।
- किसी सार्वजनिक, निजी संगठन या एक शैक्षिक संस्थान के सदस्य द्वारा राष्ट्रीय ध्वज का आरोहण/प्रदर्शन सभी दिनों और अवसरों, आयोजनों पर अन्यथा राष्ट्रीय ध्वज के मान सम्मान और प्रतिष्ठा के अनुरूप अवसरों पर किया जा सकता है।
- नई संहिता की धारा 2 में सभी निजी नागरिकों अपने परिसरों में ध्वज फहराने का अधिकार देना स्वीकार किया गया है।

क्या न करें

- इस ध्वज को सांप्रदायिक लाभ, पर्दे या वस्त्रों के रूप में उपयोग नहीं किया जा सकता है। जहां तक संभव हो इसे मौसम से प्रभावित हुए बिना सूर्योदय से सूर्यास्त तक फहराया जाना चाहिए।
- इस ध्वज को आशय पूर्वक भूमि, फर्श या पानी से स्पर्श नहीं कराया जाना चाहिए। इसे वाहनों के हुड, ऊपर और बगल या पीछे, रेलों, नावों या वायुयान पर लपेटा नहीं जा सकता।
- किसी अन्य ध्वज या ध्वज पट्ट को हमारे ध्वज से ऊंचे स्थान पर लगाया नहीं जा सकता है। तिरंगे ध्वज को वंदनवार, ध्वज पट्ट या गुलाब के समान संरचना बनाकर उपयोग नहीं किया जा सकता।

स्वतंत्रता और गणतंत्र दिवस में क्या अंतर होता है? कैसे फहराया जाता है झंडा

भारत में हर साल दो राष्ट्रीय पर्व का जश्न मनाया जाता है 26 जनवरी और 15 अगस्त। अधिकतर लोग इन दोनों दिवस को एक ही समझते है या इन दोनों का महत्व उन्हें एक ही लगता है। भारत इस साल 77वां स्वतंत्रता दिवस मनाने जा रहा है। चलिए जानते हैं इन दोनों में क्या प्रमुख अंतर होता है....

स्वतंत्रता दिवस 15 अगस्त

200 साल की ब्रिटिश गुलामी के बाद भारत 15 अगस्त 1947 को आज़ाद हुआ था। देश की आज़ादी के रूप में हम हर साल 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस मनाते है। प्रति वर्ष इस दिवस की थीम भी निर्धारित होती है।

गणतंत्र दिवस 26 जनवरी

15 अगस्त 1947 में आजादी के बाद भारत के पास अपना कानून नहीं था। भारत के नियम-कानून ब्रिटिश कानून के अनुसार थे। इसलिए आजादी के बाद संविधान बनाने की प्रक्रिया शुरू हुई और 26 जनवरी 1950 को संविधान लागू किया गया।

26 जनवरी या 15 अगस्त किस दिन होती है परेड आयोजित

15 अगस्त के दिन परेड का आयोजन नहीं होता है। बल्कि 26 जनवरी पर सैनिकों, अर्धसैनिक बलों परेड होती है। इस परेड में अलग-अलग सेवा के सैनिक सुंदर प्रस्तुति करते दिखते हैं। साथ ही आप इस दिन विभिन्न राज्य की सुंदर झांकियां भी देखते हैं।

स्वतंत्रता दिवस और गणतंत्र दिवस पर झंडा फहराने में क्या अंतर है?

पहला अंतर: 15 अगस्त स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर झंडे को नीचे से रस्सी द्वारा खींचकर ऊपर ले जाया जाता है, फिर खोलकर फहराया जाता है, जिसे ध्वजारोहण कहा जाता है, क्योंकि यह 15 अगस्त 1947 की ऐतिहासिक घटना को सम्मान देने हेतु किया जाता है, उस समय प्रधानमंत्री जी ने ऐसा किया था। संविधान में इसे अंग्रेजी में Flag Hoisting (ध्वजारोहण) कहा जाता है।
जबकि 26 जनवरी गणतंत्र दिवस के अवसर पर झंडा ऊपर ही बंधा रहता है, जिसे खोलकर फहराया जाता है, संविधान में इसे Flag Unfurling (झंडा फहराना) कहा जाता है।
दूसरा अंतर: 15 अगस्त के दिन प्रधानमंत्री जो कि केंद्र सरकार के प्रमुख होते हैं, वे ध्वजारोहण करते हैं क्योंकि स्वतंत्रता के दिन भारत का संविधान लागू नहीं हुआ था और राष्ट्रपति जो कि राष्ट्र के संवैधानिक प्रमुख होते हैं, उन्होंने पदभार ग्रहण नहीं किया था। इस दिन शाम को राष्ट्रपति अपना संदेश राष्ट्र के नाम देते हैं। जबकि 26 जनवरी जो कि देश में संविधान लागू होने के उपलक्ष्य में मनाया जाता है, इस दिन संवैधानिक प्रमुख राष्ट्रपति झंडा फहराते हैं।
तीसरा अंतर: स्वतंत्रता दिवस के दिन लालकिले से ध्वजारोहण किया जाता है। जबकि गणतंत्र दिवस के दिन राजपथ पर झंडा फहराया जाता है।
चौथा अंतर: पूरे भारत में गणतंत्र दिवस ज्यादा धूमधाम से मनाया जाता है। जबकि गणतंत्र दिवस के मुकाबले स्वतंत्रता दिवस पर ऐसा कुछ नहीं होता।
पांचवां अंतर: गणतंत्र दिवस पर देश अपनी सैन्य ताकत और सांस्कृतिक विलक्षणता को दिखाता है।
जबकि स्वतंत्रता दिवस के दिन ऐसा कुछ नहीं होता।
छठा अंतर: 26 जनवरी यानी गणतंत्र दिवस के दिन समारोह में मुख्य अतिथि आते हैं। जबकि स्वतंत्रता दिवस पर ऐसा नहीं होता है।
सातवां अंतर: 26 जनवरी और 15 अगस्त दोनों ही राष्ट्रीय पर्व हैं। 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस कहा जाता है और 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस कहा जाता है।

I ♥ INDIA

HAPPY INDEPENDENCE DAY

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

तिरंगा : भारतीयता का जीवंत प्रतीक

(लेखक - हर्षवर्धन पान्डे)

किसी भी देश का राष्ट्र ध्वज उसके स्वतंत्र होने का संकेत है। भारत का राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा केवल एक कपड़े या कागज़ का टुकड़ा नहीं है बल्कि यह भारत की आत्मा, इतिहास और संस्कृति का प्रतीक है। इसके तीन रंग केसरिया, सफेद , हरा और मध्य में अशोक चक्र भारतीयता के विभिन्न आयामों को दर्शाते हैं। तिरंगा न केवल स्वतंत्रता संग्राम की गाथा को बयां करता है, बल्कि यह भारत की एकता, विविधता और आकांक्षाओं का भी प्रतीक है। तिरंगे ने अपने रंगों से दुनिया में अपनी अद्वितीय छवि बनाई है। राष्ट्रीय ध्वज के लिए हथकरघा खादी (सूती या रेशमी) कपड़ा इस्तेमाल किया जाता है। तिरंगे झंडे में नीले रंग का अशोक चक्र धर्म तथा ईमानदारी के मार्ग पर चलकर देश को उन्नति की ओर ले जाने की प्रेरणा देता है। तिरंगे का केसरिया रंग साहस, बलिदान और त्याग का प्रतीक है। यह उन लाखों स्वतंत्रता सेनानियों की याद दिलाता है जिन्होंने देश की आजादी के लिए अपने प्राणों की आहुति दी। भारतीयता का यह पहलू हमें निस्वार्थ भाव से देश के लिए समर्पित होने की प्रेरणा देता है। इसी तरह से सफेद रंग शांति और सत्य का प्रतीक यह रंग भारत की अहिंसावादी विचारधारा को रेखांकित करता है। महात्मा गांधी के नेतृत्व में अहिंसा और सत्याग्रह ने न केवल भारत को स्वतंत्रता दिलाई, बल्कि विश्व को शांति का संदेश भी दिया। यह रंग भारतीयता की उस भावना को दर्शाता है जो सहिष्णुता और सामंजस्य में विश्वास रखती है। हरा रंग समृद्धि, उर्वरता और प्रकृति के प्रति भारत की गहरी आस्था को दर्शाता है। भारत की संस्कृति में प्रकृति और पर्यावरण का विशेष स्थान रहा है। यह रंग हमें सतत विकास और पर्यावरण संरक्षण की दिशा में कार्य करने की प्रेरणा देता है। मध्य में नीले रंग का अशोक चक्र गतिशीलता और प्रगति का प्रतीक है। यह सम्राट अशोक के धर्म चक्र से प्रेरित है जो न्याय, धर्म और नैतिकता का प्रतीक है। यह चक्र भारतीयता के उस दर्शन को दर्शाता है जो निरंतर प्रगति और नैतिकता के मार्ग पर चलने को प्रेरित करता है। भारतीयता एक ऐसी अवधारणा है जो भारत की सांस्कृतिक, सामाजिक और ऐतिहासिक विविधता को समेटे हुए है। तिरंगा इस भारतीयता का एक जीवंत प्रतीक है। भारत विभिन्न धर्मों, भाषाओं, संस्कृतियों और परंपराओं का देश है। तिरंगा इस विविधता को एक सूत्र में पिरोने का कार्य करता है। जैसे तिरंगे के तीन रंग एक साथ मिलकर एक पूर्ण ध्वज बनाते हैं वैसे ही भारत की विभिन्न संस्कृतियाँ और समुदाय एक साथ मिलकर भारतीयता का निर्माण करते हैं। यह ध्वज हमें सिखाता है कि भिन्नताओं के बावजूद हम एक हैं। तिरंगा स्वतंत्रता संग्राम का साक्षी रहा है। यह उन असंख्य बलिदानों का प्रतीक है जिन्होंने भारत को औपनिवेशिक शासन से मुक्ति दिलाई। भारतीयता का यह पहलू हमें स्वाभिमान और आत्मनिर्भरता की भावना से जोड़ता है। तिरंगा हमें याद दिलाता है कि हमारी स्वतंत्रता अनमोल है और इसे बनाए रखने के लिए हमें सतत प्रयास करना होगा।

भारतीय इतिहास में 1905 से पहले पूरे भारत की अखंडता को दर्शाने के लिए कोई राष्ट्र ध्वज नहीं था। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान वर्ष 1905 में स्वामी विवेकानंद की शिष्य सिस्टर निवेदिता ने पहली बार पूरे भारत के लिए एक राष्ट्रीय ध्वज की कल्पना की थी। सिस्टर निवेदिता द्वारा बनाए गए ध्वज में कुल 108 ज्योतियाँ बनाई गई थी। यह ध्वज चौकोर आकार का था। ध्वज के दो रंग थे- लाल और पीला। लाल रंग स्वतंत्रता संग्राम और पीला रंग विजय का प्रतीक था। ध्वज पर बंगाली भाषा में वंदे-मातरम् लिखा गया था और इसके पास वज्र (एक प्रकार का हथियार) और केंद्र में एक सफेद कमल का चित्र भी था। वर्तमान में इस ध्वज को आचार्य भवन संग्रहालय, कोलकाता में संरक्षित रखा गया है। इसके बाद 7 अगस्त 1906 को कोलकाता (तत्कालीन कलकत्ता) के पारसी बागान चौक में ध्वज को फहराया गया। कोलकाता ध्वज प्रथम भारतीय अनाधिकारिक ध्वज था। इसकी अभिकल्पना शचिन्द्र प्रसाद बोस ने की थी। झंडे में बराबर चौड़ाई की तीन क्षैतिज पट्टियाँ थीं। शीर्ष धारी नारंगी, केंद्र धारी पीली और निचली पट्टी हरे रंग की थी। शीर्ष पट्टी पर ब्रिटिश-शासित भारत के आठ प्रांतों का प्रतिनिधित्व करते 8 आधे खुले कमल के फूल थे और निचली पट्टी पर बाईं तरफ सूर्य और दाईं तरफ़ एक वर्धमान चाँद की तस्वीर अंकित थी। ध्वज के केंद्र में वन्दे-मातरम् का नारा अंकित किया गया था। इसी तरह पहली बार विदेशी धरती पर भारतीय ध्वज मैडम भीकाजी कामा द्वारा 22 अगस्त 1907 को अंतर्राष्ट्रीय सोशलिस्ट कांग्रेस केस्टटगार्ट में फहराया गया था। इस ध्वज को सप्तर्षि झंडे' के नाम से जाना जाता है। यह ध्वज काफी कुछ वर्ष 1906 के झंडे जैसा ही था लेकिन इसमें सबसे ऊपरी पट्टी का रंग केसरिया था और कमल के बजाए सात तारे सप्तऋषि के प्रतीक थे।

भारतीय धरती पर तीसरे प्रकार का तिरंगा होम रूल लीग के दौरान फहराया गया था। 卐होम रूल आंदोलन卐 के दौरान कोलकाता में एक कांग्रेस अधिवेशन के दौरान यह ध्वज फहराया गया था। उस समय ध्वज स्वतंत्रता संग्राम की लड़ाई का प्रतीक था। इसमें 9 पट्टियाँ थीं, जिसमें 5 लाल रंग और 4 हरे रंग की थी। ध्वज के ऊपरी बाएँ कोने में यूनियन जैक था। शीर्ष दाएँ कोने में अर्धचंद्र और सितारा था। ध्वज के बाकी हिस्सों में सप्तर्षि के स्वरूप में सात सितारों को व्यवस्थित किया गया था।वर्ष 1921 में आंध्र प्रदेश के पिंगले वेंकय्या ने बिजावाड़ा (अब विजयवाड़ा) में गांधीजी के निर्देशों के अनुसार सफेद,हरे और लाल रंग में पहला चरखा-झंडा डिजाइन किया था। इस ध्वज को स्वराज-झंडे के नाम से जाना जाता है। वर्ष 1931 ध्वज के इतिहास में एक यादगार वर्ष है। इस वर्ष तिरंगे ध्वज को हमारे राष्ट्रीय ध्वज के रूप में अपनाने के लिए एक प्रस्ताव पारित किया गया। यह ध्वज जो वर्तमान स्वरूप का पूर्वज है, केसरिया, सफेद और मध्य में गांधी जी के चलते हुए चरखे के साथ था।

ब्रिटिश सरकार द्वारा भारत को स्वतंत्र करने की घोषणा के बाद भारतीय नेताओं को स्वतंत्र भारत के लिए राष्ट्रीय ध्वज की आवश्यकता का एहसास हुआ। तदनुसार ध्वज को अंतिम रूप देने के लिए एक तदर्थ ध्वज समिति का गठन किया गया। श्रीमती सुरैया बद्र-उद-दीन तैयबजी द्वारा प्रस्तुत स्वतंत्र भारत के राष्ट्रीय ध्वज के डिजाइन को 17 जुलाई 1947 को ध्वज समिति द्वारा अनुमोदित और स्वीकार किया गया था। समिति की सिफारिश पर 22 जुलाई 1947 को संविधान सभा ने तिरंगे को स्वतंत्र भारत के राष्ट्रीय ध्वज के रूप में अपनाया। तिरंगे में तीन समान चौड़ाई की क्षैतिज पट्टियाँ हैं जिनमें सबसे ऊपर केसरिया रंग की पट्टी जो देश की ताकत और साहस को दर्शाती है। बीच में श्वेत पट्टी धर्म चक्र के साथ शांति और सत्य का संकेत है और नीचे गहरे हरे रंग की पट्टी देश के विकास और उर्वरता को दर्शाती है। तिरंगे के केंद्र में सफेद पट्टी के मध्य में गहरे नीले रंग का अशोक चक्र है जिसमें 24 आरे (तीलियाँ) होते हैं। यह चक्र एक दिन के 24 घंटों और हमारे देश की निरंतर प्रगति को दर्शाता है। तिरंगे को भारत की महिलाओं की ओर से 14 अगस्त, 1947 को संविधान सभा के अर्द्ध-रात्रिकालीन अधिवेशन में समर्पित किया गया था।

भारत ने राष्ट्रीय चिन्ह को 26 जनवरी, 1950 को अपनाया था। भारत के तिरंगे झंडे के ध्वज की लंबाई और चौड़ाई का अनुपात 2ः3 है। भारत का राज चिन्ह अशोक स्तम्भ के शीर्ष की एक प्रतिकृति है जो सारनाथ के संग्रहालय में सुरक्षित है। अशोक स्तम्भ तीन शेरों की आकृति जिसके नीचे एक चौखट के बीच में एक धर्म चक्र है। इस चक्र के दाई ओर एक बैल और बाई ओर एक अश्व है। चौखट के आधार पर 'सत्यमेव जयते' शब्द अंकित है। भारत के राजचिन्ह में तीन प्रकारे के छः जानवर हैं-शेर (चार), बैल (एक), अश्व (एक) भारत का यह चिन्ह भारत की एकता का घोतक है। राष्ट्रीय चिन्ह के दो भाग शीर्ष और आधार हैं। शीर्ष पर शेर साहस और शक्ति का प्रतीक है। राष्ट्रीय चिन्ह के आधार भाग में एक धर्म चक्र है। चक्र के दायीं ओर एक बैल है तथा बायीं ओर एक घोड़ा है जो स्फूर्ति का ताकत व गति का। 'सत्यमेव जयते' मुंडकोपनिषद से लिया गया है। 'सत्यमेव जयते' का अर्थ सत्य की ही विजय है। भारत के तिरंगे झंडे में चरखे की जगह 卐चक्र卐 1947 को अस्तित्व में आया । 26 जनवरी 2002 से फ्लैग कोड बदल गया है। भारतीयों को कहीं भी किसी भी समय गर्व के साथ झंडा फहराने की आजादी दे दी गयी है। अभी कुछ समय पूर्व सुप्रीम कोर्ट ने अनुच्छेद 19 ए अनुच्छेद के तहत ध्वज फहराने के अधिकार को मौलिक अधिकार के रूप में घोषित किया था जिसके बाद देश में भारतीय ध्वज को दिन - रात फहराने की अनुमति दे दी गई है। 15 अगस्त 1947 आज़ाद भारत के इतिहास का ऐतिहासिक दिन था जब अंग्रेजों की गुलामी से मुक्ति पाकर भारत में नई सुबह हुई थी। स्वतंत्रता मिलने के बाद पहली बार देशवासियों ने खुली हवा में साँस ली और देश प्रगति के पथ पर अग्रसर हुआ। आज़ादी के बाद से देश के कई प्रधानमंत्रियों और सरकारों को देखा है लेकिन इस अमृतकाल में भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में सरकार के हर-घर तिरंगा जन अभियानों के माध्यम से देश के प्रति जोश, जज्बा और प्रबल हुआ है। किसी भी देशवासी के लिए भारत और भारतीयता का भाव पहले होना चाहिए। यह मुहिम जाति ,धर्म,संप्रदाय से परे है और देश को इस अमृत काल में एकता के सूत्र में बांध सकती है। नागरिकों में देश प्रेम की भावना जगाने और संकीर्णता से बाहर निकालने का यही अमृतकाल है। आज के समय में तिरंगा केवल एक राष्ट्रीय प्रतीक ही नहीं बल्कि भारत की आकांक्षाओं और सपनों का दर्पण भी है। यह हमें आत्मनिर्भर भारत, डिजिटल भारत और विकसित भारत के सपने को साकार करने की प्रेरणा देता है। हर घर तिरंगा जैसे अभियान भारतीयों को अपने ध्वज के प्रति गर्व और सम्मान की भावना को और गहरा करने का अवसर प्रदान करते हैं।

संपादकीय

राहत का फैसला

सुप्रीमकोर्ट ने फिलहाल दिल्ली व राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के उन वाहन मालिकों को राहत दी है, जिनके वाहनों के खिलाफ पहले कार्रवाई करने के आदेश दिए थे। दरअसल, प्रदूषण संकट के मद्देनजर इन क्षेत्रों में दस वर्ष से अधिक के डीजल व पंद्रह वर्ष से अधिक के पेट्रोल वाहनों के परिचालन पर रोक लगाने का निर्णय हुआ था। मंगलवार को शीर्ष अदालत ने ऐसे वाहनों के मालिकों को राहत देते हुए अधिकारियों को दंडात्मक कार्रवाई रोकने के निर्देश दिए हैं। उल्लेखनीय है कि सुप्रीम कोर्ट एनजीटी के निर्देश को बरकरार रखने वाले 29 अक्तूबर 2018 के फैसले को वापस लेने की मांग से संबंधित याचिका पर विचार कर रहा था। दरअसल, एनजीटी के आदेश के अनुरूप ही वाहनों को प्रतिबंधित करने के निर्देश दिए गए थे। एनजीटी ने आदेशों के अनुपालन न करने पर मोटर वाहन अधिनियम के तहत वाहनों को जब्त करने की कार्रवाई के निर्देश दिए थे। सरकार की ओर से सॉलिसिटर जनरल का कोर्ट से आग्रह था कि दंडात्मक कदम रोकने के आदेश पर विचार किया जाए। कोर्ट ने इस बाबत चार सप्ताह में जवाब देने की बात कही है। दरअसल, दिल्ली सरकार की भी ऐसी मंशा थी, जिसने प्रतिबंध को अदालत में चुनौती दी थी। वास्तव में सत्ताधीशों को आशंका थी कि इस फैसले का व्यापक विरोध हो सकता है क्योंकि लोगों को औने-पौने दामों में महंगे वाहन बेचने को बाध्य होना पड़ता। जिससे उपजा आक्रोश ट्रिपल इंजन सरकार के लिये राजनीतिक रूप से नुकसानदायक साबित हो सकता है। कोर्ट का यह भी कहना था कि केंद्र सरकार व गुणवत्ता प्रबंधन आयोग गंभीर अध्ययन करें ताकि अवधि आधारित प्रतिबंधों के मुकाबले उत्सर्जन आधारित मानदंडों का पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभाव का मूल्यांकन हो सके। दरअसल, आम मध्यमवर्गीय परिवारों में कार का इस्तेमाल कम होता है और वे अपनी आर्थिक सीमाओं के चलते वाहनों को लंबी अवधि तक बड़े कायदे से रखते हैं। उनका वाहन अधिक वर्षों तक चलता है लेकिन उसके उपयोग की अवधि कम होती है।निस्संदेह, एक आम भारतीय के लिए कार आत्मीय अहसासों का प्रतीक भी है, जिसे वह आमतौर पर जीवन में एक बार ही खरीद पाता है। ऐसे में आत्मीय अहसासों से जुड़ी कार को औने-पौने दामों में बेचना उसके लिये कष्टकारी है। वैसे भी आजकल तमाम लोग भीड़-भाड़ से बचने के लिये टैक्सी का अधिक इस्तेमाल कर रहे हैं। ऐसे में वाहन लंबे समय तक प्रदूषण रहित जीवन पा सकता है। दरअसल, दिल्ली सरकार का भी मानना था कि वाहनों की समय सीमा संबंधी नीति लागू करते वक्त इसके निर्माण वर्ष के बजाय वास्तविक इस्तेमाल के मानक पर विचार करें। दरअसल, दिल्ली सरकार ने जनाक्रोश के चलते इसे संवेदनशील विषय मानकर अपने नजरिये में बदलाव किया। पहले जारी निर्देश में कहा गया था कि ऐसे वाहनों को एक जुलाई से दिल्ली में ईंधन नहीं दिया जाएगा, चाहे वे किसी भी राज्य में पंजीकृत हों। लेकिन व्यावहारिक दिक्कतों व लोगों के रोष के मद्देनजर इसे क्रियान्वित नहीं किया जा सका था। सरकार ने महसूस किया कि फैसला प्रतिगामी साबित हो सकता है। यह भी कि कदम समय से पहले उठा लिया गया। इस फैसले के क्रियान्वयन से जुड़ी परिचालनगत चुनौतियां भी सामने आई। जनाक्रोश के चलते राज्य सरकार ने वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग से इस कार्रवाई पर रोक लगाने का आग्रह किया। फिर आयोग ने समीक्षा बैठक के बाद फैसले पर फौरी तौर पर रोक लगाई।

अंग्रेजों ने भारत की अंतरिम सरकार को दिए थे 300 करोड़ मात्र

(लेखक - सनत जैन/ईएमएस)

स्वतंत्रता दिवस पर विशेष)

भारत को स्वतंत्र करते समय (15 अगस्त 1947) को अंग्रेज सरकार ने भारत की अंतरिम सरकार को रिजर्व बैंक में जमा 300 करोड रुपए सौंपे थे। इसी पैसे से भारत ने अपना नया सफर शुरू किया था। नगदी और संपत्ति का बंटवारा भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम 1947 और भारत-पाकिस्तान विभाजन की प्रक्रिया के तहत अंग्रेजों द्वारा किया गया था। इस बंटवारे में भारत और पाकिस्तान के बीच संपत्ति और वित्तीय संसाधनों का विभाजन हुआ। स्वतंत्रता के समय, भारत और पाकिस्तान के बीच नगदी और अन्य वित्तीय संपत्तियों का बंटवारा रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया की देख-रेख में हुआ। अंग्रेज सरकार ने भारत को कोई नगदी या संपत्ति सीधे तौर पर नहीं सौंपी थी।

ब्रिटिश-भारत की मौजूदा वित्तीय संपत्तियों का विभाजन भारत और पाकिस्तान के बीच हुआ था। स्वतंत्रता के समय ब्रिटिश-भारत के पास रिजर्व बैंक में लगभग 400 करोड़ रुपये का नगद भंडार था। यह राशि भारत और पाकिस्तान के बीच विभाजन परिषद द्वारा तय किये गये अनुपात के आधार पर बांटी गई। भारत को इस राशि का 75 प्रतिशत लगभग 300 करोड़ रुपये और पाकिस्तान को 25 प्रतिशत लगभग 100 करोड़ रुपये प्राप्त हुये। यह अनुपात जनसंख्या और अन्य आर्थिक आधार पर अंग्रेजों द्वारा बनाए गए कमीशन द्वारा निर्धारित किया गया था। इसके अलावा ब्रिटिश सरकार ने द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान भारत से बड़े पैमाने पर वित्तीय और सामरिक सहायता के लिए कर्ज लिया था। जिसके बदले भारत के रिजर्व बैंक को ब्रिटेन से स्टर्लिंग बैलेंस के रूप में जमा राशि वापस लेना थी। स्वतंत्रता के समय 15 अगस्त 1947 को यह राशि लगभग 1,600 करोड़ रुपये थी। इस राशि को ब्रिटेन से चरणबद्ध तरीके से रिजर्व बैंक को दिया गया। भारत और पाकिस्तान के बीच इसका बंटवारा हुआ, भारत को इसका 75 फ़ीसदी हिस्सा मिला। जो लगभग 1200 करोड रुपए था। यह समय-समय पर भारत सरकार को मिला है।

सैन्य और प्रशासनिक संपत्ति का बंटवारा

ब्रिटिश सरकार ने भारत को कोई भौतिक संपत्ति जैसे इमारतें, सैन्य उपकरण, आदि नहीं सौंपी थी। ब्रिटिश सरकार ने भारत की मौजूदा संपत्तियों जैसे सरकारी भवन, रेलवे, सैन्य उपकरण, और अन्य बुनियादी ढांचे का बंटवारा भारत और पाकिस्तान के बीच किया। सैन्य उपकरणों का विभाजन भी 75/25 के अनुपात में किया गया था।

सार्वजनिक संपत्ति?

रेलवे, डाकघर, और अन्य सरकारी संपत्तियों का बंटवारा क्षेत्रीय आधार पर किया गया था। जो संपत्तियां पाकिस्तान के क्षेत्र में थीं, वह पाकिस्तान को दी गईं, और शेष संपत्ति भारत के हिस्से में आई। स्वतंत्रता के समय ब्रिटिश शासन की कुछ प्रतीकात्मक संपत्तियां, जैसे सेक्रेटरी ऑफ स्टेट की सील इत्यादि थी वह अंग्रेज अपने साथ लेकर चले गए थे।

स्वतंत्रता के बाद की परिस्थिति और चुनौतियां

अंतरिम सरकार की भूमिका, 2 सितंबर 1946 को जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में गठित अंतरिम सरकार को स्वतंत्रता से पहले ही प्रशासनिक और वित्तीय जिम्मेदारियां सौंपी गई थीं। अंतरिम सरकार ने स्वतंत्रता के बाद व्यवस्था को सुचारू करने के लिए कई कदम उठाए। स्वतंत्रता के पश्चात विभाजन परिषद का गठन, संपत्ति बंटवारे की प्रक्रिया को व्यवस्थित करने की जिम्मेदारी भारत की अंतरिम सरकार को मिली।

स्वतंत्रता के समय भारत की आर्थिक स्थिति बेहद कमजोर थी। ब्रिटिश शासन ने भारत की अर्थव्यवस्था को अपने हितों के लिए उपयोग किया था। स्वतंत्रता के बाद भारत को कई आर्थिक चुनौतियों का सामना करना पड़ा। स्वतंत्रता के पश्चात भारत में दंगे शुरू हो गए। रियासतों के विलय मे कई समस्याएं खड़ी हो गईं। विभाजन के पश्चात पाकिस्तान से भारत को चुनौतियां मिलने लगी। इन सभी चुनौतियों से निपटते हुए भारत को मुद्रास्फीति, खाद्य संकट, और शरणार्थी समस्या भी विरासत में मिली।

स्वतंत्रता के पश्चात भारत सरकार ने इन सभी चुनौतियों का सामना करते हुए किसी तरह से अपने आप को आर्थिक, सामाजिक और सामरिक रूप से सुदृढ़ करने का प्रयास किया। इस प्रयास में अंतरिम सरकार के मुखिया, 1950 में संविधान बन जाने, तथा 1952 में पहले चुनाव के बाद जो सरकार प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में बनी उसने अगले कई दशकों का मेप लेकर विभिन्न चुनौतियों का सामना करते हुए भारत को एक नई दिशा दी। जिसकी सराहना ब्रिटेन के साथ-साथ दुनिया के सभी देशों ने की। भारत के पंचशील के सिद्धांत और एक नई अर्थव्यवस्था का स्वरूप जिसमें ना पूंजीवाद था और ना ही साम्यवाद था समाजवाद के रूप में मिश्रित अर्थव्यवस्था को लेकर जो प्रयोग पंडित जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में 1952 के बाद भारत सरकार द्वारा किया गया वह काफी सफल साबित हुआ जिसने भारत की साख दुनिया के देशों में बढ़ाने का काम किया। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत की एक नई पहचान बनी भारत ने जिन चुनौतियों के बीच सामाजिक एवं आर्थिक विकास के मार्ग को चुना उसके कारण भारत सारी दुनिया के देशों में एक विशिष्ट स्थान बनाने में सफल रहा। अंग्रेज स्वतंत्रता के रूप में बंजर जमीन के रूप में भारत को देकर गए थे।

भारत की सरकारों ने लगभग दो दशक में ही भारत को बेहतर विकासशील राष्ट्र के रूप में स्थापित किया 1962 के चीन युद्ध, 1965 का पाकिस्तान युद्ध, 1971 का पाकिस्तान का युद्ध जैसी चुनौतियों का सामना करते हुए 1980 में भारत ने अपने आप को खाद्यान्य क्षेत्र में आत्मनिर्भर बना कर सारी दुनिया को चौंका दिया था।

निष्ठा और सत्य

चिंतन मनन

निष्ठा अविभाजित मन, अविभाजित चेतना का स्वभाव है। ईश्वर में तुम्हारी निष्ठा है, उसे जानने का प्रयत्न मत करो। आत्मा में तुम्हारी निष्ठा है, उसे जानने का प्रयत्न मत करो। जिसमें भी तुम्हारी निष्ठा है, उसे जानने की कोशिश न करो। बच्चे को मां में विश्वास है। बच्चा मां को जानने का प्रयत्न नहीं करता, उसे केवल मां में विश्वास है। जब तुममें निष्ठा है, जानने की क्या आवश्यकता है? यदि तुम प्रेम को जानने का विषय बनाते हो, प्रेम लुप्त हो जाता है। ईश्वर, प्रेम, आत्मा और निद्रा समझ के परे हैं।

यदि तुम केवल विश्लेषण करते हो, संशय उत्पन्न होता है और निष्ठा खत्म होती है। जिसमें तुम्हारी निष्ठा है, उसे जानने की या विश्लेषण करने की चेष्टा न करो। विश्लेषण दूरी पैदा करता है, संश्लेषण (संकलन) जोड़ता है। निष्ठा संकलन है, जानना विभाजन। निष्ठा और विश्वास में फर्क है, विश्वास हल्का होता है, निष्ठा ठोस, अधिक सबल। हमारे विश्वास बदल सकते हैं मगर निष्ठा अटल होती है। निष्ठा के बिना चेतना नहीं। यह दिये की लौ के समान है। निष्ठा है चेतना की शान्त, स्थायी प्रकृति। निष्ठा चेतना का स्वभाव है।

सत्य वह है जो बदलता नहीं। अपने जीवन को देखो और पहचानो कि वह सब जो बदल रहा है, सत्य नहीं। इस दृष्टि से देखने पर तुम पाओगे कि तुम केवल असत्य से घिरे हुए हो। असत्य को पहचानने पर तुम उससे मुक्त होते हो। जब तक तुम असत्य को पहचानोगे नहीं, उससे मुक्त नहीं हो सकते। स्वयं के जीवन के अनुभव तुम्हें तुम्हारे असत्यों की पहचान कराते हैं। जैसे-जैसे जीवन में परिपक्वता आती है, तुम पाते हो कि सभी कुछ असत्य है- घटनाएं, परिस्थितियां, लोग, भावनाएं, विचार, मत-धारणाएं, तुम्हारा शरीर-सभी असत्य है। और तभी सच्चे अर्थ में सत्संग (सत्य का संग) होता है। मां के लिए बच्चा तब तक असत्य नहीं है जब तक बालिग नहीं हो जाता। बच्चे के लिए मिठास असत्य नहीं और किशोर के लिए सैक्स असत्य नहीं। ज्ञान यदि शब्दों तक सीमित है, तो वह असत्य है। परंतु अस्तित्व के रूप में यह सत्य है। प्रेम भावना के रूप में सत्य नहीं, अस्तित्व के रूप में यह सत्य है।

विचार मंथन

चुनाव आयोग छीन रहा है, मतदान का अधिकार

(लेखक-सनत जैन)

भारत का लोकतंत्र अपने गर्वित स्वरूप में तभी संपूर्ण होगा है। जब 18 वर्ष से ऊपर के सभी नागरिक को मतदान का अधिकार सुरक्षित हो। बिहार में चल रहा, विशेष गहन पुनरीक्षण (स्ढ्ढक्र) अभियान इस अधिकार पर गहरी चोट कर रहा है। सुप्रीम कोर्ट में पेश होकर योगेंद्र यादव ने जिस तरह तथ्यों और तर्कों के साथ मतदाता के इस अधिकार पर हो रहे खतरे को उजागर किया है, उसने न केवल अदालत बल्कि पूरे देश को चौंका दिया है। सुप्रीम कोर्ट ने उन्हें धन्यवाद देते हुए माना उनकी दलील तथ्यात्मक और गंभीर हैं। सबसे बड़ा सवाल यह है कि 8 करोड़ मतदाताओं तक पहुँचने के बाद भी एक भी नया नाम चुनाव आयोग ने मतदाता सूची में क्यों नहीं जोड़ा। यह 卐जीरो एडिशन卐 और 卐मैसिव डिलीशन卐 का मामला है। 65 लाख नाम मतदाता सूची से हटाए गए हैं। जिनमें 31 लाख महिलाएं शामिल की गई हैं। महिलाएं कम पलायन करती हैं, पुरुषों की तुलना में अधिक समय तक जीवित रहती हैं। ऐसी स्थिति में इसे वास्तविक कटौती कैसे माना जा सकता है। यह किन कारणों से कैसे संभव हुई ? इसका जवाब चुनाव आयोग को देना चाहिए। मतदाता सूची में बीएलओ द्वारा नॉट रिकमंड नामक नई कैटेगरी बिना स्पष्ट मानदंड के बनाई गई है, जिसके आधार पर नाम काटे गए हैं । और तो और, जिंदा लोगों को मृत सूची में डालकर उनका मतदान का अधिकार खत्म कर दिया गया है। उनके नाम भी चुनाव आयोग उजागर नहीं कर रहा है। यह त्रुटियां नहीं, बल्कि प्रक्रिया में गहरी खामियों, साजिस और संभावित पूर्वाग्रह की ओर इशारा है। योगेंद्र यादव ने सुप्रीम कोर्ट में अपना पक्ष रखते हुए चेतावनी देते हुए कहा, वयस्क आबादी में मतदाता अनुपात 97ब्न से गिरकर 88ब्न पर आ गया है। सघन पुनरीक्षण के नाम पर 1 करोड़ मतदाताओं के नाम काटने की दिशा में चुनाव आयोग आगे बढ़ रहा है। जिस तरह से 19वीं सदी के अमेरिका मैं हुआ था उसी तरह से अब भारत में सार्वभौमिक मताधिकार को खत्म करने का सबसे बड़ा उदाहरण बनने जा रहा है। चुनाव आयोग, की संवैधानिक जिम्मेदारी में उसे नागरिक के मताधिकार का संरक्षक माना गया है। 6 माह से अधिक कोई भी नागरिक किसी भी राज्य में रह रहा हो। संविधान के अनुसार उसे मताधिकार सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी केंद्रीय चुनाव आयोग की है। वर्तमान चुनाव आयोग नागरिक को अपनी नागरिकता साबित करने पर मजबूर कर रहा है। फॉर्म भरने और प्रमाण पत्र पेश करने के नाम पर गरीब और साधारण मतदाता का मताधिकार छीनने की कोशिश कर रहा है। यह आश्चर्यचकित करने वाली कार्यवाही है। यह केवल एक राज्य का मामला नहीं है। चुनाव आयोग की इस कार्रवाई से लोकतंत्र की जड़ों को कमजोर किया जा रहा है। अगर मतदाता सूची से इस बड़े पैमाने पर नाम काटे जाते रहे। तो यह न केवल चुनावी निष्पक्षता को खत्म करेगा। बल्कि नागरिकों के मन में यह डर बैठा देगा, उनका मत देने का अधिकार कभी भी छीना जा सकता है। सुप्रीम कोर्ट की निगरानी में चुनाव आयोग द्वारा सघन पुनरीक्षण की जो प्रक्रिया शुरू की गई है। इसकी तुरंत समीक्षा होनी चाहिए। चुनाव आयोग द्वारा जिस तरह से बिहार में मतदाता सूची से लोगों के नाम हटाए गये। चुनाव आयोग को नागरिकता तय करने का अधिकार नहीं है भारत सरकार ने अभी तक नागरिक रजिस्टर तैयार नहीं किया है। भारत सरकार जब आधार लेकर आई थी तब दावा किया गया था इससे नागरिकों की पहचान सुनिश्चित होगी। आंखों की पुतलियां चेहरा और हाथ की रेखाएं यह सुनिश्चित करेंगी, कि वह भारत के नागरिक हैं। उसमें सभी आधुनिक तकनीकी पक्ष का ध्यान रखा गया था अब यह कहा जा रहा है, डुप्लीकेट आधार कार्ड हैं। तो यह तकनीकी और सरकार की नाकामी है। भारत में नकली बनाना सबसे आसान काम है। नकली नोट बड़े पैमाने पर भारत में चलते हैं। नकली सर्टिफिकेट तैयार किए जाते हैं यदि नकली आधार भी है तो यह सरकार की सबसे बड़ी नाकामी है।

जब सरकार ही जनता से सबूत मांगने लगे। सरकार खुद ही अपनी जिम्मेदारी से बचकर नागरिकों को मोहरा बनाने लगे। ऐसी स्थिति में भारतीय संविधान और लोकतंत्र का कोई मायना नहीं रह जाएगा। सभी संवैधानिक संस्थाओं राजतंत्र के इशारे पर काम कर रही हैं। अप्रत्यक्ष रूप से राजतंत्र के लक्षण भारत में देखने को मिल रहे है। भारत की संवैधानिक संस्थाएं निर्णय स्वयं नहीं कर पा रही हैं, यही वर्तमान का सत्य है। अब तो लोग न्यायपालिका के ऊपर भी अविश्वास कर रहे हैं। आम नागरिक खुले आम कहने लगा है न्यायालय का फैसला चुनाव आयोग और सरकार के पक्ष में होगा। सरकार जो चाहती है वही फैसला न्यायालय से आता है। ऐसी स्थिति में अब संविधान और लोकतंत्र को बचाने के लिए, जनता की अदालत में जाने की बात नेता और राजनीतिक दल करने लगे हैं यह सबसे चिंताजनक स्थिति है बिहार के सघन मतदाता पुनरीक्षण के लिए जिस तरह की मनमर्जी केंद्रीय चुनाव आयोग द्वारा की जा रही है। सुप्रीम कोर्ट के निर्देशों की अवहेलना करते हुए जिस तरह से सुप्रीम कोर्ट में चुनाव आयोग अपना पक्ष रख रहा है। उसको देखकर ऐसा लगता है चुनाव आयोग के अधीन सुप्रीम कोर्ट काम कर रहा है ?

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

टाटा टी प्रीमियम इस स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर मध्य प्रदेश की गोंड कला को सम्मानित कर रहा है

भोपाल। टाटा कंज्यूमर प्रोडक्ट्स का प्रमुख चाय ब्रांड, टाटा टी प्रीमियम, ने देश का गर्व इस मशहूर और प्रशंसित अभियान के 2025 संस्करण का शुभारंभ किया है। भारत की महान सांस्कृतिक विरासत का सम्मान करने की अपनी अटूट प्रतिबद्धता टाटा टी प्रीमियम ने इस अभियान में भी जारी रखी है। पिछले कई सालों से टाटा टी प्रीमियम हर दिन की चाय और हर क्षेत्र के अलग-अलग, कला-रूपों के अनूठे मिलाप के साथ स्वतंत्रता दिवस मनाता आ रहा

है। इस बार भारत की कुछ प्रतिष्ठित कला-रूपों से प्रेरित हाथ से पेंट की गई कलात्मक केतली को देश का गर्व कलेक्शन में प्रस्तुत की गयी है। टाटा टी प्रीमियम ने हर दिन की चाय की रस्मों से गहराई से जुड़ी हुई वस्तुओं के ज़रिए भारत की अलग-अलग क्षेत्रों की समृद्ध लोक कला को लगातार उजागर किया है — चाहे वह साधारण कुल्हड़ हो, चाय का पारंपरिक कप हो, या इस साल की बहुत ही सुंदर केतली हो। हर एडिशन खूबसूरती से परे जाकर, भारत की कलात्मक विरासत को आधुनिक और सार्थक तरीकों से संरक्षित, प्रचारित और आगे बढ़ाने के एक गहन मिशन को लेकर चलता है। जहां दुनिया अभी भारतीय शिल्प कौशल की सुंदरता को नए सिरे से समझना शुरू कर रही है, वहीं देश की चाय टाटा टी प्रीमियम ने पिछले कई सालों से देशवासियों की रोज़मर्रा की ज़िन्दगी में अपना विशेष स्थान बनाया है।

श्रीजी शिपिंग ग्लोबल लिमिटेड का आईपीओ 19 अगस्त को खुलेगा

मुंबई, एजेंसी। श्रीजी शिपिंग ग्लोबल लिमिटेड ने घोषणा की है कि वह मंगलवार, 19 अगस्त, 2025 को अपने इक्विटी शेयरों के आरंभिक सार्वजनिक निर्गम के लिए बोलियाँ/निर्गम खोलेगी। बोलियाँ/निर्गम गुरुवार, 21 अगस्त, 2025 को बंद होंगे। एंकर निवेशक बोली की तिथि सोमवार, 18 अगस्त, 2025 होगी। न्यूनतम 58 इक्विटी शेयरों के लिए और उसके बाद 58 इक्विटी शेयरों के गुणकों में बोलियाँ लगाई जा सकती हैं। निर्गम का मूल्य बैंड 240 से 252 प्रति इक्विटी शेयर निर्धारित किया गया

है। कुल निर्गम आकार 10 अंकित मूल्य वाले 16,298,000 इक्विटी शेयरों का 100 प्रतिशत ताज़ा निर्गम है (नया निर्गम)। कंपनी नए निर्गम से प्राप्त शुद्ध आय का उपयोग जहाजों (द्वितीयक बाजार से सुपरमैक्स श्रेणी के ड्राई बल्क कैरियर) के अधिग्रहण के लिए करेगी, जिसकी अनुमानित राशि 2,511.79 मिलियन [251.18 करोड़] है। कंपनी का इरादा 230 मिलियन [23 करोड़] के कुछ बकाया उधारों का आंशिक या पूर्ण रूप से पूर्व-भुगतान/चुकाना और शेष राशि सामान्य कॉर्पोरेट उद्देश्यों के लिए चुकाना है। (निर्गम का उद्देश्य)। भारत या विश्व स्तर पर कोई सूचीबद्ध समकक्ष समूह कंपनियाँ (अर्थात, समान उद्योग में तुलनीय आकार की कंपनियाँ) नहीं हैं जो कंपनी के समान व्यवसाय में लगी हों।

द वेल्थ कंपनी म्यूचुअल फंड ने मिलिए आपके म्यूचुअल फंड डिस्ट्रीब्यूटर से कैंपेन शुरू किया

भरोसेमंद म्यूचुअल फंड डिस्ट्रीब्यूटर्स की भूमिका पर जोर

इसमें नए दौर के निवेशकों से आग्रह किया गया कि वे अपने वित्तीय भविष्य को सुरक्षित रखने के लिए सलाह-आधारित निवेश को प्राथमिकता दें

मुंबई, एजेंसी। ऐसे समय में जब निवेश तेजी से खुद करें प्लेटफॉर्म की ओर बढ़ रहा है, पैंटोमैथ ग्रुप की एक परिसंपत्ति प्रबंधन शाखा, द वेल्थ कंपनी म्यूचुअल फंड ने निर्देशित निवेश के महत्व को फिर से स्थापित करने के लिए एक निर्णायक कदम उठाया है। आज, एएमसी ने अपना नया 6 महीने लंबा अभियान मिलिए आपके म्यूचुअल फंड डिस्ट्रीब्यूटर से लॉन्च किया, जो पूरे भारत में निवेशकों को मार्गदर्शन देने में म्यूचुअल फंड डिस्ट्रीब्यूटर्स द्वारा निभाई जाने वाली अक्सर अनदेखी की जाने वाली, लेकिन अपरिहार्य भूमिका को एक श्रद्धांजलि है।

निर्देशित निवेश ने नए दौर के निवेशकों के लिए, विशेष रूप से उन लोगों के लिए जो पहली बार बाजार में आ रहे हैं, ठोस लाभ दिखाए हैं। जबकि डायरेक्ट म्यूचुअल फंड प्लान में कम व्यय अनुपात होता है–जो आमतौर पर रेगुलर प्लान की तुलना में 0.5 से 1 प्रतिशत कम होता है–संरचित सिफारिशों की अनुपस्थिति के कारण अक्सर उप-इष्टतम फंड चयन, बाजार की अस्थिरता के दौरान भावनात्मक प्रतिक्रियाएं और असमय निकासी होती है। मॉर्निंगस्टार इंडिया और एएमएफआई द्वारा उद्धृत उद्योग के आंकड़े बताते हैं कि पंजीकृत बिचौलियों–जैसे म्यूचुअल फंड डिस्ट्रीब्यूटर्स या सलाहकारों–के साथ काम करने वाले निवेशक डायरेक्ट निवेशकों की तुलना में औसतन 1-1.5 प्रतिशत अधिक वार्षिक रिटर्न कमाते हैं। यह मुख्य रूप से बेहतर परिसंपत्ति आवंटन, कम घबराहट-प्रेरित व्यवहार और अनुशासित निवेश रणनीतियों के कारण है। जबकि डायरेक्ट प्लान उच्च वित्तीय साक्षरता वाले अनुभवी निवेशकों के लिए उपयुक्त हो सकते हैं, निर्देशित निवेश व्यवहारिक अनुशासन और संरचित पोर्टफोलियो निगरानी प्रदान करता है–जो दीर्घकालिक वित्तीय लक्ष्यों के साथ बेहतर संरेखण की ओर ले जाता है।

बाणगंगा पेपर इंडस्ट्रीज़ लिमिटेड ने वित्त वर्ष 26 की पहली तिमाही में 21.17 करोड़ की आय की घोषणा की साथ ही

सतत विकास के प्रति प्रतिबद्धता दोहराई

मुंबई, एजेंसी। बाणगंगा पेपर इंडस्ट्रीज़ लिमिटेड जो विविध प्रकार के क्राफ्ट पेपर के अग्रणी निर्माता और आपूर्तिकर्ता में से एक है, ने वित्त वर्ष 26 की पहली तिमाही के अपने अनऑडिटेड परिणाम घोषित किए हैं। वित्त वर्ष 26 की पहली तिमाही (कंसोलिडेटेड) में कुल आय 21.17 करोड़ रही, जबकि एबिटा 1.57 करोड़ दर्ज किया गया। एबिटा मार्जिन 7.42 प्रतिशत रहा, वहीं शुद्ध लाभ 0.65 करोड़ और नेट प्रॉफिट मार्जिन 3.08 प्रतिशत रहा। प्रति शेयर आय 0.05 रही। वित्तीय प्रदर्शन पर टिप्पणी करते हुए कंपनी के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री करभरी धात्रक ने कहा, हम वित्त वर्ष 26 की एक अच्छी शुरुआत करते हुए पहले तिमाही में 21.17 करोड़ की कुल आय दर्ज करने पर प्रसन्न हैं। यह प्रदर्शन बाजार की परिस्थितियों में हमारी मजबूती, परिचालन दक्षता और सतत विकास के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। पर्यावरण के अनुकूल प्रथाओं—जैसे रिफ्यूज़-डिराइव्ड फ्यूल का उपयोग, ज़ीरो लिक्विड डिस्चार्ज और वेस्ट से रिसोर्स रिकवरी में हमारे लगातार निवेश न केवल हमारी लागत प्रतिस्पर्धा को मजबूत करते हैं, बल्कि हमारे दीर्घकालिक पर्यावरण संरक्षण के संकल्प को भी सुदृढ़ करते हैं।

फटी हुई ब्रेन एन्यूरिज़्म का शालिनीताई मेघे हॉस्पिटल में आधुनिक मिनिमली इनवेसिव तकनीक से सफल इलाज

छिंदवाड़ा। हाल ही में मध्यप्रदेश के छिंदवाड़ा की 60 वर्षीय महिला को अचानक तेज सिरदर्द, फिर उनींदापन और चिड़चिड़ापन महसूस होने पर डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर सुपरस्पेशलिटी इंस्टीट्यूट (डीबीएएसआई) के सुपरस्पेशलिटी विंग, 1,020 बेड्स वाले शालिनीताई मेघे हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर (एसएमएचआरसी), वानाडोंगरी में भर्ती कराया गया। भर्ती करने के बाद तुरंत किए गए सीटी स्कैन में ब्रेन हैमरेज का पता चला और बिना देरी किए मरीज को आईसीयू में भर्ती कर लिया गया। आगे की जांच में पता चला कि मरीज के मस्तिष्क की बाईं एंटीरियर सेरेब्रल आर्टरी (धमनी) में एन्यूरिज़्म फट गया है। यह एक गंभीर और जानलेवा स्थिति होती है, जिसमें मस्तिष्क की कमजोर रक्त वाहिका फट जाती है और अंदर खून बहने लगता है। इंटरवेंशनल न्यूरोलॉजिस्ट डॉ. जीवन किंकर ने बताया, ब्रेन एन्यूरिज़्म तब तक छुपा हुआ रहता है, जब तक वह फट न जाए। समय पर इलाज बहुत जरूरी है। डीबीएएसआई में हमारे पास ऐसी आपात स्थितियों का सही तरीके से पता लगाने और सुरक्षित इलाज करने की पूरी सुविधा है।

पोको एम7 प्लस 5जी 6.9-इंच के डिस्प्ले और 7,000 एमएएच बैटरी के साथ भारत में लॉन्च

मुंबई, एजेंसी। भारत के अग्रणी कंज्यूमर टेक्नोलॉजी ब्रांड्स में से एक, पोको ने किफायती स्मार्टफोन सेगमेंट में अपने नए स्मार्टफोन - पोको एम7 प्लस 5जी को लॉन्च किया है। नॉन-स्टॉप मनोरंजन और लंबे समय तक चलने वाले प्रदर्शन के लिए डिज़ाइन किया गया, एम7 प्लस 5जी इस सेगमेंट में 7000एमएएच की सिलिकॉन कार्बन बैटरी और 144एच5 रिफ्रेश रेट के साथ 6.9-इंच एफएचडी+ डिस्प्ले के साथ उतारा गया है। केवल 12,999 रुपये में यह फोन पूरे दिन आपके मनोरंजन का साथी बनेगा।

पोको एम7 प्लस 5जी स्नैपड्रैगन0 6एस जेन 3 के साथ बिना रुकावट मल्टीटास्किंग के लिए शानदार प्रदर्शन देता है, जिसमें 16जीबी तक टर्बो रैम शामिल है। 144एच5 का एडैप्टिव रिफ्रेश रेट आसानी से स्क्रॉलिंग करने, शानदार गेमिंग और बिना रुकावट सोशल मीडिया ब्राउज़िंग सुनिश्चित करता है। इसकी 7000 सिलिकॉन कार्बन बैटरी, इस सेगमेंट में सबसे बड़ी है जिसे 1600 चार्ज साइकिल के लिए बनाया गया है। यह चार साल के उपयोग के बाद भी 80 प्रतिशत तक क्षमता बनाए रखती है। 18डब्लू रिवर्स चार्जिंग के साथ, एम7 प्लस 5जी न केवल आपके फोन को, बल्कि आपके अन्य डिवाइसेस को भी पूरे दिन चालू रखने के लिए पावर बैंक के रूप में काम करता है।

हैरियर और सफारी का ऑल-न्यू एडवेंचर एक्स पर्सोना लॉन्च

कीमत 18.99 लाख से शुरू

भोपाल। भारत की प्रमुख एसयूवी निर्माता कंपनी, टाटा मोटर्स ने आज अपनी लोकप्रिय एसयूवी - टाटा हैरियर और टाटा सफारी में ऑल-न्यू एडवेंचर एक्स पर्सोना लॉन्च किया। इस नए पर्सोना में एडवेंचर, शानदार प्रदर्शन और ढेर सारे फीचर्स हैं, जो ग्राहकों को बेहतरीन अनुभव और रोमांच से भरपूर लाइफस्टाइल जीने का मौका देते हैं। एडवेंचर एक्स पर्सोना में इस कीमत पर पहली बार कई खास फीचर्स दिए गए हैं, जिनमें एडाप्टिव क्रूज कंट्रोल के साथ एडीएएस, 360ए ॥एचडी सराउंड व्यू, ऑटो होल्ड के साथ ट्रेल होल्ड इलेक्ट्रॉनिक पार्किंग ब्रेक ट्रेल रिस्पॉन्स मोड्स (नॉर्मल, रफ, वेट), लैंड रोवर से प्रेरित कमांड शिफ्टर , और अन्य शानदार फीचर्स जैसे मेमोरी और वेलकम फंक्शन वाली एर्गो लक्स ड्राइवर सीट, 26.03 सेमी अल्ट्रा व्यू ट्विन स्क्रीन सिस्टम, ट्रेल सेंस ऑटो हेडलैंप्स, एक्वा सेंस वाइपर्स और मल्टी ड्राइव मोड्स (सिटी, स्पोर्ट, इको) शामिल हैं। ये वैरिएंट आज से उपलब्ध हैं, जिनकी शुरुआती कीमत हैरियर एडवेंचर एक्स पर्सोना के लिए 18.99 लाख रुपए और सफारी एडवेंचर एक्स+ पर्सोना के लिए 19.99 लाख रुपए है। इस नए वैरिएंट के लॉन्च के साथ, टाटा मोटर्स ने हैरियर और सफारी लाइनअप को और अधिक आकर्षक

बनाया है, जिससे यह रेंज हाई एसयूवी सेगमेंट में पहले से कहीं अधिक स्मार्ट, एकजुट और कई फीचर्स से भरपूर हो गई है। एक सुव्यवस्थित पर्सोना स्ट्रक्चर, फीचर से भरपूर वैरिएंट्स और नए रंग विकल्पों के साथ, लाइनअप में नया प्योर एक्स पर्सोना भी शामिल है, जो ग्राहकों को बेहतरीन कीमत पर बढ़िया मूल्य प्रदान करेगा। कीमतें 14,99,990, पर्सोना प्योरएक्स, शुरुआती कीमत लाख रुपये में (ईएसपी, नई दिल्ली) 17,99,000,एडवेंचर एक्स 18,99,000,एडवेंचर एक्स+ 19,34,000, फियरलेस एक्स 22,34,000, फियरलेस ङ्क+ 24,44,000. इस नए पर्सोना - एडवेंचर ङ्क के लॉन्च के मौके पर, टाटा पैसेंजर इलेक्ट्रिक मोबिलिटी लिमिटेड के चीफ कॉमर्शियल ऑफीसर श्री विवेक श्रीवत्स ने कहा, हैरियर और सफारी हमेशा से सिर्फ़ गाड़ियाँ नहीं रहीं - ये ग्राहकों के रुतबे, मकसद और

टोयोटा अर्बन क्रूज़र टाइज़र अब सभी वैरिएंट्स में बेहतर सुरक्षा के साथ नए आकर्षक ब्लूइश ब्लैक रंग में उपलब्ध

बेंगलुरु, एजेंसी। टोयोटा किर्लोस्कर मोटर (टीकेएम) ने आज अपनी लोकप्रिय कॉम्पैक्ट एसयूवी अर्बन क्रूज़र टाइज़र के लिए दो अहम अपग्रेड की घोषणा की। कंपनी ने नया ब्लूइश ब्लैक एक्सटीरियर कलर पेश किया है और सभी वैरिएंट्स में स्टैंडर्ड तौर पर छह एयरबैग्स शामिल किए हैं। टोयोटा हमेशा ग्राहकों को सबसे अधिक महत्व देता है और उसकी सोच बेहतर से बेहतर कारें प्रदान करने पर केंद्रित रहती है।

एक नया आकर्षक लुक- ब्लूइश ब्लैक की पेशकश- टाइज़र के डायनैमिक और युवा आकर्षण को बढ़ाते हुए, टोयोटा किर्लोस्कर मोटर ने चुनिंदा वैरिएंट्स में नया ब्लूइश ब्लैक एक्सटीरियर कलर जोड़ा है। यह प्रीमियम शेड एसयूवी की सड़क पर उपस्थिति को और निखारता है, ग्राहकों को एक ताज़ा विकल्प देता है, जिसमें शालीनता और स्पोर्टी लुक का बेहतरीन मिश्रण है। यह नया रंग दर्शाता है कि टोयोटा ग्राहकों की बदलती जीवनशैली और कॉम्पैक्ट एसयूवी खरीदारों में पर्सनलाइजेशन की बढ़ती मांग को भली-भांति समझता है।

सिट्रोएन इंडिया ने बेहतर फीचर्स के साथ नई सिट्रोएन सी3एक्स लॉन्च की

मुंबई, एजेंसी। सिट्रोएन 2.0-शिफ्ट इन टू द न्यू स्ट्रेटजिक प्लान के अंतर्गत, सिट्रोएन इंडिया ने आज नई सिट्रोएन सी3एक्स रेंज लॉन्च की। यह इसकी लोकप्रिय एसयूवी-स्टाईल की कार का बोल्ड रूपांतरण है। इसमें 15 नए इंटैलिजेंट फीचर्स दिए गए हैं। सिट्रोएन सी3 हर सफर में बेहतर कम्फर्ट, टेक्नोलॉजी पर केंद्रित सुविधाएं और सुरक्षा प्रदान करती है। यह अपने सेगमेंट में सबसे किफायती मूल्य में होने के कारण आसानी से खरीदी जा सकती है, जिससे इसे प्रतिस्पर्धी बढ़त मिलती है। स्टेलैंटिस इंडिया के एमडी एवं सीईओ, शैलेष हजेला ने कहा सिट्रोएन सी3 रेंज 5.25 लाख रुपये के आकर्षक शुरुआती मूल्य में पेश करके हम इस सेगमेंट को और ज्यादा किफायती बना रहे हैं।

मोतीलाल ओसवाल फाउंडेशन ने आईआईएम रायपुर और एनआईटी रायपुर को 172 करोड़ का अनुदान दिया

छत्तीसगढ़ शिक्षा और इनोवेशन का हब बनेगा

रायपुर, एजेंसी। एक ऐतिहासिक परोपकारी पहल के तहत, मोतीलाल ओसवाल फाउंडेशन ने छत्तीसगढ़ के दो प्रमुख शिक्षण संस्थानों, भारतीय प्रबंधन संस्थान रायपुर को 101 करोड़ और राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान रायपुर को 71 करोड़ का अनुदान देने का संकल्प लिया है। मोतीलाल ओसवाल फाउंडेशन (एमओएफ) ने छत्तीसगढ़ की दो प्रतिष्ठित शैक्षणिक संस्थाओं - इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट रायपुर और नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी रायपुर - को कुल 172करोड़ की सहायता प्रदान करने की घोषणा की है। इसमें 101 करोड़ आईआईएम रायपुर और 71 करोड़ एनआईटी रायपुर को दिए जाएंगे। इस सहयोग के लिए समझौता ज्ञापन पर आज रायपुर स्थित डीडीयू ऑडिटोरियम में हस्ताक्षर किए गए। इस अवसर पर माननीय मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय, उपमुख्यमंत्री श्री विजय शर्मा, सांसद श्री बृजमोहन अग्रवाल, विधायक श्री

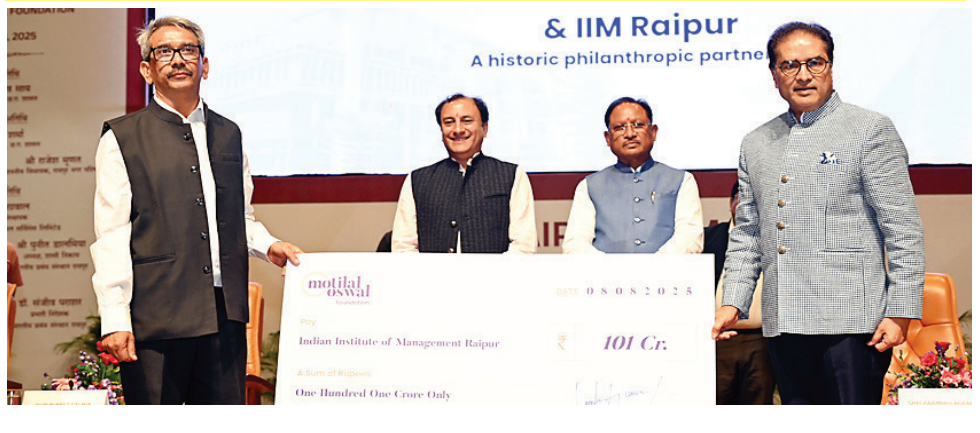

राजेश मूणत, एनआईटी रायपुर के चेयरमैन डॉ. सुरेश हावरे, आईआईएम रायपुर के चेयरमैन श्री पुनीत डालमिया, एनआईटी के निदेशक डॉ. एन. वी. रमना राव, आईआईएम रायपुर के प्रभारी निदेशक डॉ. संजीव प्रशार, स्किल डेवेलपमेंट विभाग के सचिव डॉ. एस. भारतीदासन (आईएएस) और श्री रामदेव अग्रवाल सहित संस्थानों और सरकार के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

यह पहल, मोतीलाल ओसवाल फाइनेंशियल सर्विसेज के चेयरमैन और सह-संस्थापक तथा मोतीलाल ओसवाल फाउंडेशन के ट्रस्टी श्री रामदेव अग्रवाल के लिए व्यक्तिगत तौर पर बेहद खास है। रायपुर के पास, नागपुरा गांव के मूल निवासी, श्री अग्रवाल अपनी जन्मभूमि और शुरुआती शिक्षा की इस भूमि को कुछ लौटाने का संकल्प लेकर यह योगदान दे रहे हैं। उनका यह निवेश ऐसे संस्थानों में हो रहा है, जो इस क्षेत्र के भविष्य को परिभाषित करेंगे।

गोदरेज एंटरप्राइजेज ग्रुप ने नोएडा में स्मार्ट सोलर कारपोर्ट के साथ ग्रीन इनोवेशन को बढ़ावा दिया

● 31,984 वर्ग मीटर में फैला और 1,031 सौर पैनलों से संचालित, यह इंस्टॉलेशन मेट्रो शहरों में स्वच्छ ऊर्जा उत्पादन के लिए एक स्पेस-स्मार्ट समाधान प्रस्तुत करता है

मुंबई, एजेंसी। गोदरेज एंटरप्राइजेज ग्रुप के एनर्जी सॉल्यूशंस बिजनेस ने आज नोएडा में एक प्रमुख आईटी कंपनी में अपने पहले सोलर कारपोर्ट इंस्टॉलेशन के सफल संचालन की घोषणा की। यह महत्वपूर्ण परियोजना अभिनव, टिकाऊ बुनियादी ढांचे के लिए ग्रुप की प्रतिबद्धता को दर्शाती है, जो भारत की नवीकरणीय ऊर्जा महत्वाकांक्षाओं और 2047 तक विकसित भारत के दृष्टिकोण का समर्थन करती है। 31,984 वर्ग मीटर में फैला और 1,031 से अधिक उच्च-दक्षता वाले सौर पैनलों से लैस, यह कारपोर्ट सालाना लगभग 7,31,900 किलोवाट-घंटा (यूनिट) बिजली उत्पन्न करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। यह हर साल लगभग 6,00,158 किलोग्राम कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन की भरपाई करेगा, जो 27,568 से अधिक पेड़ लगाने के बराबर है। यह दोहरे-उद्देश्यीय संरचना न केवल 400 वाहनों के लिए छायादार पार्किंग सुविधा प्रदान करती है, बल्कि शहरी इलाकों की अनुपयोगी जगहों को नवीकरणीय ऊर्जा केंद्रों में बदल देता है। राघवेंद्र मिरजी, कार्यकारी उपाध्यक्ष एवं बिजनेस हेड, एनर्जी सॉल्यूशन्स, गोडरेज एंटरप्राइजेज ने कहा, जैसे-जैसे शहर की आबादी बढ़ रही है, और जगह कम होती जा रही है, ऐसे में ढांचागत विकास को स्मार्ट और टिकाऊ दोनों होना चाहिए। यह सोलर कारपोर्ट हमारी उस सोच का उदाहरण है, जिसमें हम शहरी भारत की ऊर्जा जरूरतों को पूरा करते हुए जलवायु लचीलापन भी मजबूत करते हैं। वाणिज्यिक और औद्योगिक केंद्रों में नवीकरणीय ऊर्जा अपनाने के लिए नवाचार के ज़रिए, हम भारत की ऊर्जा आत्मनिर्भरता और लो-कार्बन इकोनॉमी की दिशा में योगदान दे रहे हैं। इस यात्रा में योगदान करने पर हमें गर्व है।यह पहल भारत के 2030 तक 500 गीगावॉट नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता के लक्ष्य और इसके राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदानों (एनडीसी) के तहत कार्बन तीव्रता में कमी के संकल्प में सीधा योगदान देती है। यह सरकार के उस दृष्टिकोण के साथ भी मेल खाती है, जो लचीले, ऊर्जा-सकारात्मक शहरों के निर्माण पर केंद्रित है, जो समावेशी आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के साथ-साथ जलवायु जोखिमों को भी कम करें।

डीएसपी म्यूचुअल फंड ने लॉन्च किया भारत का पहला फ्लेक्सीकैप इंडेक्स फंड

यह गुणवत्ता-आधारित फंड, जो एसआईपी निवेश ट्र के लिए अनुशंसित है, लचीलेपन को ध्यान में रखकर बनाया गया है

मुंबई, एजेंसी। डीएसपी म्यूचुअल फंड ने निवेशकों के लिए डीएसपी निफ्टी 500 फ्लेक्सीकैप क्वालिटी 30 इंडेक्स नामक एक नया फंड लॉन्च किया है। यह फंड कम लागत वाली पहली फ्लेक्सीकैप निवेश रणनीति है। यह रणनीति केवल उच्च-गुणवत्ता वाले शेयरों में निवेश और गतिशील संकेतों (ट्रिगर) पर आधारित तेज़ गति वाले निवेश इन दोनों को जोड़ती है। भारत में पहली बार बनाए गए फ्लेक्सीकैप इंडेक्स का प्रदर्शन इस फंड की प्रगति में परिलक्षित होगा। इसे निवेशकों को लगातार बदलते शेयर बाजार में आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ने में मदद करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। डीएसपी निवेशकों को एसआईपी के माध्यम से निवेश करने की सलाह देता है, क्योंकि मौजूदा समय में (खासतौर पर उच्च गुणवत्ता वाले स्मॉल और मिड-कैप शेयरों में) मूल्यांकन ऊंचे और अनिश्चित हो सकते हैं। एसआईपी से निवेशकों को समय के साथ औसत खरीद मूल्य पाने में मदद मिलती है, बाजार के उच्चतम स्तर पर खरीदारी के जोखिम को कम करती है, और इस फंड की निवेश फिलॉसफी–उच्च गुणवत्ता वाले व्यवसायों में अनुशासित, दीर्घकालिक निवेश–के अनुरूप रहती है।

एयरटेल पेमेंट्स बैंक का वार्षिक राजस्व बढ़कर 3,000 करोड़ रुपये से अधिक हुआ

● वित्तवर्ष 2026 की पहली तिमाही में 777.4 करोड़ रुपये का राजस्व दर्ज किया ● शुद्ध लाभ साल-दर-साल 44.4 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 10.4 करोड़ रुपये तक पहुँचा

नई दिल्ली, एजेंसी। एयरटेल पेमेंट्स बैंक ने 30 जून, 2025 को समाप्त हुई तिमाही के लिए अपने वित्तीय परिणाम जारी कर दिए। इस तिमाही में भी बैंक का प्रदर्शन काफी मजबूत रहा। बैंक का वार्षिक राजस्व 3,000 करोड़ रुपये को पार कर गया, जिससे यह देश में सबसे ज्यादा तेजी से विकसित होते हुए डिजिटल बैंकों की कतार में आ गया। वित्तवर्ष 2026 की पहली तिमाही के लिए एयरटेल पेमेंट्स बैंक ने 27.5 प्रतिशत की साल-दर-साल वृद्धि के साथ 777.4 करोड़ रुपये का राजस्व दर्ज किया, वहीं शुद्ध लाभ 44.4 प्रतिशत बढ़कर 10.4 करोड़ रुपये तक पहुँच गया। मजबूत ऑपरेटिंग परफॉर्मेंस और ग्राहकों के बीच तेज एडॉप्शन के चलते इबीआइटीडीए 30 प्रतिशत साल-दर-साल वृद्धि दर्ज करते हुए बढ़कर 81.8 करोड़ रुपये हो गया।

ग्राहक जमा राशि में साल-दर-साल 27.2 प्रतिशत की वृद्धि हुई और यह बढ़कर 3,743 करोड़ रुपये तक पहुँच गई। बैंक की वार्षिक ग्रॉस मर्चेंडाईज़ वैल्यू 4,260 बिलियन डॉलर हो गई। एयरटेल पेमेंट्स बैंक ने यूज़र बेस के आधार पर भारत में तीसरे सबसे बड़े मोबाईल बैंक के रूप में अपनी स्थिति को मजबूत कर ली है, जिससे शहरी और ग्रामीण सेगमेंट्स में ग्राहकों की गहरी सहभागिता प्रदर्शित होती है।

एयरटेल पेमेंट्स बैंक के एमडी एवं सीईओ, बिस्वास ने कहा, ''हमें वित्तवर्ष 2026 की मजबूत शुरुआत करने की खुशी है। हमने सभी मुख्य प्रदर्शन के क्षेत्रों में स्थिर वृद्धि दर्ज की है। 3,000 करोड़ रुपये से अधिक वार्षिक राजस्व प्राप्त करने की उपलब्धि हमारे बिज़नेस मॉडल की शक्ति और हमारे ऊपर ग्राहकों के भरोसे का प्रमाण है।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

शुभमन गिल या यशस्वी जायसवाल: एशिया कप टीम में किसे मिलेगी जगह

नई दिल्ली (एजेंसी)। नवनियुक्त टेस्ट कप्तान शुभमन गिल ने इंग्लैंड दौरे के दौरान 754 रन बनाकर बल्लेबाजी रिकॉर्ड बुक में अपना नाम दर्ज करा लिया। इस दौरे में उन्होंने 5 मैचों में चार शतक लगाए और %प्लेयर ऑफ द सीरीज% का खिताब जीता। वनडे में पहले से ही एक मजबूत खिलाड़ी गिल ने 55 वनडे मैचों में 2,775 रन और 22 अर्धशतक जड़े। शुभमन गिल को 9 सितंबर से शुरू होने वाले आगामी टी20 एशिया कप में खिलाने का प्रलोभन दिया जा रहा है।

भारत अपने अभियान की शुरुआत 10 सितंबर को यूएई के खिलाफ मैच से करेगा। मीडिया में ऐसी खबरें हैं कि गिल टी20 अंतरराष्ट्रीय टीम में वापसी कर सकते हैं, और संभवतः उप-कप्तान संभाल सकते हैं। मौजूदा कप्तान रोहित शर्मा के संन्यास लेने के बाद, उन्हें वनडे टीम की कमान मिल सकती है। सवाल यह है कि क्या गिल भारत की टी20आई योजनाओं में फिट बैठते हैं? उनका सबसे हालिया टी20 मैच इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2025 में था, जहां उन्होंने लगभग 156 के स्ट्राइक रेट से 15 मैचों में छह अर्द्धशतकों के साथ 650 रन बनाए और चौथे सबसे ज्यादा रन बनाने वाले खिलाड़ी के रूप में उभरे। उन्हें उन चेहरों में से एक के रूप में भी पहचाना जाता है जो आने वाले दशक में भारत के लिए सभी प्रारूपों के क्रिकेट पर हावी हो सकते हैं।

चयन प्रक्रिया अभी भी जटिल है, क्योंकि पिछली बार जब भारत ने एक पूर्ण टी20आई टीम खेली थी, तब रोहित शर्मा और विराट कोहली टी20 विश्व कप 2024 में अभी भी मौजूद थे और गिल मुख्य 15 खिलाड़ियों के अलावा एक यात्रा रिजर्व के रूप में थे। तब से शेड्यूलिंग और चोटों ने टी20आई में भारत के चयन को प्रभावित किया है। उन्होंने वर्ष 2024 का अंत आठ टी20आई में 38.00 की औसत, 133 की स्ट्राइक रेट और जिम्बाब्वे श्रृंखला में दो अर्द्धशतकों के साथ 266 रन बनाकर किया, जिससे उनके कुल आंकड़े 21 मैचों और पारियों में 30.42 की औसत से 578 रन हो गए जिसमें 139 से अधिक की स्ट्राइक रेट, एक शतक और तीन अर्द्धशतक शामिल हैं, जबकि उनके टी20आई करियर की शुरुआत में स्कोर की एक असंगत श्रृंखला थी।

गिल को जुलाई में टी20आई श्रृंखला के लिए सूर्यकुमार यादव के उप-कप्तान के रूप में नियुक्त किया गया था और चूंकि टेस्ट क्रिकेट को प्राथमिकता दी गई, इसलिए गिल को टी20आई के लिए नहीं चुना गया। संजू सैमसन, अभिषेक शर्मा और तिलक वर्मा भारत के नए शीर्ष तीन के रूप में उभरे। गिल अक्टूबर में बांग्लादेश के खिलाफ टी20आई, नवंबर में दक्षिण अफ्रीका में टी20आई और इस साल जनवरी में इंग्लैंड के खिलाफ घरेलू टी20आई से चूक गए। जनवरी में होने वाले टी20 अंतरराष्ट्रीय मैच ऑस्ट्रेलिया में बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी के निराशाजनक प्रदर्शन के तुरंत बाद आयोजित किए गए थे और मार्च में होने वाली आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी इस युवा खिलाड़ी के लिए प्राथमिकता थी क्योंकि उन्हें इंग्लैंड के खिलाफ वनडे सीरीज के लिए चुना गया था और ऑलराउंडर अक्षर पटेल को इस पूरे टी20 अंतरराष्ट्रीय सीरीज के लिए उप-कप्तान बनाया गया था।

कार्यक्रम अभी भी बेहद कठिन है क्योंकि 28 सितंबर को एशिया कप फाइनल के बाद वेस्टइंडीज के खिलाफ घरेलू टेस्ट सीरीज 2 अक्टूबर से शुरू होगी। चयनकर्ताओं को अगले साल घरेलू और श्रीलंका में होने वाले टी20 विश्व कप को बरकरार रखने के इरादे से एशिया कप के लिए अपनी सर्वश्रेष्ठ टीम चुननी होगी। टी20 विश्व कप जीत के बाद से भारत द्विपक्षीय सीरीज में शानदार प्रदर्शन कर रहा है और उसने ऐसी 20 में से 17 सीरीज जीती हैं।

गिल की अनुपस्थिति में अभिषेक ने इंग्लैंड के खिलाफ 279 रनों की सीरीज (220 के औसत से) खेलकर अपनी जगह पक्की कर ली, जिसमें वानखेड़े में 54 गेंदों में 135 रनों की तूफानी पारी भी शामिल है। हालांकि संजू के स्कोर कम रहे, लेकिन उन्होंने बांग्लादेश के खिलाफ घरेलू और दक्षिण अफ्रीका में हुई सीरीज की 5 पारियों में तीन शतक जड़े थे। पिछला टी20 विश्व कप जीत के बाद से सभी शीर्ष क्रम विकल्पों में, अभिषेक अपने स्ट्रोकप्ले और स्ट्राइक रेट को देखते हुए शीर्ष स्कोरर और सबसे आकर्षक खिलाड़ी रहे हैं। भारत/आईपीएल/घरेलू मुकाबलों में 42 मैचों में उन्होंने 40 पारियों में

34.94 की औसत से 1,363 रन बनाए हैं, जिसमें 198 से ज्यादा का स्ट्राइक रेट, 4 शतक और छह अर्द्धशतक शामिल हैं। उनका सर्वश्रेष्ठ स्कोर 141 है।

पिछले टी20 विश्व कप के बाद से तिलक ने 36 मैचों और 32 पारियों में 50.00 की औसत से 1,200 रन बनाए हैं जिसमें 153.84 का स्ट्राइक रेट, तीन शतक और 5 अर्द्धशतक शामिल हैं। उनका सर्वश्रेष्ठ स्कोर 151 है। इनमें से दो शतक पिछले साल दक्षिण अफ्रीका दौरे के दौरान आए थे। सैमसन ने भी अच्छा प्रदर्शन किया और अभिषेक के साथ भारतीय टीम के लिए सलामी बल्लेबाज के रूप में नया जीवन पाया। पिछले टी20 विश्व कप के बाद से उन्होंने 31 टी20 मैचों और 30 पारियों में 33.62 की औसत और 157.09 के स्ट्राइक रेट से 908 रन बनाए हैं, जिसमें तीन शतक और तीन अर्द्धशतक शामिल हैं।

कप्तान सूर्यकुमार यादव ने सभी टी20 मैचों में 36.90 की औसत और 161.13 के स्ट्राइक रेट और 8 अर्द्धशतकों के साथ 1,107 रन बनाए हैं। टी20 विश्व कप जीत के बाद उनका सर्वश्रेष्ठ स्कोर 75 रन है। हालांकि उनके अंतरराष्ट्रीय फॉर्म में भारी गिरावट देखी गई। पिछले साल के टी20 विश्व कप के बाद से गिल ने 22 मैचों में 47.00 की औसत और 147 से अधिक के स्ट्राइक रेट और आठ अर्द्धशतकों के साथ 893 रन बनाए हैं। उनका सर्वश्रेष्ठ स्कोर 93* है।

विश्व कप पर नजरें, ग्लेन मैक्सवेल अपनी गेंदबाजी में कर रहे सुधार

केर्न्स (ऑस्ट्रेलिया) (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलिया के करिश्माई ऑलराउंडर ग्लेन मैक्सवेल अगले साल भारतीय उपमहाद्वीप में होने वाले टी20 विश्व कप को ध्यान में रखते हुए पावरप्ले के ओवरों में अधिक प्रभाव छोड़ने के लिए अपने स्पिन गेंदबाजी कौशल को निखार रहे हैं।

टी20 विश्व कप 2026 में भारत और श्रीलंका में आयोजित किया जाएगा और अगर मैक्सवेल फिट रहते हैं तो उनका ऑस्ट्रेलिया की टीम में जगह बनाना तय है। वह नियमित रूप से इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) में खेलते रहे हैं और भारतीय उपमहाद्वीप की परिस्थितियों से अच्छी तरह वाकिफ हैं।

मैक्सवेल ने अपनी गेंदबाजी क्षमता के बावजूद 2022 के टी20 विश्व कप और दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ चल रही घरेलू श्रृंखला के बीच सबसे छोटे प्रारूप में पावर प्ले में कुल मिलाकर 5 ओवर फेंके हैं। लेकिन इस 36 वर्षीय खिलाड़ी का मानना है कि वह टी20 विश्व कप के दौरान पावरप्ले ओवरों में उपयोगी साबित हो सकते हैं, क्योंकि नई गेंद उपमहाद्वीप के विकेटों पर बेहतर पकड़ बनाती है।

मैक्सवेल ने कहा, 'मुझे लगता है कि उपमहाद्वीप में आप शुरुआत में स्पिनर के तौर पर विकेट से थोड़ा अधिक लाभ उठा सकते हैं।' उन्होंने कहा, 'मुझे विकेट लेना बहुत पसंद है। जब भी मैं किसी को आउट करता हूं तो मुझे हैरानी होती है। मैं पावरप्ले में अपनी भूमिका निभाना चाहता हूं और इसमें अधिक बेहतर तरीके से गेंदबाजी करने की कोशिश कर रहा हूं।'

वेस्टइंडीज के खिलाफ पाकिस्तान 92 रन पर ऑल आउट, शोएब अख्तर ने हेड कोच को लिया आड़े हाथ

स्पोर्ट्स डेस्क। पाकिस्तान के पूर्व तेज गेंदबाज शोएब अख्तर ने वेस्टइंडीज के खिलाफ वनडे सीरीज हारने के बाद पाकिस्तान क्रिकेट टीम और नवनियुक्त हेड कोच माइक हेसन पर तीखा हमला बोला। हालांकि पाकिस्तान पहला वनडे जीतने में कामयाब रहा और दूसरा मैच भी अच्छा रहा, लेकिन तीसरे वनडे में टीम पूरी तरह से बिखर गई। 295 रनों के लक्ष्य का पीछा करते हुए पाकिस्तान की पूरी टीम 92 रनों पर ढेर हो गई। अख्तर ने कहा कि गेंदबाजी के अनुकूल परिस्थितियों में पाकिस्तानी बल्लेबाज अच्छा खेलने के लिए तैयार नहीं हैं। क्रिकेट पाकिस्तान के हवाले से अख्तर ने मैच के बाद कहा, %माइक हेसन एक अच्छे टी20 कोच हैं, लेकिन

मुझे नहीं पता कि उनमें वनडे के लिए क्या गुण हैं। इस प्रारूप में अगर आप अच्छे खिलाड़ी नहीं खिलाएंगे, तो यही होगा।' उन्होंने आगे कहा, 'जब तक आप स्थापित ऑलराउंडर, बल्लेबाज, गेंदबाज और स्पिनर नहीं उतारेंगे, आपको पूरे 50 ओवर नहीं मिलेंगे। इस प्रारूप में आप मुश्किल से जीत हासिल नहीं कर सकते।' उन्होंने कहा, 'यह खिलाड़ियों की गलती नहीं, बल्कि गलत नीतियों का नतीजा है। सीमिंग पिचों पर आपके खिलाड़ी हमेशा उजागर होते रहेंगे। अब इस पुनर्निर्माण प्रक्रिया को एक नया नाम दिया गया है, एक संयोजन बनाना। शुक्र करो कि पैट कमिंस और मिशेल स्टार्क यहां नहीं थे। जहां भी ऐसे हालात होंगे, हमारे खिलाड़ी उजागर होंगे।'

विराट ने अभ्यास सत्र का वीडियो जारी किया, ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ सीरीज से वापसी करेंगे

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट टीम के अनुभवी बल्लेबाज विराट कोहली के जहां एकदिवसीय क्रिकेट से संन्यास लेने की अटकलें लगायी जा रही हैं और कहा जा रहा है कि उन्हें 2027 विश्वकप के लिए जगह नहीं मिलेगी। वहीं लगता है कि कि विराट अभी संन्यास लेने के मूड में नहीं हैं। हाल ही में विराट ने नेट अभ्यास की तस्वीरें जारी की हैं। जिससे संकेत मिलते हैं कि वह एकदिवसीय प्रारुप पर ध्यान दे रहे हैं। अगस्त में बांग्लादेश के खिलाफ एकदिवसीय सीरीज के स्थगित होने के बाद अब विराट अक्टूबर में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ सीरीज में खेलते दिखेंगे। ये सीरीज विराट के करियर के लिए काफी अहम मानी जा रही है।

कोहली ने इनडोर नेट सत्र की एक तस्वीर जारी की है, जिससे पता चलता है कि चैंपियंस ट्रॉफी में

अपने अंतिम मैच के बाद से ही वह अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में वापसी के लिए तैयार हैं। साझा की गई एक तस्वीर में कोहली गुजरात टाइटंस के सहायक कोच नईम अमीन के साथ अभ्यास करते हुए दिखाई दे रहे थे। उन्होंने लिखा, 'हिट में सहायता करने के लिए धन्यवाद, भाई आपको देखकर हमेशा अच्छा लगता है।' बाद में एक प्रशंसक ने इस तस्वीर को दोबारा जारी किया। इसमें कोहली एकदिवसीय सीरीज की तैयारी करते हुए दिखे।

विराट के साथ-साथ ही कप्तान रोहित शर्मा के लिए भी ऑस्ट्रेलिया सीरीज अहम रहेगी। अगर वह इसमें अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाये तो उनका भी एकदिवसीय करियर समाप्त होना तय है। टी20 और टेस्ट मैच से संन्यास के कारण अब रोहित एकदिवसीय प्रारुप में ही खेलते हैं। इस बीच ही दिग्गजों की बढ़ती उम्र को देखते हुए भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) भविष्य की योजनाओं को देखते हुए इनकी जगह पर युवाओं को अवसर देने के पक्ष में है।

सीएसके के लिए सैमसन को शामिल करना इसलिए हो रहा मुश्किल : उथप्पा

नई दिल्ली । राजस्थान रॉयल्स के कप्तान संजू सैमसन के आईपीएल टीम बदलने को लेकर चर्चाएं जारी हैं। कहा जा रहा है कि सैमसन अगले सत्र में चेन्नई सुपर किंग्स खेल सकते हैं। सीएसके ने हालांकि अभी तक कुछ नहीं कहा है। वहीं राजस्थान रॉयल्स ने भी इस मामले में चुप्पी साध रखी है। इस मामले में पूर्व क्रिकेटर रॉबिन उथप्पा का माना है कि सैमसन अब रॉयल्स में फिट नहीं हो पा रहे हैं, इसी कारण वह उसे छोड़ना चाहते

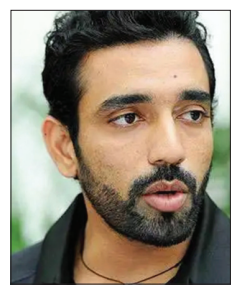

हैं। सीएसके को लग रहा है कि सैमसन आते हैं तो उसे एक अनुभवी विकेटकीपर बल्लेबाज और कप्तान मिल जाएगा जो महेंद्र सिंह धोनी की जगह ले सके। इसके लिए वह राजस्थान रॉयल्स से सौदेबाजी की कोशिश में लगी है। वहीं कहा जा रहा है कि रॉयल्स बदले में सीएसके के दो खिलाड़ी चाहती है। उथप्पा ने यह भी कहा कि सीएसके को आर अश्विन और विजय शंकर को देकर रॉयल्स से सैमसन को लेना चाहिये। सैमसन की कीमत अभी 18 करोड़ रुपये है, इसलिए भी उनके लिए करार करना कठिन हो रहा है। उथप्पा ने कहा कि रॉयल्स युवाओं को आगे बढ़ाती रही है। उसके पास पहले से ही बल्लेबाजी में यशस्वी जायसवाल, वैभव सूर्यवंशी और रियान पराग जैसी प्रतिभाएं हैं। इसी कारण सैमसन को अब टीम में अपना भविष्य नजर नहीं आता है। इसी वजह से वह किसी अन्य टीम के साथ जुड़ना चाहते हैं। उथप्पा ने कहा कि जायसवाल, सूर्यवंशी और रियान पराग के रहते हुए सैमसन को चौथे नंबर पर ही बल्लेबाजी के लिए उतरना पड़ेगा। वह नहीं चाहते कि बल्लेबाजी क्रम में वह नीचे खिसके क्योंकि वह भारतीय टीम के लिए टी20 में बल्लेबाजी करते हैं।

सचिन तेंदुलकर के बेटे अर्जुन तेंदुलकर की सानिया चंडोक से सगाई हुई

मुम्बई। महान बल्लेबाज सचिन तेंदुलकर के बेटे अर्जुन तेंदुलकर की सानिया चंडोक से सगाई हुई है। सानिया एक नामी कारोबारी घई परिवार से संबंध रखती हैं और अर्जुन की बचपन की दोस्त हैं। घई परिवार आतिथ्य और खाद्य उद्योग में एक बड़ा नाम है। जो इंटरकॉन्टिनेंटल होटल और लोकप्रिय आइसक्रीम ब्रांड ब्रुकलिन क्रीमरी के मालिक हैं। वहीं सानिया चंडोक मुंबई स्थित मिस्टर पॉज पेट स्पा एंड स्टोर एलएलपी में एक नामित पार्टनर और निदेशक हैं। वह दिग्गज कारोबारी रवि घई की पोती हैं। सानिया और अर्जुन बचपन के दोस्त हैं। उनकी सगाई में दोनों के परिवारों के सदस्य और उनके कुछ करीबी रिश्तेदार और दोस्त भी शामिल थे। इससे पहले अर्जुन और सानिया कई बार एकसाथ नजर आये पर उनके अफेयर की जानकारी सार्वजनिक नहीं हुई थी। अर्जुन तेंदुलकर बांए हाथ के तेज गेंदबाज और बल्लेबाज हैं। अर्जुन घरेलू क्रिकेट में गोवा की ओर से खेलते हैं। उन्होंने आईपीएल में मुंबई इंडियंस के लिए खेला है। उन्होंने अपने घरेलू करियर की शुरुआत मुंबई के साथ साल 2020 और 21 सत्र में की थी, जब उन्होंने हरियाणा के खिलाफ एक टी20 मैच में डेब्यू किया था। इससे पहले, उन्होंने जूनियर स्तर पर मुंबई की ओर से खेला था। इसके बाद वह गोवा चले गये थे। वहां उन्होंने फर्स्ट-क्लास और लिस्ट ए क्रिकेट में डेब्यू किया।

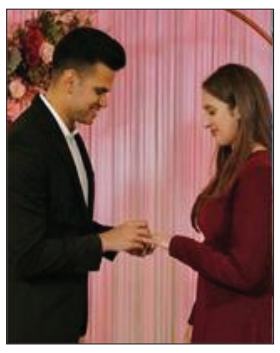

'सपना साकार हुआ', तिलक वर्मा ने काउंटी क्रिकेट खेलने के लिए हैम्पशायर का धन्यवाद किया

स्पोर्ट्स डेस्क। भारत के बाएं हाथ के बल्लेबाज तिलक वर्मा ने कहा कि हैम्पशायर के लिए काउंटी क्रिकेट खेलने के उनके छोटे से कार्यकाल ने उन्हें ऐसे सबक सिखाए हैं जिन्हें वह 'जीवन भर साथ रखेंगे'। वर्मा का सफर शून्य पर आउट होने के साथ समाप्त हुआ, जब हैम्पशायर को वन-डे कप के ग्रुप ए में वॉर्सेस्टरशायर से 5 विकेट से हार का सामना करना पड़ा।

वर्मा ने इंस्टाग्राम पर लिखा, 'बचपन में मैंने काउंटी क्रिकेट खेलने का सपना देखा था। इस साल हैम्पशायर के साथ वह सपना साकार हुआ, यहां मेरे पहले लाल गेंद के अनुभव और एकदिवसीय मैचों ने मुझे ऐसे सबक सिखाए जो मैं जीवन भर साथ रखूंगा, न केवल एक क्रिकेटर के रूप में, बल्कि एक व्यक्ति के रूप में भी। धन्यवाद, हैम्पशायर।'

भारत के लिए दोनों सफेद गेंद प्रारूपों में 29 मैच खेल चुके हैं 22 वर्षीय वर्मा पिछले महीने चार मैचों के काउंटी चैंपियनशिप के लिए हैम्पशायर में शामिल हुए थे। उन्होंने हैम्पशायर के लिए सभी प्रारूपों में 7 मैच खेले, जिनमें 2 शतकों और दो अर्द्धशतकों की मदद से 412 रन बनाए और उनका सर्वोच्च स्कोर 112 रहा। उन्होंने अपने तीन लिस्ट ए मैचों में एक विकेट भी लिया। हैम्पशायर ने उसी पोस्ट में यह भी कहा कि वर्मा ने क्लब को उनकी कल्पना से कहीं ज़्यादा दिया। उन्होंने कहा, 'अपने पहले लाल गेंद के शतक से लेकर हैम्पशायर की जर्सी में उन शानदार पारियों तक, उन्होंने दिखा दिया है कि वह क्रिकेट की सबसे प्रतिभाशाली खिलाड़ियों में से एक क्यों हैं। आंकड़ों से परे तिलक के व्यक्तित्व और गर्मजोशी ने यूटिलिटा बाउल में सभी को सचमुच प्रभावित किया है। उन्होंने हैम्पशायर क्रिकेट को खुले दिल से अपनाया है। इस जादू के लिए शुक्रिया, तिलक। एक बार हैम्पशायर का खिलाड़ी, हमेशा परिवार का हिस्सा।' वर्मा 28 अगस्त से बेंगलुरु में शुरू होने वाली 2025/26 दलीप ट्रॉफी में दक्षिण क्षेत्र का नेतृत्व करेंगे। यह क्षेत्रीय टूर्नामेंट भारत में घरेलू सत्र की शुरुआत का प्रतीक होगा। लेकिन वर्मा को यदि 9 से 28 सितंबर तक संयुक्त अरब अमीरात में खेले जाने वाले पुरुष टी-20 एशिया कप के लिए भारतीय टीम में चुना जाता है तो वह प्रतियोगिता से बाहर हो सकते हैं।

भारतीय पैरा-एथलीट खिलाड़ी का मुंह आवारा कुत्ते ने नोचा, रेबीज का इंजेक्शन भी नहीं आया काम, हुई मौत

स्पोर्ट्स डेस्क । भुवनेश्वर में एक पागल कुत्ते के काटने के कारण 33 वर्षीय राष्ट्रीय स्तर के पैरा-एथलीट और एक अन्य व्यक्ति की रेबीज से मौत हो गई। एथलीट जोगेंद्र छत्रिया, 48 वर्षीय किसान ऋषिकेश राणा और स्कूली बच्चों सहित छह लोगों को 23 जुलाई को कुत्ते ने काटा था। प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि कुत्ते ने बिना किसी उकसावे के हमला किया। छत्रिया के चेहरे पर गंभीर चोटें आईं। घायलों में से चार ठीक हो गए, लेकिन छत्रिया और राणा की हालत बिगड़ती गई और उनकी मृत्यु हो गई। अधिकारियों ने बताया कि दोनों को कुत्ते के काटने के बाद टीके लगाए गए थे, लेकिन छत्रिया के घावों की गंभीरता और स्थान के कारण संक्रमण तेजी से बढ़ा। भीमा भोई मेडिकल कॉलेज के अधीक्षक ने एक बयान में कहा, 'सभी घायलों को भर्ती होने के बाद टीका लगाया गया था।' जोगेंद्र छत्रिया को 23 जुलाई को पहला टीका लगा। लेकिन कुत्ते ने उनके चेहरे पर काटा था, इसलिए संक्रमण तेजी से फैला। अपनी मृत्यु से पहले दोनों पीड़ितों में रेबीज़ के पूरे लक्षण दिखाई दिए। छत्रिया राष्ट्रीय फ्लोरबॉल प्रतियोगिताओं में भारत का प्रतिनिधित्व करने और पैरा-एथलेटिक्स में अपनी उपलब्धियों के लिए जाने जाते थे।

आईसीसी नॉकआउट मैचों में रनों के मामले में पहले दो स्थानों पर हैं विराट और रोहित

नई दिल्ली । भारतीय एकदिवसीय क्रिकेट टीम के कप्तान रोहित शर्मा और अनुभवी बल्लेबाज विराट कोहली का आईसीसी के नॉकआउट मैचों में काफी अच्छा रिकार्ड रहा है हालांकि इसके बाद भी इन दोनो को अगले एकदिवसीय विश्वकप में अवसर मिलने की काफी कम संभावनाएं हैं। विश्व कप 2027 की टीम में भले ही इन दोनो को भले ही जगह न मिले पर इनके योगदान को कम आंकना भूल होगा। नॉकआउट मैचों में रनों की बात करें तो इन दोनो की बराबरी कोई अन्य बल्लेबाज नहीं कर पाया है। विराट और रोहित ने कई बड़े स्कोर आईसीसी के नॉकआउट मुकाबलों में बनाये हैं। रोहित ने दो जबकि विराट कोहली ने एक शतक इस दौरान लगाया है। विराट ने तीन जबकि रोहित ने दो अर्धशतक लगाये हैं। विराट के आईसीसी नॉकआउट मैचों में रनों की संख्या 939 है और रोहित शर्मा ने 780 रन बनाए हैं। कोई भारतीय खिलाड़ी इन दोनो के करीब भी नहीं हैं। नॉकआउट मैचों में सबसे ज्यादा रन बनाने के मामले में सचिन तेंदुलकर तीसरे भारतीय खिलाड़ी हैं। वहीं आईसीसी नॉकआउट मैचों में सर्वाधिक रन बनाने के मामले में विराट 939 और रोहित 780 रनों के बाद तीसरे नंबर पर ऑस्ट्रेलिया के पूर्व कप्तान रिकी पोंटिंग हैं। उन्होंने 731 रन बनाए हैं, जबकि चौथे नंबर पर सचिन तेंदुलकर ने 657 रन बनाए हैं। श्रीलंका के पूर्व कप्तान कुमार संगकारा ने 595 रन आईसीसी के नॉकआउट मैचों में लगाये हैं। विराट कोहली के नाम एक वर्ल्ड कप में सबसे ज्यादा रन बनाने का रिकॉर्ड दर्ज है, जबकि रोहित शर्मा ने एक वर्ल्ड कप में 5 शतक जड़ने का विश्व रिकॉर्ड बनाया हुआ है।

दलीप ट्रॉफी में आकाश दीप की जगह मुख्तार हुसैन शामिल

मुम्बई । भारतीय क्रिकेट टीम के तेज गेंदबाज आकाश दीप फिट नहीं होने के कारण इसी माह 28 अगस्त से शुरु होने जा रहे दलीप ट्रॉफी क्रिकेट टूर्नामेंट में नहीं खेलेंगे। ऐसे में आकाशदीप की जगह पर मुख्तार हुसैन को शामिल किया गया है। आकाश दीप घरेलू क्रिकेट में बंगाल की ओर से खेलते हैं। वह हाल ही में हुए इंग्लैंड दौरे में चोटिल हो गये थे और अभी तक फिट नहीं हुए हैं। आकाश दीप ने इंग्लैंड में भारत की ओर से तीन टेस्ट में 13 विकेट लिए हैं। उन्हें पूर्वी क्षेत्र की टीम में शामिल किया गया था पर अब

उनकी जगह पर असम के तेज गेंदबाज मुख्तार को टीम में जगह मिली है। मुख्तार ने अब तक 40 प्रथम श्रेणी मैचों में 132 विकेट लिए हैं। साथ ही 61 पारियों में मुख्तार ने 580 रन भी बनाए हैं। मुख्तार 140 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से गेंदबाजी करते हैं। वह असम से खेलते हैं। मुख्तार हुसैन असम के लिए तीनों प्रारुपों में खेलते हैं। आकाश के नहीं होने से अनुभवी तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी गेंदबाजी आक्रमण की कमान संभालेंगे। वहीं तेज गेंदबाज मुकेश कुमार उनका साथ देंगे। वहीं एक रिपोर्ट में कहा गया है कि आकाश दीप ने पूरी तरह से फिट नहीं होने के कारण दलीप ट्रॉफी से बाहर होने का फैसला लिया है। आकाश दीप ने भारतीय टीम की ओर से इंग्लैंड के खिलाफ 23 फरवरी, 2024 को रांची में टेस्ट डेब्यू किया था। उन्होंने पहली पारी में तीन विकेट लिए थे. उन्होंने अब तक कुल 10 टेस्ट मैच खेले हैं और 28 बल्लेबाजों को आउट किया है। उनके 28 विकेटों में से 10 अकेले एंडरसन-तेंदुलकर ट्रॉफी के दूसरे टेस्ट में आए। इसमें उन्होंने पहली पारी में 4 विकेट और दूसरी पारी में छह विकेट लिए।

दलीप ट्रॉफी 2025 के लिए पूर्वी क्षेत्र की टीम- ईशान किशन (कप्तान), अभिमन्यु ईश्वरन (उपकप्तान), संदीप पटनायक, विराट सिंह, डेनिश दास, श्रीराम पॉल, शरनदीप सिंह, कुमार कुशाग्र, रियान पराग, उत्कर्ष सिंह, मनीषी, सूरज सिंधु जायसवाल, मुकेश कुमार, मुख्तार हुसैन, मोहम्मद शमी।

स्टैंडबाय- आशीर्वाद स्वैन, वैभव सूर्यवंशी, स्वस्तिक समल, सुदीप के घरामी, और राहुल सिंह।

ओलंपिक हॉकी कांस्य पदक विजेता और खेल जगत के दिग्गज वेस पेस का निधन

नई दिल्ली (एजेंसी)। कोलकाता = म्यूनिख में 1972 में खेले गए ओलंपिक खेलों के कांस्य पदक विजेता भारतीय हॉकी टीम के सदस्य और दिग्गज टेनिस खिलाड़ी लिएंडर पेस के पिता डॉ. वेस पेस का उम्र संबंधी बीमारियों के कारण गुरुवार सुबह यहां निधन हो गया। वह 80 वर्ष के थे। वेस पेस पार्किंसन रोग से पीड़ित थे। उन्हें मंगलवार सुबह यहां वुडलैंड्स अस्पताल में भर्ती कराया गया था।

वेस पेस का अंतिम संस्कार सोमवार या मंगलवार को किया जाएगा, क्योंकि परिवार उनकी बेटियों के आने का इंतजार करेगा, जो दोनों विदेश में बस गई हैं। वेस पेस का विवाह जेनिफर से हुआ था। वह भारतीय बास्केटबॉल खिलाड़ी थीं और राष्ट्रीय टीम की कप्तान भी रह चुकी थीं। बहुमुखी प्रतिभा के धनी वेस पेस विभिन्न भूमिकाओं में लंबे समय तक भारतीय खेलों से जुड़े रहे। वह भारतीय हॉकी टीम में मिडफील्डर थे। उन्होंने फुटबॉल, क्रिकेट और रग्बी जैसे कई खेल भी खेले और 1996 से 2002 तक भारतीय रग्बी फुटबॉल संघ के अध्यक्ष भी रहे।

अप्रैल 1945 में गोवा में जन्मे पेस खेल और शिक्षा दोनों में असाधारण थे और हॉकी में सफल होने के बाद वे खेल चिकित्सा के चिकित्सक बन गए। उन्होंने एशियाई क्रिकेट परिषद, भारतीय क्रिकेट बोर्ड और भारतीय डेविस कप टीम सहित कई खेल निकायों के साथ सलाहकार के रूप में काम किया। वेस पेस उस भारतीय हॉकी टीम के भी सदस्य थे जिसने 1971 में बार्सिलोना में विश्व कप में कांस्य पदक जीता था, लेकिन उसके एक साल बाद मिला ओलंपिक पदक उनके करियर का सबसे महत्वपूर्ण पल था।

ओलंपिक खेल 1972 को फिलिस्तीन के एक उग्रवादी समूह द्वारा 11 इजरायली खिलाड़ियों की हत्या के लिए भी दुखद रूप से याद किया जाता है, जिसके कारण इस खेल को चार दिनों के लिए बंद करना पड़ा था। हॉकी करियर को अलविदा कहने के बाद वेस पेस एक दशक तक भारतीय डेविस कप टीम के टीम डॉक्टर और लिएंडर पेस के मैनेजर भी रहे। लिएंडर पेस ने अपने पिता के कहने पर ही टेनिस में कदम रखा था।

लिएंडर ने भारतीय खेलों को नई ऊंचाइयों पर पहुंचाया और 18 ग्रैंड स्लैम खिताब जीतकर देश के इतिहास में सबसे सफल टेनिस खिलाड़ी बने। लिएंडर के 18 ग्रैंड स्लैम खिताब में आठ पुरुष युगल और 10 मिश्रित युगल खिताब शामिल हैं। लिएंडर ने 1996 के अटलांटा ओलंपिक में पुरुष एकल का कांस्य पदक भी जीता। इस प्रकार उन्होंने हर चार साल में होने वाले इन खेलों में पदक जीतने की पारिवारिक परंपरा को जीवित रखा।

लिएंडर अंतरराष्ट्रीय टेनिस हॉल ऑफ फेम में शामिल होने वाले पहले एशियाई पुरुष टेनिस खिलाड़ी भी हैं। हॉकी इंडिया के अध्यक्ष और पूर्व डिफेंडर दिलीप टिर्की ने कहा कि पेस सीनियर के निधन से देश में खेल का एक युग समाप्त हो गया है। उन्होंने कहा, 'हॉकी इंडिया के लिए यह एक दुखद दिन है। डॉ. पेस के निधन से हॉकी के एक युग का अंत हो गया है। म्यूनिख में जीता गया ओलंपिक पदक उनके

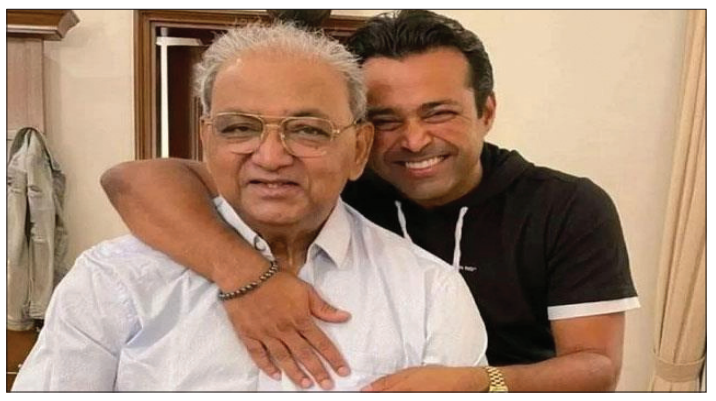

धैर्य और दृढ़ संकल्प का प्रमाण है।'

टिर्की ने कहा, 'मुझे उनसे कई बार मिलने का सौभाग्य मिला और मैं हमेशा खेलों के प्रति उनके जुनून से प्रेरित रहा। वे देश में खेल संस्कृति को बढ़ावा देने के प्रबल समर्थक थे। हॉकी इंडिया की तरफ से हम उनकी पत्नी जेनिफर, बेटे लिएंडर और उनके पूरे परिवार के प्रति अपनी गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं। हम इस दुःखद घड़ी में उनके साथ हैं।'

वेस पेस 70 और 80 के दशक में कोलकाता की फुटबॉल दिग्गज मोहन बागान और मोहम्मडन स्पोर्टिंग की हॉकी टीमों के लिए भी खेले। उन्होंने ईस्ट बंगाल के तत्कालीन कोच सुभाष भौमिक के आग्रह पर ईस्ट बंगाल फुटबॉल टीम और बाईचुंग भूटिया जैसे खिलाड़ियों के साथ भी काम किया।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

हनुवंतिया को कहते है मध्य प्रदेश का मिनी गोवा

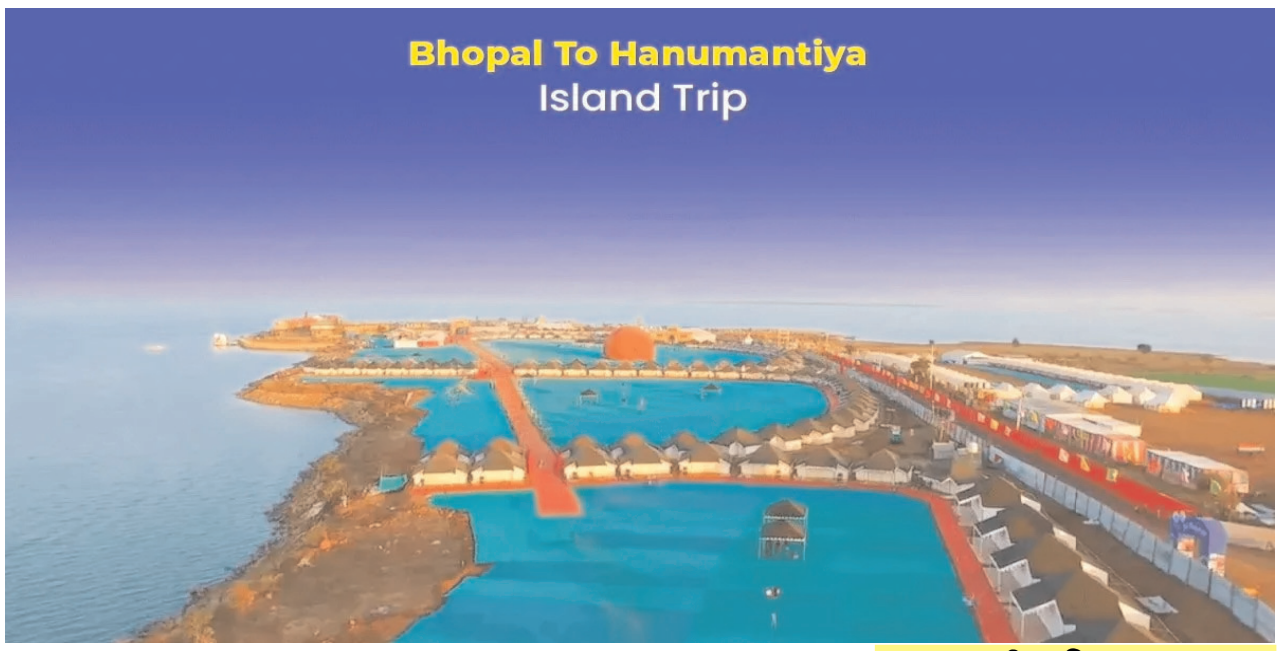

मध्य प्रदेश में भोपाल से लेकर इंदौर तक, ग्वालियर, मांडू, ओरछा और जबलपुर जैसी कई ऐतिहासिक जगहें हैं, जिनके बारे में लगभग हर कोई जानता है। वहीं मध्य प्रदेश में हनुवंतिया एक ऐसी जगह है, जहां पर आप बीच का लुत्फ उठा सकते हैं।

मध्य प्रदेश का गठन साल 1956 में हुआ था। यह देश के सबसे बड़े राज्यों में शामिल एक खूबसूरत और प्रमुख राज्य भी है। देश के मध्य में स्थित मध्य प्रदेश में कई ऐसी खूबसूरत और शानदार जगहें मौजूद हैं, जहां पर सिर्फ देशी ही नहीं बल्कि विदेशी पर्यटक भी घूमने के लिए पहुंचते रहते हैं। मध्य प्रदेश में भोपाल से लेकर इंदौर तक, ग्वालियर, मांडू, ओरछा और जबलपुर जैसी कई ऐतिहासिक जगहें हैं, जिनके बारे में लगभग हर कोई जानता है। वहीं मध्य प्रदेश में हनुवंतिया एक ऐसी जगह है, जहां पर आप बीच का लुत्फ उठा सकते हैं। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको हनुवंतिया की खूबसूरती और इसकी खासियत के बारे में बताने जा रहे हैं।

हनुवंतिया

मध्य प्रदेश के खंडवा जिले में इंदिरा सागर बांध के पास हनुवंतिया स्थित है। यह खंडवा शहर से करीब 45 किमी दूरी पर मौजूद है।

मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल से हनुवंतिया करीब 233 किलोमीटर दूर है। वहीं इंदौर से करीब 138 किमी, देवास से करीब 195 किमी और उज्जैन से 197 किमी दूर है।

इस जगह की खासियत

बता दें कि इंदिरा सागर बांध के बैकवाटर में स्थित हनुवंतिया मध्य प्रदेश की एक मनमोहक जगह है। हनुवंतिया को कई लोग आइलैंड या हनुवंतिया टापू के नाम से भी जानते हैं। इस जगह की खूबसूरती इस कदर प्रचलित है कि लोग इसको एमपी का मिनी गोवा भी कहते हैं।

यह जगह अपनी प्राकृतिक सुंदरता के साथ एक फेमस पर्यटन स्थल माना जाता है। यहां पर गर्मियों में भारी संख्या में पर्यटक घूमने के लिए पहुंचते हैं। हनुवंतिया टापू नीले रंग के पानी और खूबसूरती के कारण गोवा की याद दिलाता है। वहीं मानसून में हनुवंतिया की खूबसूरती अपने चरम पर होती है।

सैलानियों के लिए क्यों है खास

गर्मियों में हनुवंतिया को मध्य प्रदेश को एक परफेक्ट पॉइंट माना जाता है। खासकर वीकेंड में भारी संख्या में पर्यटक घूमने और पिकनिक मनाने के लिए पहुंचते हैं।

हनुवंतिया का शांत और शुद्ध वातावरण पर्यटकों को खूब आकर्षित करता है। यह जगह अपनी खूबसूरती के अलावा एडवेंचर एक्टिविटी के लिए जाना जात है। यहां पर कई लोग सिर्फ एडवेंचर एक्टिविटी करने के लिए पहुंचते हैं।

वॉटर स्पोर्ट्स के लिए है फेमस

बता दें कि हनुवंतिया बीच मध्य प्रदेश में सबसे ज्यादा वाटर एक्टिविटी के लिए जाना जाता है। यहां पर कई सैलानी सिर्फ मोटरबोटिंग, गोताखोरी, जेट स्कीइंग, सर्फिंग और जोरबिंग के अलावा हॉट एयर बैलूनिंग और पैरा एक्टिविटीज जैसी शानदार और मजेदार एक्टिविटी के लिए पहुंचते हैं।

हर साल हनुवंतिया आइलैंड में जल महोत्सव का आयोजन किया जाता है। इस महोत्सव में शामिल होने के लिए हर साल हजारों की संख्या में पर्यटक शामिल होते हैं।

आसपास घूमने की जगहें

बता दें कि हनुवंतिया के आसपास कई शानदार और खूबसूरत जगहें मौजूद हैं। जिनको आप ट्रिप के दौरान एक्सप्लोर कर सकते हैं। जैसे इंदिरा सागर बांध, घंटाघर, गौरी कुंज, नागचून बांध खंडवा, तुलजा भवानी माता मंदिर को एक्सप्लोर कर सकते हैं।

बारिश के मौसम का मजा लेना है तो महाराष्ट्र की इन जगहों पर जरूर जाएं

परिवार या दोस्तों के साथ घूमना किसे पसंद नहीं होता? कई लोग ट्रिप पर जाने में ज्यादा दिलचस्पी दिखाते हैं. खासकर अपने पार्टनर या गर्लफ्रेंड के साथ ट्रिप पर जाना कई लोगों को काफी खुशी देता है. इसलिए ज्यादातर लोग अपनी गर्लफ्रेंड के साथ मस्ती करने के लिए खूबसूरत जगहों पर जाना पसंद करते हैं. अगर आप अपने पार्टनर के साथ रोमांटिक पल बिताना चाहते हैं तो आज हम आपके लिए कुछ ऐसी जगहों की जानकारी लेकर आए हैं जो जुलाई में कपल्स के घूमने के लिए बेस्ट जगह हैं. खबर के जरिए जानते हैं कि मानसून में अपने पार्टनर के साथ घूमने के लिए कौन सी जगहें बेस्ट हैं.

लोनावाला

मानसून के मौसम में लोनावाला घूमने के लिए एक बेहतरीन जगह है। इस जगह की खूबसूरती और प्रकृति का अनोखा नजारा हर किसी को अपनी ओर आकर्षित करता है. खासकर अगर प्रेमी जोड़े और नवविवाहित जोड़े यहां जाएं तो उन्हें बहुत मजा आएगा. क्योंकि यहां का भूशी डैम, टाइगर प्वाइंट, हरी-भरी पहाड़ियां, प्रकृति और खूबसूरत फूलों के बगीचे हर किसी को अपनी ओर आकर्षित करते हैं. इसलिए यह जगह प्रेमी जोड़ों, नवविवाहितों और जोड़ों के लिए सबसे अच्छा पर्यटन स्थल माना जाता है.

मुलशी

अगर आप अपने पार्टनर के साथ मानसून के मौसम का मजा लेना चाहते हैं तो पुणे के पास मुलशी घूमने के लिए एक बेहतरीन जगह है. क्योंकि यहां का इलाका बेहद खूबसूरत है. अपनी प्राकृतिक खूबसूरती और प्रकृति के लिए मशहूर यह जगह पर्यटकों को खूब आकर्षित करती है. खास तौर पर धुंध भरी पहाड़ियां और मुलशी डैम देखने लायक बेहद खूबसूरत जगह हैं.

माथेरान हिल स्टेशन

माथेरान हिल स्टेशन अपने प्रेमी के साथ हाथ में हाथ डालकर घूमने के लिए सबसे अच्छी जगह है. यह सबसे खूबसूरत जगहों में से एक है.मुंबई और पुणे के पास स्थित यह बेहद खूबसूरत हिल स्टेशन अपनी हरी-भरी पहाड़ियों के साथ बेहद खूबसूरत नजारा देता है. ऐसी प्राकृतिक खूबसूरती के बीच अपने साथी के साथ हाथ में हाथ डालकर घूमना आपके बीच प्यार को और बढ़ा देगा. इसलिए माथेरान लवर्स के लिए एक बेहतरीन टूरिस्ट स्पॉट है.

हरिश्चंद्रगढ़

खूबसूरत कॉफी बागानों में अपने प्रियतम के साथ गपशप करने के लिए यह एक बेहतरीन जगह है. मानसून के मौसम में घूमने के लिए यह सबसे अच्छी जगह है. जो लोग ट्रैकिंग करना चाहते हैं, वे इस जगह पर जा सकते हैं, बर्फीले पहाड़ों, कॉफी बागानों, हरे-भरे पेड़ों, रिमझिम बारिश के बीच कोंकण तट की खूबसूरती को निहार सकते हैं. आप अपने साथी के साथ खुशी के पल बिता सकते हैं। इसलिए, मानसून के मौसम में घूमने के लिए हरिश्चंद्रगढ़ सबसे अच्छी जगह है.

लवासा

वरसगांव झील के किनारे स्थित लवासा में अनगिनत वाटर स्पोर्ट्स हैं. महाराष्ट्र में स्थित यह शहर इतालवी शहर पोर्टोफिनो की तर्ज पर बना है. यह अपनी प्राकृतिक सुंदरता, सुव्यवस्थित बुनियादी ढांचे और मनोरंजक गतिविधियों के लिए जाना जाता है. यह जगह कपल्स के लिए बेहद रोमांचक हो सकती है.

शिशु के सीने में जमा हो गया है कफ! ये 7 उपाय दिलाएंगे आराम

बदलते मौसम, प्रदूषण, बीमारियां और अनहेल्दी लाइफस्टाइल अक्सर सीने में कंजेशन (बलगम जमा होना) की समस्या पैदा कर सकते हैं। खासकर शिशुओं में यह समस्या बहुत आम है। सर्दी-जुकाम और छाती में बलगम जमना अक्सर बदलते मौसम या संक्रमण के कारण होता है। शिशुओं की इम्यूनिटी पावर (प्रतिरक्षा क्षमता) बड़ों की तुलना में बहुत कमजोर होती है क्योंकि उनका शरीर पूरी तरह विकसित नहीं होता। इसलिए वे मौसम में बदलाव या हल्के संक्रमण के कारण जल्दी प्रभावित हो जाते हैं।

शिशुओं में छाती में बलगम जमने की समस्या क्यों होती है?

शिशुओं की छाती में बलगम जमने से वे सांस लेने में परेशानी, बेचैनी, भूख में कमी, चिड़चिड़ापन और नींद न आने जैसी परेशानियां महसूस करते हैं। अपनी नन्ही जान को तकलीफ में देखकर माता-पिता भी बहुत चिंतित हो जाते हैं। अगर शिशु की छाती में जमा बलगम समय पर साफ न किया जाए तो इससे फेफड़ों में संक्रमण या अन्य स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं। इसलिए शिशुओं की देखभाल करते समय इस समस्या को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए।

शिशु के छाती में जमा कफ कैसे निकालें?

कूल-मिस्ट ह्यूमिडिफायर का इस्तेमाल करें : यह हवा में नमी बढ़ाता है, जिससे शिशु की सांस की नली और छाती में जमा बलगम पतला होकर आसानी से बाहर निकल जाता है।

नम हवा का सेवन कराएं : नम हवा सांस की नली में मौजूद सूजन और जलन को कम करती है, जिससे कंजेशन की समस्या कम होती है।

खांसी को बढ़ावा दें : कई बार खांसी होने से बलगम निकलने में मदद मिलती है। खांसी आने पर बच्चे की मदद करें ताकि बलगम बाहर आ सके।

स्टीम बाथ या भाप दें : बच्चे को गर्म पानी की भाप देना या स्टीम बाथ देना भी बलगम को बाहर निकालने में सहायक होता है।

मालिश करें : शिशु के माथे, कनपटी, नाक और सिर के निचले हिस्से पर हल्का गर्म तेल लगाकर मालिश करें। इससे नासिका मार्ग खुलता है और बलगम हटाने में आसानी होती है।

ऑर्गेनिक चेस्ट रब का इस्तेमाल करें : शिशु के सीने पर ऑर्गेनिक चेस्ट रब लगाने से सांस की नली खुलती है और बलगम कम होता है।

पीठ थपथपाना : बच्चे की पीठ को धीरे-धीरे थपथपाने से भी छाती में जमा बलगम ढीला होकर बाहर निकल सकता है।

ये भी पढ़े : बच्चों के ब्रेन डेवलपमेंट के लिए 5 बेस्ट नाश्ते, पेरेंट्स करें जरूर ट्राई

शिशु की छाती में कफ जमने के मुख्य कारण

वायरल संक्रमण : शिशुओं को अक्सर वायरल संक्रमण होता है, जिससे सर्दी-जुकाम होता है और बलगम जमा हो जाता है।

प्रदूषण और धूल : वातावरण में मौजूद धूल और प्रदूषक शिशुओं की नाजुक सांस की नली को प्रभावित कर सकते हैं, जिससे बलगम बनता है।

एलर्जी : धूल, पालतू जानवरों के बाल या अन्य एलर्जी पैदा करने वाले कारण भी शिशुओं में कफ बनने की संभावना बढ़ा सकते हैं।

गंभीर बीमारियाँ : कभी-कभी ब्रोंकाइटिस या फेफड़ों का संक्रमण भी बलगम जमने का कारण बन सकता है।

गलत दूध पिलाने की स्थिति : शिशु को दूध देते समय गलत पोश्चर होने पर दूध सांस की नली में जा सकता है, जिससे बलगम जमा हो सकता है।

शिशु की देखभाल और सावधानियां

शिशु के सीने में बलगम जमने से बचाने के लिए उनकी स्थिति पर ध्यान रखें। यदि कंजेशन की समस्या लगातार बनी रहती है या बढ़ जाती है, तो तुरंत डॉक्टर से संपर्क करें। उचित समय पर इलाज न मिलने पर यह समस्या गंभीर हो सकती है और शिशु के स्वास्थ्य पर बुरा असर डाल सकती है।

अगर आप अपने नन्हे बच्चे को स्वस्थ और खुश रखना चाहते हैं तो इन बातों का ध्यान रखें और किसी भी असुविधा में देर न करें। शिशु की छाती में जमा कफ निकालना मुश्किल जरूर हो सकता है, लेकिन सही उपाय अपनाने से आप अपने बच्चे को राहत जरूर दिला सकते हैं।

साहसिक गतिविधियों और सांस्कृतिक धरोहरों के लिए प्रसिद्ध हैं कुल्लू और मनाली

कुल्लू को 卐देवताओं की घाटी卐 के नाम से जाना जाता है। यहाँ का वातावरण शांत, प्राकृतिक और आध्यात्मिक ऊर्जा से भरपूर होता है। कुल्लू अपने मंदिरों, उत्सवों और हस्तशिल्प के लिए प्रसिद्ध है। व्यास नदी के किनारे बसे ये स्थान हर साल लाखों पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं।

कुल्लू और मनाली, हिमाचल प्रदेश के दो अत्यंत लोकप्रिय पर्वतीय स्थल हैं, जो प्राकृतिक सौंदर्य, साहसिक गतिविधियों और सांस्कृतिक धरोहरों के लिए प्रसिद्ध हैं। व्यास नदी के किनारे बसे ये स्थान हर साल लाखों पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। बर्फ से ढकी चोटियाँ, हरे-भरे जंगल, सुंदर घाटियाँ और शांत वातावरण इन स्थलों को किसी स्वर्ग से कम नहीं बनाते।

कुल्लू - देवताओं की घाटी

कुल्लू को 卐देवताओं की घाटी卐 के नाम से जाना जाता है। यहाँ का वातावरण शांत, प्राकृतिक और आध्यात्मिक ऊर्जा से भरपूर होता है। कुल्लू अपने मंदिरों, उत्सवों और हस्तशिल्प के लिए प्रसिद्ध है।

प्रमुख आकर्षण :

रघुनाथ मंदिर- यह कुल्लू का सबसे प्रसिद्ध मंदिर है, जिसे भगवान राम को समर्पित किया गया है।

कुल्लू दशहरा- यहाँ का दशहरा उत्सव विश्व प्रसिद्ध है, जिसमें हजारों लोग भाग लेते हैं और अलग-अलग देवताओं की झांकियाँ निकाली जाती हैं।

बिजली महादेव मंदिर- एक पहाड़ी की चोटी पर स्थित यह मंदिर प्राकृतिक सौंदर्य और धार्मिक भावना का संगम है।

मनाली- साहसिक यात्रियों का स्वर्ग

कुल्लू से लगभग 40 किलोमीटर दूर स्थित मनाली एक खूबसूरत हिल स्टेशन है, जो विशेष रूप से नवविवाहित जोड़ों, ट्रेकिंग और स्कीइंग के शौकीनों के बीच लोकप्रिय है।

प्रमुख आकर्षण :

हिडिम्बा देवी मंदिर- यह मंदिर अद्वितीय वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध है और पांडवों की पत्नी हिडिम्बा को समर्पित है।

सोलंग वैली- स्कीइंग, पैराग्लाइडिंग, जिपलाइनिंग और स्नोबोर्डिंग जैसी गतिविधियों के लिए आदर्श स्थान।

रोहतांग पास- यह ऊँचाई पर स्थित दर्रा साल के अधिकतर हिस्सों में बर्फ से ढका रहता है और हिमाचल का सबसे आकर्षक स्थान माना जाता है।

वशिष्ठ कुंड- यहाँ के गर्म पानी के स्रोत प्राकृतिक औषधीय गुणों के लिए प्रसिद्ध हैं।

कुल्लू-मनाली में करने योग्य गतिविधियाँ

रिवर राफ्टिंग (ब्यास नदी में)

ट्रेकिंग (हामटा पास, बीजली महादेव, भृगु झील ट्रेक)

कैंपिंग और बोनफायर

लोक-संगीत और नृत्य का आनंद

हस्तशिल्प, ऊनी कपड़े और लकड़ी के सामान की खरीदारी

यात्रा की उत्तम अवधि

मार्च से जून के बीच का समय गर्मियों की छुट्टियों के लिए सबसे अच्छा है, जबकि दिसंबर से फरवरी तक बर्फबारी और विंटर स्पोर्ट्स का आनंद लिया जा सकता है। मानसून के समय (जुलाई-अगस्त) यात्रा से बचना बेहतर होता है।

कैसे पहुँचे?

हवाई मार्ग : निकटतम हवाई अड्डा भुंतर (कुल्लू) है, जो मनाली से लगभग 50 किमी दूर है।

सड़क मार्ग : दिल्ली, चंडीगढ़ और शिमला से नियमित बस और टैक्सी सेवा उपलब्ध है।

रेल मार्ग : नजदीकी रेलवे स्टेशन जोगिंदरनगर है, हालांकि चंडीगढ़ से सड़क मार्ग अधिक सुविधाजनक है।

कुल्लू-मनाली केवल एक पर्यटन स्थल नहीं, बल्कि एक अनुभव है- प्रकृति, रोमांच, आध्यात्मिकता और संस्कृति का अनोखा संगम। चाहे आप सुकून भरे पल बिताना चाहें या साहसिक गतिविधियों का लुत्फ उठाना, यह स्थल हर तरह से आपको संतुष्टि प्रदान करेगा।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

कृष्ण पूर्णतया निर्विकारी हैं। तभी तो उनके अंगों के साथ भी लोग 'कमल' शब्द जोड़ते हैं, जैसे- कमलनयन, कमलमुख, करकमल आदि। उनका स्वरूप चैतन्य है। कृष्ण ने तो द्रोपदी का चीर बढ़ाकर उसे अपमानित होने से बचाया था। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का दिन बड़ा ही पवित्र है। जैनियों के भावी तीर्थंकर और वैदिक परंपरा के नारायण श्रीकृष्ण के अवतरण का दिन है।

सोलह कलाओं के अवतार हैं

श्रीकृष्ण

भगवान श्रीकृष्ण को सोलह कलाओं का अवतार माना जाता है। सच में कृष्ण ने समाज के छोटे से छोटे व्यक्ति का सम्मान बढ़ाया, जो जिस भाव से सहायता की कामना लेकर कृष्ण के पास आया, उन्होंने उसी रूप में उसकी इच्छा पूरी की। अपने कार्यों से उन्होंने लोगों का इतना विश्वास जीत लिया कि आज भी लोग उन्हें 'भगवान श्रीकृष्ण' के रूप में ही मानते और पूजते हैं।

कृष्ण पूर्णतया निर्विकारी हैं। तभी तो उनके अंगों के साथ भी लोग 'कमल' शब्द जोड़ते हैं, जैसे- कमलनयन, कमलमुख, करकमल आदि। उनका स्वरूप चैतन्य है। कृष्ण ने तो द्रोपदी का चीर बढ़ाकर उसे अपमानित होने से बचाया था। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का दिन बड़ा ही पवित्र है। जैनियों के भावी तीर्थंकर और वैदिक परंपरा के नारायण श्रीकृष्ण के अवतरण का दिन है। कृष्ण ने सारी दुनिया को कर्मयोग का पाठ पढ़ाया। उन्होंने प्राणीमात्र को यह संदेश दिया कि केवल कर्म करना आदमी का अधिकार है। फल की इच्छा रखना उसका अधिकार नहीं। इंसान सुख और दुख दोनों में भगवान का स्मरण करता है। श्रीकृष्ण का जीवन भी उतार-चढ़ाव से भरा रहा है। उनके जीवन को हम तीन भागों में विभक्त करें तो वे जेल में पैदा हुए, महल में जिए और जंगल से विदा हुए। जेल में पैदा होना बुरी बात नहीं है, जेल में जीना और मरना अपराध हुआ करता है। आदमी जन्म से नहीं कर्म से महान बनता है। भगवान श्रीकृष्ण, मर्यादा पुरुषोत्तम राम और भगवान महावीर आदि महापुरुषों ने हमें जीवन जीने की सीख दी है। राम, कृष्ण एवं महावीर का जीवन अलग-अलग मर्यादाओं और संदेशों पर आधारित है। राम ने जीवन भर मर्यादाएं नहीं तोड़ीं, वे देव बनकर जिए। श्रीकृष्ण वाकपुटता में जीवन जीते रहे। मर्यादाओं से नीरस हुए जीवन को कृष्ण ने रस और आनंद से भर दिया, लेकिन महावीर ने परम विश्राम और समाधि का सूत्र दिया। उन्होंने मौन साधना सिखाई। मित्रता सीखनी हो तो कृष्ण से सीखो वे सबको अपने समान चाहते थे। उनकी दृष्टि में अमीर-गरीब का कोई भेद नहीं था। अतः हमें भी कृष्ण की इसी सीख को अपने जीवन में अपनाना चाहिए।

व्रत-पूजन कैसे करें

उपवास की पूर्व रात्रि को हल्का भोजन करें और ब्रह्मचर्य का पालन करें।

उपवास के दिन प्रातःकाल स्नानादि नित्य कर्मों से निवृत्त हो जाएं।

तत्पश्चात सूर्य, सोम, यम, काल, संधि, भूत, पवन, दिक्पति, भूमि, आकाश, खेचर, अमर और ब्रह्मादि को नमस्कार कर पूर्व या उत्तर मुख बैठें।

इसके बाद जल, फल, कुश और गंध लेकर संकल्प करें

ममखिलपापप्रशमनपूर्वक सर्वाभीष्ट सिद्धये श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रतमहं करिष्ये॥

अब मध्याह्न के समय काले तिलों के जल से स्नान कर देवकीजी के लिए सूतिकागृह नियत करें।

तत्पश्चात भगवान श्रीकृष्ण की मूर्ति या चित्र स्थापित करें।

मूर्ति में बालक श्रीकृष्ण को स्तनपान कराती हुई देवकी हों और लक्ष्मीजी उनके चरण स्पर्श किए हों अथवा ऐसे भाव हो।

इसके बाद विधि-विधान से पूजन करें

पूजन में देवकी, वसुदेव, बलदेव, नंद, यशोदा और लक्ष्मी इन सबका नाम क्रमशः निर्दिष्ट करना चाहिए।

फिर इस मंत्र से पुष्पांजलि अर्पण करें-

प्रणमे देव जननी त्वया जातस्तु वामनः।
वसुदेवात तथा कृष्णो नमस्तुभ्यं नमो नमः।
सुपुत्रार्घ्यं प्रदत्तं में गृहाणेमं नमोऽस्तुते।

अंत में प्रसाद वितरण कर भजन-कीर्तन करते हुए रतजगा करें।

श्रीकृष्ण बना रहे

मालामाल

जन्माष्टमी पर इन्हीं पोशाकों को धारण कर ठाकुरजी अपने अनन्य भक्तों को दर्शन देकर निहाल करेंगे। ब्रज के लाला के जन्मोत्सव की तैयारियां हिंदू ही नहीं, यहां का मुस्लिम समाज भी कर रहा है। ठाकुरजी को पहनाई जाने वाली पोशाकें और मुकुट शृंगार को तैयार करने में मुस्लिम समाज के कारीगर दिन रात एक करने लगे हैं।

भगवान श्रीकृष्ण दीन दयाल कहलाते हैं। जो भी इनकी शरण में आ जाता है, उसे धनवान बना देते हैं। श्रीकृष्ण की कृपा से हिंदू हमेशा से धनवान होते रहे हैं, लेकिन श्रीकृष्ण की लीलास्थली में मुसलमान भी श्रीकृष्ण की कृपा से निहाल हो रहे हैं और श्रीकृष्ण उन्हें मालामाल बना रहे हैं।

ऐसे कृपा बरस रही है कृष्ण की

वृंदावन के मुसलमानों को श्रीकृष्ण इसलिए मालामाल बन रहे हैं कि यहां के मुसलमान हिंदुओं की आस्था के केंद्र ठाकुर जी के लिए पूरी निष्ठा के साथ एक से बढ़कर एक शानदार पोशाकें, मुकुट शृंगार तैयार कर रहे हैं।

जन्माष्टमी पर इन्हीं पोशाकों को धारण कर ठाकुरजी अपने अनन्य भक्तों को दर्शन देकर निहाल करेंगे। ब्रज के लाला के जन्मोत्सव की तैयारियां हिंदू ही नहीं, यहां का मुस्लिम समाज भी कर रहा है। ठाकुरजी को पहनाई जाने वाली पोशाकें और मुकुट शृंगार को तैयार करने में मुस्लिम समाज के कारीगर दिन रात एक करने लगे हैं। कई परिवार वर्षों से ठाकुरजी की पोशाक और मुकुट शृंगार को मूर्त रूप प्रदान करते आए हैं। यह हमारी जीविका का साधन भी है। सैकड़ों मुस्लिम परिवारों का पालन ठाकुरजी की पोशाक और शृंगार के निर्माण से चल रहा है।

विदेशों में भी इनके कपड़े पहनते हैं श्रीकृष्ण

वृंदावन के मुस्लिम समाज द्वारा बनाई गई पोशाक गुजरात के अहमदाबाद स्थित अक्षरधाम के राधा-कृष्ण के श्री विग्रह और दिल्ली एवं पंजाबी बाग के इस्कान मंदिर के श्री विग्रह धारण करेंगे। वृंदावन में बनाई जाने वाली पोशाकों की मांग इंग्लैंड, दक्षिण अफ्रीका, अमेरिका, कनाडा, आस्ट्रेलिया के भारतीय मूल के लोगों के अलावा विदेशी भी अधिक पसंद करते हैं। वे वृंदावन से खरीदकर अपने अपने देश ले जाते हैं।

राधा और कृष्ण का आपस में

कैसा नाता

भगवान श्रीकृष्ण और राधा रानी के बारे में यह माना जाता है कि इन दोनों के बीच प्रेम संबंध था, जबकि असलियत यह है कि कृष्ण और राधा के बीच प्रेम से बढ़कर भी एक नाता था। यह नाता है पति-पत्नी का, लेकिन इस रिश्ते के बारे में सिर्फ तीन लोगों को पता था- एक तो कृष्ण, दूसरी राधा रानी और तीसरे ब्रह्मा जी, जिन्होंने कृष्ण और राधा का विवाह करवाया था, लेकिन इन तीनों में आपके कोई भी इस बात की गवाही देने नहीं आएगा, लेकिन जिस स्थान पर इन दोनों का विवाह हुआ था, वहां के वृक्ष आज भी राधा-कृष्ण के प्रेम और मिलन की गवाही देते हैं।

तब राधा-कृष्ण का विवाह संपन्न हुआ

गर्ग संहिता के अनुसार, मथुरा के पास स्थित भांडीर वन में भगवान श्रीकृष्ण और देवी राधा का विवाह हुआ था। इस संदर्भ में कथा है कि एक बार नंदराय जी बालक श्रीकृष्ण को लेकर भांडीर वन से गुजर रहे थे। उसी समय अचानक देवी राधा प्रकट हुई। देवी राधा के दर्शन पाकर नंदराय जी ने श्रीकृष्ण को राधा जी की गोद में दे दिया। श्रीकृष्ण बाल रूप त्याग कर किशोर बन गए। तभी ब्रह्मा जी भी वहां उपस्थित हुए। ब्रह्मा जी ने कृष्ण का विवाह राधा से करवा दिया। कुछ समय तक कृष्ण राधा के संग इसी वन में रहे। फिर देवी राधा ने कृष्ण को उनके बाल रूप में नंदराय जी को सौंप दिया।

राधा जी की मांग में सिंदूर

भांडीर वन में राधाजी और भगवान श्रीकृष्ण का मंदिर बना हुआ है। इस मंदिर में स्थित विग्रह अपने आप अनोखा है, क्योंकि यह अकेला ऐसा विग्रह है, जिसमें श्रीकृष्ण भगवान राधाजी की मांग में सिंदूर भरते हुए दृश्य हैं।

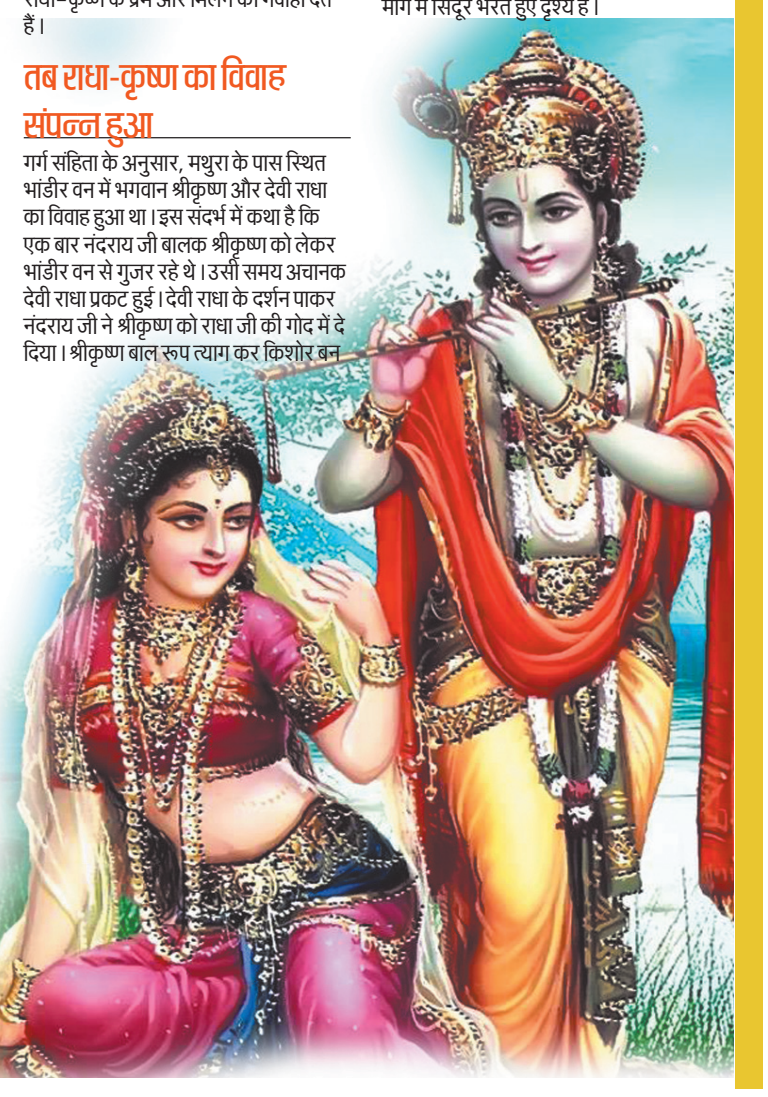

भगवान श्रीकृष्ण के उपदेश

गीता के माध्यम से भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को अनासक्त कर्म यानी 'फल की इच्छा किए बिना कर्म' करने की प्रेरणा दी। इसका प्रमाण उन्होंने अपने निजी जीवन में भी प्रस्तुत किया। मथुरा विजय के बाद भी उन्होंने वहां शासन नहीं किया।

कला से प्रेम करो : संगीत और कलाओं का हमारे जीवन में विशिष्ट स्थान है। भगवान ने मोरपंख और बांसुरी धारण करके कला, संस्कृति एवं पर्यावरण के प्रति अपने लगाव को दर्शाया। इनके जरिए उन्होंने संदेश दिया कि जीवन को सुंदर बनाने में संगीत और कला का भी महत्वपूर्ण योगदान है।

निर्बल का साथ दो : कमजोर एवं निर्बल का सहारा बनो। निर्धन बाल सखा सुदामा हो या षड्यंत्र का शिकार पांडव, श्रीकृष्ण ने सदा निर्बलों का साथ दिया और उन्हें मुसीबत से उबारा।

अन्याय का प्रतिकार करो : अन्याय का सदा विरोध होना चाहिए। श्रीकृष्ण की शांतिप्रियता कायर की नहीं, बल्कि एक वीर की थी। उन्होंने अन्याय कभी स्वीकार नहीं किया। शांतिप्रिय होने के बावजूद शत्रु अगर गलत है तो उसके शमन में पीछे नहीं हटें।

मातृशक्ति के प्रति आदर भाव रखें : महिलाओं के प्रति सम्मान और उन्हें साथ लेकर चलने का भाव हो। भगवान कृष्ण की रासलीला दरअसल मातृशक्ति को अन्याय के प्रति जागृत करने का प्रयास था और इसमें राधा उनकी संदेशवाहक बनीं।

अपने अहंकार को छोड़ो : व्यक्तिगत जीवन में हमेशा सहज एवं सरल बने रहो। जिस तरह शक्ति संपन्न होने पर भी श्रीकृष्ण को न तो युधिष्ठिर का दूत बनने में संकोच हुआ और न ही अर्जुन का सारथी बनने में। एक बार तो दुर्योधन के छप्पन व्यंजन को छोड़कर विदुरानी (विदुर की पत्नी) के घर उन्होंने सादा भोजन करना पसंद किया।

जीवन में उदारता रखें : उदारता व्यक्तित्व को संपूर्ण बनाती है। श्रीकृष्ण ने जहां तक हो सका मित्रता, सहयोग सामंजस्य आदि के बल पर ही परिस्थितियों को सुधारने का प्रयास किया, लेकिन जहां जरूरत पड़ी, वहां सुदर्शन चक्र उठाने में भी उन्होंने संकोच नहीं किया। वहीं अपने निर्धन सखा सुदामा का अंत तक साथ निभाया और उनके चरण तक पखारें।

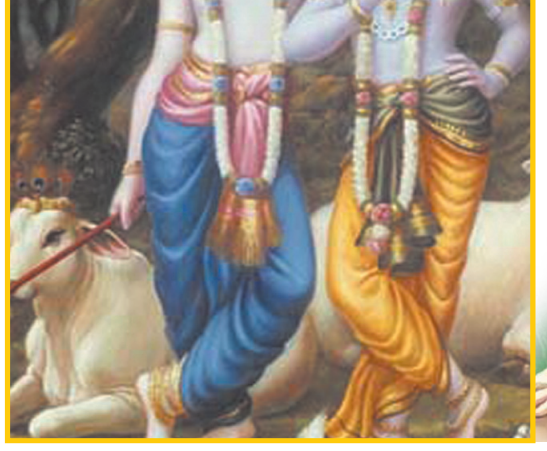

कविताएं

चन्दन की खुशबू, फूलों का हार

चन्दन की खुशबू, फूलों का हार,
दही की हांडी, बारीश की फुहार,
माखन चुराने आया नंदलाल,
यशोमती मैया का नंदगोपाल !

राधा की भक्ति, मुरली की मिठास,
माखन का स्वाद और गोपियों का रास,
इन्ही सबसे मिलकर बनता है,
जन्माष्टमी का ये दिन ख़ास !

मुरली मनोहर, ब्रिज के धरोहर,
मुरली की मधुर आवाज़, झूम उठे ये बहार,
कृष्ण जिनका नाम, गोकुल जिनका धाम,
श्री कृष्ण भगवान को हम सबका प्रणाम !

कान्हा

द्वापर में भादों के महीने में
काली अंधेरी रात में
जन्म लिया कान्हा ने
मथुरा में कारागार के कक्ष में।
था दिवस चमत्कारी
सारे बंधन टूट गए
द्वार के ताले स्वत : खुले
जाने का मार्ग प्रशस्त हुआ।
बेटे को बचाने के लिए
गोकुल जाने के लिए
वासुदेव ने जैसे ही
जल में पैर धरा
जमुना की श्रद्धा ऐसी जागी
बाढ़ आ गई नदिया में।
बाहर पैर आते ही
कान्हा के पैरों को पखारा
जैसें ही छू पाया उन्हें
अद्भुत शांति छाई जल में।
सारा गोकुल धन्य हो गया
कान्हा को पा बाहों में
गोपिया खो गईं
मुरली की मधुर धुन में।
बंधीं प्रेम पाश में उसके
रम कर रह गईं उसी में
ज्ञान उद्धव का धरा रह गया
उनको समझाने में।
वे नहीं जानती थीं उद्देश्य
कृष्ण के जाने का
कंस के अत्याचारों से
सब को बचाने का ।
अंत कंस का हुआ
सुखी समृद्ध राज्य हुआ
कौरव पांडव विवाद में
मध्यस्थ बने सहायता की ।
सच्चाई का साथ दिया
युद्ध से विचलित अर्जुन को
गीता का उपदेश दिया
आज भी है महत्व जिसका।
जन्म दिन कान्हा का
हर साल मनाते हैं
श्रद्धा से भर उठाते हैं
जन्माष्टमी मनाते हैं ।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

संक्षिप्त समाचार

चेक गणराज्य के राष्ट्रपति से चीन ने खत्म किए रिश्ते

बीजिंग, एजेंसी। चीन ने मंगलवार को चेक गणराज्य के राष्ट्रपति पेट्र पावेल के साथ सभी संबंध समाप्त करने की घोषणा की है। चीन ने यह फैसला राष्ट्रपति पावेल के दलाई लामा से मिलने के बाद लिया है। मुलाकात से बिलबिलाए चीनी विदेश मंत्रालय ने इस मुलाकात पर गहरा खेद और कड़ा विरोध जताते हुए चेक गणराज्य के सामने एक आधिकारिक विरोध भी दर्ज कराया है। चीन के मंत्रालय ने कहा कि पावेल ने चीन के बार-बार के विरोध और आपत्ति को नजरअंदाज करते हुए भारत में दलाई लामा से मुलाकात की। यह मुलाकात चीन की संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता को गंभीर रूप से नुकसान पहुंचाती है और यह राजनीतिक प्रतिबद्धता का उल्लंघन है। पेट्र पावेल ने 27 जुलाई को लद्दाख में दलाई लामा से मुलाकात की थी।

चीन के सरकारी व सैन्य सुरक्षा कार्यों में एनविडिया चिप के इस्तेमाल पर रोक

बीजिंग, एजेंसी। चीनी अधिकारियों ने स्थानीय कंपनियों से एनविडिया के एच-20 चिप का इस्तेमाल सरकारी व सुरक्षा कार्यों के लिए नहीं करने की अपील की है। एनविडिया ने कहा कि एच-20 सेना या सरकार के प्रयोग में आने वाला उत्पाद नहीं है। बयान के अनुसार, चीन के पास अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए घरेलू चिप्स की पर्याप्त आपूर्ति है। वह सरकारी कार्यों के लिए अमेरिकी चिप्स पर निर्भर नहीं रहेगा और न ही कभी रहा है। ठीक उसी तरह जैसे अमेरिकी सरकार चीन से आने वाले चिप्स पर निर्भर नहीं रहेगी। बता दें कि अमेरिका ने पिछले ही महीने चीन को एच-20 चिप बेचने पर लगा प्रतिबंध हटाया था।

पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना की पैरवी को लेकर वरिष्ठ वकील की याचिका अदालत से खारिज

ढाका, एजेंसी। बांग्लादेश की एक विशेष अदालत ने मंगलवार को वरिष्ठ वकील जेडआई खान पन्ना की याचिका को खारिज कर दिया। उन्होंने पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना की ओर से पैरवी करने की अनुमति मांगी थी। हसीना पर मानवता के खिलाफ अपराध के आरोप में अनुपस्थित रहते हुए मुकदमा चल रहा है। देश के अंतरराष्ट्रीय अपराध न्यायाधिकरण (आईसीटी-बीडी) के अध्यक्ष गुलाम मुर्तजा मजूमदार ने कहा, राज्य ने शेख हसीना के लिए एक वकील नियुक्त कर दिया है, यह मामला खत्म हो चुका है। उन्होंने कहा कि यह तय करना न्यायाधिकरण का काम है कि कौन वकील नियुक्त होगा।

ट्रंप से मुलाकात से पहले पुतिन ने उत्तर कोरियाई नेता से की बात

मास्को, एजेंसी। उत्तर कोरियाई नेता किम जोंग उन और रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के बीच फोन पर बात हुई। दोनों नेताओं की यह बातचीत ऐसे समय हुई, जब पुतिन 15 अगस्त को अलास्का में अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप से मिलने वाले हैं। दोनों नेताओं के बीच यूक्रेन युद्ध पर बात होगी। पुतिन और किम के बीच हुई बातचीत में दोनों देशों के संबंधों को मजबूत करने पर चर्चा हुई। कोरिया के सरकारी मीडिया के अनुसार, बातचीत में पुतिन ने उत्तर कोरियाई सैनिकों की बहादुरी और आत्म बलिदान की भावना की जमकर तारीफ की। गौरतलब है कि उत्तर कोरिया के कई सैनिकों ने रूस की तरफ से यूक्रेन युद्ध में लड़ाई लड़ी। बातचीत में पुतिन ने उत्तर कोरियाई नेता के साथ ट्रंप के साथ होने वाली बैठक को लेकर भी जानकारी साझा की। किम ने पुतिन से कहा कि प्योंगयांग भविष्य में भी रूसी नेतृत्व द्वारा उठाए जाने वाले सभी कदमों का पूरा समर्थन करेगा। उन्होंने पिछले साल शिखर सम्मेलन के दौरान हुई रणनीतिक साझेदारी के तहत सभी क्षेत्रों में संबंधों को आगे बढ़ाने पर भी चर्चा की।

भारत और पाकिस्तान दोनों के साथ संबंधों में कोई बदलाव नहीं हुआ है-टैमी ब्रूस

वाशिंगटन, एजेंसी। पाकिस्तानी सेना प्रमुख जनरल आसिम मुनीर के हालिया अमेरिका दौरे के दौरान दिए गए परमाणु युद्ध के धमकी भरे बयान के बाद अमेरिकी विदेश मंत्रालय ने स्पष्ट किया है कि उसका भारत और पाकिस्तान दोनों के साथ संबंधों में कोई बदलाव नहीं हुआ है। विदेश मंत्रालय की प्रवक्ता टैमी ब्रूस ने कहा कि अमेरिकी कूटनीतिक दल दोनों देशों के प्रति समान रूप से प्रतिबद्ध है।

जनरल मुनीर बीते दो महीनों में दूसरी बार अमेरिका पहुंचे थे। उसने वॉशिंगटन से बयान देते हुए भारत पर परमाणु हमला करने और आधी दुनिया को तबाह करने की धमकी दी थी। यह माना जा रहा है कि यह पहली बार है जब किसी तीसरे देश को अमेरिकी धरती से परमाणु हमले की खुली चेतावनी दी गई है। ब्रूस ने इस मौके पर राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के उस दावे को भी दोहराया, जिसमें उन्होंने हालिया भारत-पाकिस्तान सैन्य संघर्ष के बाद अमेरिका की सुलह में भूमिका को बहुत गर्व का पल बताया था। ब्रूस ने कहा, हमने तुरंत उपराष्ट्रपति जेडी वेंस, राष्ट्रपति ट्रंप और विदेश मंत्री मार्को रुबियो के साथ मिलकर हमलों को रोकने और दोनों पक्षों को साथ लाने का काम किया। यह हमारे लिए गर्व का क्षण है।इस दौरान उनसे पूछा गया कि क्या ट्रंप और मुनीर की मुलाकात के बाद अमेरिका पाकिस्तान को अधिक सैन्य मदद और हथियार बिक्री करेगा। इस सवाल के जवाब में ब्रूस ने कहा, हमारा भारत और पाकिस्तान दोनों के साथ संबंध अच्छे हैं और अपरिवर्तित रहेंगे। हमारे राजनयिक दोनों देशों के प्रति प्रतिबद्ध हैं। ब्रूस ने मंगलवार को इस्लामाबाद में हुई अमेरिका-पाकिस्तान काउंटर-टेररिज्म डायलॉग का उल्लेख करते हुए बताया कि दोनों देशों ने हर प्रकार के आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में साझा प्रतिबद्धता दोहराई है।

जापान की आबादी में लगातार गिरावट

2024 में आबादी में 9 लाख से ज्यादा की गिरावट आ गई

टोक्यो, एजेंसी। दुनिया के ऐसे कई देश हैं, जहां आबादी का संकट गहरा रहा है। इनमें भारत का मित्र देश जापान प्रमुख है, जहां आबादी लगातार 16वें साल गिरी है। 2024 में जापान की आबादी में 9 लाख से ज्यादा की गिरावट आ गई। इसका अर्थ हुआ कि देश में पैदा होने वाले लोगों से कहीं ज्यादा संख्या मरने वालों की है। यदि ऐसी ही स्थिति जारी रही तो जापान आने वाले कुछ सालों में अस्तित्व के संकट से जूझ रहा होगा। जापान को स्वस्थ लोगों और दीर्घायु जीवन के लिए जाता है। लेकिन लगातार युवा आबादी कम होना और बुजुर्गों की संख्या में इजाफा होना वहां के स्वास्थ्य ढांचे पर भी बोझ बढ़ा रहा है।

ऐसे हालात को जापान के पीएम शिगेरू इशिबा ने साइलेंट इमरजेंसी करार दिया है। उनका कहना है कि देश में इंसानों की आबादी का संकट गहरा रहा है। उन्होंने कहा कि हम फैमिली फ्रेंडली पॉलिसीज पर और फोकस करेंगे, जैसे फ्री चाइल्डकेयर और वर्किंग आवर्स के मामले में लचीला रुख अपनाया जाएगा। अब भी जापान में ऐसी कई नीतियां हैं, लेकिन महिलाएं ज्यादा बच्चे पैदा करने के लिए राजी नहीं हैं। यही नहीं जापान में महिलाओं की ऐसी बड़ी संख्या है, जिन्होंने एक भी बच्चे को जन्म नहीं दिया है और ना ही देना चाहती हैं।

जापान में फिलहाल जन्मदर 1.2 है। डराने वाला आंकड़ा यह है कि वर्ष 2024 में जापान में सिर्फ 6,86,061 बच्चों का ही जन्म हुआ तो वहीं 1.6 मिलियन लोगों की मौत हो गई। इस तरह पैदा होने वालों की तुलना में 10 लाख ज्यादा लोगों की मौत हो गई। सीधे-सीधे कहें तो एक बच्चा पैदा हुआ तो दो लोग मर गए। फिलहाल जापान की आबादी 12 करोड़ है और यदि इसी तरह संख्या में कमी आती रही तो देश में मानव संसाधन का ही संकट पैदा हो जाएगा। इससे अर्थव्यवस्था से लेकर सामान्य मानवीय जीवन तक कठिन होगा। जापान में बीते 125 सालों के इतिहास में 2024 में सबसे कम बच्चे पैदा हुए हैं।

इसके अलावा यह लगातार 16वां साल है, जब जापान की आबादी में इतनी बड़ी गिरावट आई है। यह स्थिति तब है, जबकि जापान में बड़ी संख्या में विदेशी बस गए हैं। 1 जनवरी, 2025 के डेटा के अनुसार जापान की कुल आबादी में 3 फीसदी हिस्सेदारी बाहरी लोगों की है। बीते एक साल के अंदर ही जापान की कुल आबादी में 0.44 फीसदी की कमी आई है।

साउथ कोरिया की पूर्व फर्स्ट लेडी भ्रष्टाचार केस में गिरफ्तार

सियोल, एजेंसी। साउथ कोरिया की पूर्व फर्स्ट लेडी किम की-हुई को मंगलवार (12 अगस्त) को भ्रष्टाचार के आरोपों में गिरफ्तार कर लिया गया। अदालत में करीब पांच घंटे की सुनवाई के बाद कोर्ट ने उनकी गिरफ्तारी का वारंट जारी किया। अभियोजन पक्ष का कहना है कि किम ने भ्रष्टाचार मामले की जांच में हस्तक्षेप किया। उन पर स्टॉक फ्रॉड, रिश्वत लेने और गैरकानूनी दबाव डालने जैसे गंभीर आरोप हैं।

गिरफ्तारी के बाद अब किम अपने पति और पूर्व राष्ट्रपति यून सुक-योल के साथ जेल में होंगी। योल मार्शल लॉ लगाने के मामले में मुकदमे का सामना कर रहे हैं।किम एक पशु अधिकार कार्यकर्ता के रूप में भी जानी जाती हैं और उन्होंने अपने पति के राष्ट्रपति कार्यकाल में देश में कुत्ते के मांस की खपत खत्म करने का वादा किया था। मई 2024 में उन्हें पैरोल मिली थी। 2022 में स्पेन में हुए नाटो समिट में उनकी मौजूदगी के बाद उन्हें अंतरराष्ट्रीय मीडिया ने फैशन आइकन कहा था।

किम और यून की शादी 2012 में हुई थी। उनके कोई बच्चे नहीं हैं, लेकिन उनके पास करीब छह कुत्ते और पांच बिल्लियां हैं। 2022 में यून के राष्ट्रपति चुने जाने के बाद किम ने खुद को फर्स्ट लेडी के बजाय राष्ट्रपति की पत्नी' कहलाना पसंद किया था। किम जब स्कूल में थीं तब उनके पिता का निधन हो गया था। उनकी मां, चोई यूं-सन, पर बिना मेडिकल लाइसेंस के वृद्धाश्रम चलाने का आरोप लगा था, जिसमें वह बरी हो गईं, लेकिन एक रियल एस्टेट धोखाधड़ी मामले में उन्हें सजा हुई।

पहली बार ऐसा : विश्लेषकों का कहना है कि यह घटना दक्षिण कोरिया की राजनीति में भ्रष्टाचार विरोधी सख्ती का संकेत है। साउथ कोरिया में पहले भी कई पूर्व राष्ट्रपतियों पर मुकदमे हुए हैं, लेकिन पति-पत्नी दोनों का एक साथ सलाखों के पीछे जाना इतिहास में पहली बार है। यह देश की राजनीतिक संस्कृति, न्यायपालिका की स्वतंत्रता और सत्ता में बैठे लोगों की जवाबदेही पर गंभीर बहस छेड़ सकता है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर यह मामला खासा सुर्खियां बटोर रहा है, क्योंकि साउथ कोरिया की छवि एक सख्त लोकतांत्रिक और पारदर्शी देश की रही है। वहीं, विपक्ष इसे सरकार का प्रतिशोध बता रहा है।

इससे पहले भी राष्ट्रपति गिए जेल : 2004 - रोह मू-ह्यून राष्ट्रपति रहते हुए महाभियोग का सामना किया। हालांकि बाद में बहाल हो गए। बाद में 2009 में भ्रष्टाचार के आरोपों की जांच के बीच उन्होंने आत्महत्या कर ली।

2008 - ली म्युंग-बाक को 2018 में रिश्वतखोरी और गबन के आरोप में 15 साल की सजा सुनाई गई। 2022 में स्वास्थ्य आधार पर अस्थायी रिहाई मिली।

2017-पार्क ग्युन-हे को भ्रष्टाचार और सत्ता के दुरुपयोग के मामले में 25 साल की सजा। 2021 में राष्ट्रपति माफी के तहत रिहाई मिली।

2023 - मून जे-इन पर कार्यकाल खत्म होने के बाद भाई पर भ्रष्टाचार के आरोप लगे, लेकिन खुद जांच से बचे।

मैक्सिको ने 26 ड्रग कार्टेल सरगनाओं को किया अमेरिका के हवाले; ट्रंप प्रशासन के भारी दबाव के बाद कार्रवाई

न्यूयॉर्क, एजेंसी। मैक्सिको ने एक बड़े सुरक्षा अभियान के तहत 26 कुख्यात ड्रग कार्टेल सरगना और अपराधियों को अमेरिका को सौंप दिया है। यह कदम ट्रंप प्रशासन के साथ हुए समझौते के तहत उठाया गया है। इन सभी पर मादक पदार्थों की तस्करी, हत्या और अन्य गंभीर अपराधों के आरोप हैं।

सूत्रों के मुताबिक, अमेरिका को सौंपे गए लोगों में अबीगेल गोंजालेज वेलेंसिया भी शामिल हैं, जो लॉस कुइनिस गैंग के नेता हैं। यह गैंग मैक्सिको के सबसे खतरनाक कार्टेल, जलिस्को न्यू जेनरेशन कार्टेल (सीजेएनजी) से जुड़ा हुआ है। एक अन्य आरोपी रोबर्टो सालाजार पर 2008 में लॉस एंजेलिस काउंटी के एक शेरिफ डिप्टी की हत्या का आरोप है। अमेरिकी न्याय विभाग ने आश्वासन दिया है कि इन मामलों में मृत्युदंड की मांग नहीं की जाएगी।

यह पहली बार नहीं है जब मैक्सिको ने इतने बड़े स्तर पर कार्टेल सरगना सौंपे हैं। इसी साल फरवरी में भी मैक्सिको ने 29 अपराधियों को अमेरिका को सौंपा था, जिनमें कुख्यात ड्रग माफिया राफेल कारो क्विंटेरो भी शामिल था। उस समय यह कार्रवाई ट्रंप प्रशासन के दबाव में हुई थी, जब मैक्सिकन आयात पर 25% टैरिफ लागू होने वाला था। हाल ही में ट्रंप और मैक्सिकन राष्ट्रपति क्लाउडिया शीनबाम के बीच हुई बातचीत के बाद 30% टैरिफ को 90 दिनों के लिए टाल दिया गया।

मैक्सिको का रुख : यह पहली बार नहीं है जब मैक्सिको ने इतने बड़े स्तर पर कार्टेल सरगना सौंपे हैं। इसी साल फरवरी में भी मैक्सिको ने 29 अपराधियों को अमेरिका को सौंपा था, जिनमें कुख्यात ड्रग माफिया राफेल कारो क्विंटेरो भी शामिल था। उस समय यह कार्रवाई ट्रंप प्रशासन के दबाव में हुई थी, जब मैक्सिकन आयात पर 25% टैरिफ लागू होने वाला था।

लॉस एंजिलिस में बुजुर्ग सिख व्यक्ति को बेरहमी से पीटा, पुलिस ने घृणा अपराध मानने से किया इनकार

लॉस एंजिलिस, एजेंसी। अमेरिका के लॉस एंजेलिस में एक बुजुर्ग सिख व्यक्ति को बेरहमी से पीटने का मामला सामने आया है। हमले में बुजुर्ग के सिर में फ्रैक्चर और संभावित मस्तिष्क आघात हुआ है। अधिकारियों ने बताया कि हमले के संदिग्ध आरोपी को गिरफ्तार कर लिया गया है। पुलिस ने बताया कि घटना 4 अगस्त की है, जब 70 वर्षीय बुजुर्ग हरपाल सिंह लॉस एंजिलिस में सिख गुरुद्वारे के पास सैर कर रहे थे। उसी दौरान एक रिचर्ड विटाग्लियानो नामक व्यक्ति ने हरपाल सिंह पर हमला कर दिया। रिचर्ड बेघर है।

घृणा अपराध न मानने पर लोगों में नाराजगी : लॉस एंजिलिस पुलिस ने मंगलवार को बताया कि 44 वर्षीय विटाग्लियानो को हरपाल सिंह पर निर्मम हमले के लिए सोमवार को गिरफ्तार किया गया। विटाग्लियानो पर घातक हथियार से हमला करने का मामला दर्ज किया गया है और उसकी जमानत 11 लाख अमेरिकी डॉलर तय की गई है। वहीं सिख अधिकार समूह द सिख कोलिशन ने कहा कि सिंह पर हुए क्रूर हमले के लिए संदिग्ध हिरासत में है, लेकिन पुलिस इस मामले की घृणा अपराध के रूप में जांच नहीं कर रही है। संगठन और समुदाय के कई लोगों ने इसे घृणा अपराध न मानने पर नाराजगी जताई। हमले के दौरान हरपाल सिंह को बहुत गंभीर चोटें आई हैं और उनकी हालत गंभीर बनी हुई है।

संपत्ति का विवाद बताया जा रहा : पुलिस ने बताया कि हरपाल सिंह और विटाग्लियानो के बीच मारपीट हुई थी।

प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि उन्होंने यह नहीं देखा कि मारपीट कैसे शुरू हुई। विटाग्लियानो, सिंह पर हमला कर रहा था और जब लोगों ने हस्तक्षेप किया तो आरोपी मौके से फरार हो गया। इसके बाद हरपाल सिंह को तुरंत अस्पताल पहुंचाया गया। फिलहाल सिंह अस्पताल में ही भर्ती हैं। विटाग्लियानो पर नशीले पदार्थों, घातक हथियार से हमले और विभिन्न हथियारों से जुड़े आरोपों का एक लंबा आपराधिक रिकॉर्ड है। इस मामले में मिले सबूतों के आधार पर, पुलिस का मानना है कि यह हमला नफरत से प्रेरित अपराध नहीं था, बल्कि पीड़ित और आरोपी के बीच संपत्ति को लेकर हुए विवाद था।

वेनेजुएलाई राष्ट्रपति की ट्रम्प को चुनौती, गिरफ्तार करके दिखाओ

कहा- मैं इंतजार कर रहा, देर मत करना, अमेरिका ने 50 मिलियन डॉलर का इनाम रखा

कारकस, एजेंसी। वेनेजुएला के राष्ट्रपति निकोलस मादुरो ने अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प को उन्हें गिरफ्तार करने की चुनौती दी है। मादुरो ने सोमवार को एक भाषण में कहा- मुझे गिरफ्तार करने आओ, मैं यही मिराफ्लोरेस (राष्ट्रपति भवन) में तुम्हारा इंतजार करूंगा। देर मत करना कायरों। अमेरिका ने मादुरो पर 7 जुलाई को 50 मिलियन डॉलर यानी करीब 420 करोड़ रुपए का इनाम रखा था। अमेरिका ने मादुरो से जुड़े 700 मिलियन डॉलर से अधिक की संपत्ति जब्त की है। इसमें दो प्राइवेट जेट भी शामिल हैं।

ट्रम्प प्रशासन का आरोप है कि मादुरो ड्रग तस्कर हैं और ड्रग कार्टेल के साथ मिलकर अमेरिका में फेंटानिल मिला कोकीन भेज रहे हैं। अमेरिकी अधिकारियों का कहना है कि मादुरो को पास 7 टन कोकीन है, जिसे वे अमेरिका भेजने की तैयारी कर रहे हैं।

मादुरो बोले- अमेरिका को करारा जवाब मिलेगा : निकोलस मादुरो ने राजधानी कारकस में राजनीतिक नेताओं और सेना प्रमुखों की मौजूदगी में अमेरिका को ऐसा न करने की चेतावनी दी। उन्होंने अमेरिकी नेताओं से कहा कि वे ऐसा करने की कोशिश भी न करें क्योंकि तब उन्हें ऐसा जवाब मिलेगा जिससे अमेरिकी साम्राज्य का अंत भी हो सकता है। सेना प्रमुख डोमिंगो हर्नांडेज लारेज ने मादुरो का समर्थन करते हुए कहा कि सेना उनके साथ हैं। उन्होंने कहा, अमेरिका हॉलीवुड की किसी वेस्टर्न फिल्म की तरह हमारे राष्ट्रपति के लिए इनाम का ऐलान करता है, यह हमारे लिए अपमानजनक है। वहीं, वेनेजुएला के विदेश मंत्री इवान गिल ने भी मादुरो पर दोगुना इनाम लगाने के फैसले पर नाराजगी जताई। उन्होंने इसे राजनीतिक दुष्प्रचार अभियान करार दिया।

मदुरो पर 2020 में नार्को टेररिज्म के आरोप लगे थे : मदुरो पर 2020 में मैनहैटन की संघीय अदालत में नार्को-टेररिज्म और कोकीन तस्करी की साजिश के आरोप तय किए गए थे। उस समय ट्रम्प प्रशासन ने उनकी गिरफ्तारी पर 1.5 करोड़ डॉलर का इनाम रखा था। इसे बाद में बाइडेन प्रशासन ने बढ़ाकर 2.5 करोड़ डॉलर कर दिया। इतना इनाम अमेरिका ने 9/11 हमलों के बाद ओसामा बिन लादेन की गिरफ्तारी पर रखा था। मदुरो 2013 से वेनेजुएला की सत्ता में बने हुए हैं। अमेरिका, यूरोपीय यूनियन और लैटिन अमेरिकी देश उन पर चुनावों में धोखाधड़ी का आरोप लगाते रहे हैं। 2024 में हुए राष्ट्रपति चुनाव में इन देशों ने मदुरो पर धांधली का आरोप लगाया था।

कोलंबिया ने वेनेजुएला राष्ट्रपति का समर्थन किया : इस बीच कोलंबिया भी वेनेजुएला के समर्थन में आ गया है। कोलंबिया के राष्ट्रपति गुस्तावो पेट्रो ने चेतावनी दी है कि वेनेजुएला पर अमेरिकी हमला उनके देश पर हमला माना जाएगा।

सोशल मीडिया पर उन्होंने लिखा कि हालात चाहे जितने भी उथल-पुथल वाले हों, हम वेनेजुएला की संप्रभुता की रक्षा करेंगे। एक और संदेश में पेट्रो ने कहा कि कोलंबिया और वेनेजुएला एक ही लोग, एक ही झंडा और एक ही इतिहास साझा करते हैं। पेट्रो ने अमेरिका तथा वेनेजुएला दोनों से अपील की है कि वे राष्ट्रीय संप्रभुता से समझौता किए बिना मिलकर नशा तस्करी के खिलाफ कार्रवाई करें। उन्होंने कहा कि नशा तस्करी और पूंजीवाद का लालच खत्म होना चाहिए।

आयरलैंड के राष्ट्रपति हिगिंस ने भारतीयों पर हमलों की निंदा की

डबलिन/लंदन, एजेंसी। आयरलैंड के राष्ट्रपति माइकल डी हिगिंस ने मंगलवार को भारतीयों पर हुए घृणित हमलों की निंदा की। वहां भारतीयों के योगदान का भी जिक्र किया। हिगिंस ने कहा कि ये हमले आयरलैंड के मूल्यों के बिल्कुल विपरीत हैं। उनका यह बयान डबलिन और अन्य शहरों में भारतीयों पर हुए हिंसक हमलों के बाद आया है। हिगिंस ने कहा, भारत के लोगों को हम प्रिय मानते हैं।

आयरलैंड में किसी भी व्यक्ति, खासकर किसी युवा को छल-कपट या उकसावे के जरिये इस तरह के व्यवहार में घसीटने की कड़ी निंदा होनी चाहिए। चाहे ऐसा उकसावा अज्ञानता से उपजा या दुर्भावना से, इससे होने वाले नुकसान को स्वीकार करना जरूरी है। ऐसे कृत्य हमें कमजोर करते हैं। राष्ट्रपति हिगिंस ने इस बात पर प्रकाश डाला कि कैसे भारतीय चिकित्सा, नर्सिंग, देखभाल संबंधी व्यवसायों, सांस्कृतिक जीवन, व्यापार और उद्यम जैसे कुछ क्षेत्रों में योगदान देते हैं। उन्होंने कहा कि भारतीयों की उपस्थिति, कार्य, संस्कृति हमारे जीवन के लिए समृद्धि और उदारता का स्रोत रही है। राष्ट्रपति ने कहा, आयरलैंड के भारत के साथ संबंध न तो नए हैं और न ही सतही।

आयरिश राष्ट्रपति ने इस वर्ष की शुरुआत में भारतीय विदेश मंत्री एस जयशंकर के साथ अपनी मुलाकात का भी जिक्र किया, जहां उन्होंने साझा भारत-आयरिश इतिहास और स्वतंत्रता प्राप्ति के रास्तों के अनुभवों पर चर्चा की। हिगिंस ने कहा, आयरलैंड लंबे समय से बाहरी और आंतरिक दोनों तरह के प्रवासन से प्रभावित रहा है।

इजरायल की सेना ने फिलिस्तीनी कैदियों का किया यौन उत्पीड़न: यूएन

न्यूयॉर्क, एजेंसी। संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस ने इजरायल और रूस को सख्त चेतावनी दी है कि उनके सशस्त्र बल और सुरक्षा कर्मी युद्ध के क्षेत्रों में यौन हिंसा कर रहे हैं। दोनों देशों को आगाह करते हुए संयुक्त राष्ट्र महासचिव ने कहा है कि ऐसी हरकतों के लिए दोनों ही देशों को विश्वसनीय रूप से संदिग्ध पक्षों की लिस्ट में शामिल किया जा सकता है। युद्ध क्षेत्र में यौन हिंसा पर संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद को अपनी वार्षिक रिपोर्ट में गुटेरेस ने कहा कि इजरायल और रूस को अगले साल उस लिस्ट में शामिल किया जा सकता है जिन पर बलात्कार या अन्य प्रकार की यौन दुराचार और हिंसा करने या उसके लिए ज़िम्मेदार होने के विश्वसनीय संदेह है।

अल जज़ीरा की रिपोर्ट के अनुसार, इजरायल को अपनी चेतावनी में गुटेरेस ने कहा कि वह कई जेलों, एक हिरासत केंद्र और एक सैन्य अड्डे में फ़िलिस्तीनियों के ख़िलाफ़ इजरायली सशस्त्र और सुरक्षा बलों द्वारा उल्लंघनों की विश्वसनीय जानकारी को लेकर गंभीर रूप से चिंतित हैं। रिपोर्ट में कहा गया है कि गुटेरेस ने लिखा, संयुक्त राष्ट्र द्वारा दर्ज मामलों में यौन हिंसा के पैटर्न जैसे जननांगों पर चोट और हिंसा, लंबे समय तक जबरन नग्न करके रखना और बार-बार कपड़े उतरवाकर अपमानजनक तरीके से तलाशी लेने की बात सामने आई है।

यौन हिंसा रोकने के लिए तुरंत कदम उठाएं : यूएन चीफ ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि चूँकि इजरायल ने संयुक्त राष्ट्र के पर्यवेक्षकों को पहुँच देने से इनकार कर दिया है, इसलिए उसके बलों द्वारा यौन हिंसा के पैटर्न, ट्रेंड के बारे में निर्णय लेना चुनौतीपूर्ण रहा है। उन्होंने इजरायल सरकार से उसके सैनिकों द्वारा किए जा रहे यौन हिंसा के सभी कृत्यों को तत्काल रोकने के लिए आवश्यक कदम उठाने और समयबद्ध तरीके से लागू करने का आग्रह किया है। संयुक्त राष्ट्र प्रमुख ने कहा कि इनमें विश्वसनीय आरोपों की जाँच, सैन्य और सुरक्षा बलों के लिए यौन हिंसा को प्रतिबंधित करने वाले स्पष्ट आदेश और आचार संहिताएँ, और संयुक्त राष्ट्र पर्यवेक्षकों के लिए निर्बाध पहुँच शामिल होनी चाहिए।

यौन, प्रजनन और अन्य लिंग-आधारित हिंसा के आरोप : मार्च में संयुक्त राष्ट्र समर्थित मानवाधिकार विशेषज्ञों ने इजरायल पर यौन, प्रजनन और अन्य लिंग-आधारित हिंसा का आरोप लगाया था। अल जज़ीरा की रिपोर्ट के अनुसार, पूर्वी यरुशलम समेत अधिकृत फ़िलिस्तीनी क्षेत्र और इजरायल पर स्वतंत्र अंतर्राष्ट्रीय जाँच आयोग ने कहा कि उसने फ़िलिस्तीनी महिलाओं, पुरुषों, लड़कियों और लड़कों के ख़िलाफ़ किए गए कई उल्लंघनों का दस्तावेजीकरण किया है, और इज़रायली बलों पर फ़िलिस्तीनी बंदियों के ख़िलाफ़ बलात्कार और यौन हिंसा के आरोप लगाए हैं।

यूएन में इजरायली दूत ने आरोपों को किया खारिज : दूसरी तरफ, संयुक्त राष्ट्र में इज़रायल के राजदूत डैनी डैनन ने मंगलवार को यूएन महासचिव की चिंताओं को निराधार आरोप बताकर खारिज कर दिया। डैनन, जिन्होंने गुटेरेस से प्राप्त एक पत्र और संयुक्त राष्ट्र प्रमुख को दिए गए अपने जवाब को प्रसारित करते हुए कहा कि ये आरोप पक्षपातपूर्ण हैं।

इज़रायली राजदूत ने कहा, संयुक्त राष्ट्र को हमास के चौंकाने वाले युद्ध अपराधों और यौन हिंसा और सभी बंधकों की रिहाई पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। डैनन ने जोर देकर कहा कि इजरायल अपने नागरिकों की सुरक्षा करने से पीछे नहीं हटेगा और अंतर्राष्ट्रीय कानून के अनुसार कार्य करना जारी रखेगा।

रूसी सैनिकों के दुर्व्यवहार पर भी चिंता : रूस के मामले में, गुटेरेस ने लिखा कि वह रूसी सशस्त्र और सुरक्षा बलों और संबद्ध सशस्त्र समूहों द्वारा उल्लंघनों की विश्वसनीय जानकारी को लेकर, मुख्य रूप से यूक्रेन और रूस में 50 आधिकारिक और 22 अनौपचारिक हिरासत केंद्रों में यूक्रेनी युद्धबंदियों के ख़िलाफ़ गंभीर रूप से चिंतित हैं। उन्होंने कहा, इन मामलों में जननांग हिंसा की कई घटनाएँ शामिल थीं, जिनमें बिजली का झटका देना, जननांगों पर हमला, उसे जलाना, जबरन कपड़े उतरवाना और लंबे समय तक नग्न करके रखना शामिल है। न्यूयॉर्क स्थित संयुक्त राष्ट्र में रूसी मिशन ने रिपोर्ट पर टिप्पणी के अनुरोध का तुरंत जवाब नहीं दिया। गुटेरेस ने कहा कि रूसी अधिकारियों ने इस मामले पर उनके विशेष दूत से कोई बातचीत नहीं की है।

स्वामी,मुद्रक व् प्रकाशकः सुरेश मौर्या द्वारा अष्ठ विनायक ओफ़्सेट एफपी,149 प्लोट 26 खोडीयारनगर,सिद्धिविनायक मंदीर के पास ,भाटेना) हो.सो अंजना सुरत गुजरात से मुद्रित एवं 191 महादेव नगर उधना सुरत गुजरात से प्रकाशित संपादक : सुरेश मौया (M) 9879141480 RNI No.:GUJHIN/2018/75100 (Subject to Surat jurisdiction)

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

भारतीय वायुसेना के 4 अधिकारी 'सर्वोत्तम युद्ध सेवा पदक' से होंगे सम्मानित

नई दिल्ली (एजेंसी)। स्वतंत्रता दिवस से एक दिन पहले भारतीय वायुसेना के लिए गर्व का क्षण आया है। ऑपरेशन सिंदूर में अभूतपूर्व योगदान देने वाले वायुसेना के चार वरिष्ठ अधिकारियों को सरकार ने 'सर्वोत्तम युद्ध सेवा पदक' से सम्मानित करने का ऐलान किया है। यह पुरस्कार युद्धकालीन परिस्थितियों में दिए जाने वाले सर्वोच्च विशिष्ट सेवा सम्मानों में गिना जाता है। सम्मान पाने वालों में वाइस चीफ ऑफ एयर स्टाफ एयर मार्शल नरनादेश्वर तिवारी, वेस्टर्न एयर कमांडर एयर मार्शल जीतेंद्र मिश्रा और डीजी एयर ऑपरेशंस एयर मार्शल अवधेश भारती शामिल हैं। चौथे अधिकारी का नाम रक्षा मंत्रालय ने औपचारिक सूची में दर्ज किया है, उन्हें भी 15 अगस्त के अवसर पर यह पदक प्रदान किया जाएगा। गौरतलब है कि 'सर्वोत्तम युद्ध सेवा पदक' आखिरी बार कारगिल युद्ध (1999) के बाद भारतीय वायुसेना को दिया गया था। लगभग 25 वर्षों बाद इस सम्मान का मिलना वायुसेना की निर्णायक भूमिका और उसकी रणनीतिक क्षमताओं की पुनर्पुष्टि माना जा रहा है। रक्षा विशेषज्ञों का मानना है कि यह सम्मान न केवल व्यक्तिगत स्तर पर अधिकारियों के योगदान की सराहना है, बल्कि पूरी वायुसेना की सामरिक तैयारी और पेशेवर दक्षता का प्रतीक भी है। इस बार वायुसेना के चार अधिकारियों के साथ ही दो थलसेना अधिकारी और एक नौसेना अधिकारी को भी स्वतंत्रता दिवस समारोह में विशेष सैन्य सम्मान प्रदान किए जाएंगे। इन सभी को राष्ट्र की सुरक्षा और सैन्य अभियानों में अद्वितीय योगदान के लिए चुना गया है।

सरकारी बाइक पर स्टंट करते दिखे भाजपा विधायक आशीष देशमुख

नागपुर (एजेंसी)। नागपुर के सावनेर विधानसभा क्षेत्र से भाजपा विधायक आशीष देशमुख फिर सुर्खियों में हैं। इस बार वजह है 'हर घर तिरंगा यात्रा' के दौरान उनके द्वारा सरकारी बाइक पर किया गया स्टंट है। वायरल हो रहे वीडियो और तस्वीरों में देशमुख बिना हेलमेट के सरकारी विभाग की बाइक चलाते दिख रहे हैं। बात दें कि जिस समय आशीष यह स्टंट कर रहे थे, बाइक के पीछे एक सरकारी अधिकारी भी बैठे हुए थे। इससे न केवल ट्रैफिक नियमों का उल्लंघन हुआ बल्कि सुरक्षा मानकों की भी अनदेखी दिखाई दी। सरकारी बाइक और पुलिस अधिकारी की मौजूदगी में इस तरह की लापरवाही और नियमों का मज़ाक उड़ाना कई सवाल खड़े करता है। बताया जा रहा है कि घटना 'हर घर तिरंगा यात्रा' के दौरान हुई, जिसमें बड़ी संख्या में कार्यकर्ता और लोग शामिल थे। यात्रा के बीच में ही देशमुख ने बाइक को एक हाथ से चलाकर स्टंट दिखाया, जो लोगों का ध्यान खींचने में कामयाब रहा, लेकिन साथ ही आलोचना का कारण भी बन गया।

अतीक अहमद को मिट्टी में मिलाकर योगी जी ने न्याय दिलाया...सपा की बागी विधायक पूजा पाल ने कहा

लखनऊ (एजेंसी)। यूपी विधानसभा में 'विजन डॉक्यूमेंट 2047 को लेकर चर्चा जारी है। इस दौरान सदन में समाजवादी पार्टी की बागी विधायक पूजा पाल ने सीएम योगी को धन्यवाद को दिया। बागी विधायक पूजा पाल ने योगी सरकार की जीरो टॉलरेंस नीति की सराहना करते हुए बताया कि कैसे उन्हें न्याय दिलाया गया। पूजा पाल ने कहा कि मैं देती हूं कि अतीक अहमद को मिट्टी में मिलाकर करके योगी ने मुझे न्याय दिया। मुझे ही नहीं प्रयागराज के कई पीड़ितों को न्याय दिलाया। उन्होंने कहा कि सब जानते हैं कि मेरे पति राजू पाल की हत्या किसने की। मैं मुख्यमंत्री योगी का धन्यवाद देना चाहती हूं कि उन्होंने मुझे न्याय दिलाया और मेरी बात तब सुनी जब किसी ने नहीं सुनी। सीएम योगी ने प्रयागराज में ज़ीरो टॉलरेंस जैसी नीतियां लागू करके मुझ जैसी कई महिलाओं को न्याय दिलाया। बता दें कि पूजा के पति राजू पाल की हत्या अतीक के गुर्गों ने की थी। पूजा के पति राजू पाल की हत्या उनकी शादी के कुछ दिन बाद ही कर दी गई थी। दरअसल, हत्या के पीछे की वजह चुनावी रंजिश थी। राजू पाल ने अतीक अहमद के भाई अशरफ को चुनाव में हराया था। इसके बाद फरवरी 2023 में राजू हत्या के एक प्रमुख गवाह उमेश पाल की सुलेम सराय इलाके में गोली मारकर हत्या कर दी गई। उमेश और उनके गनरों पर कई राउंड फायरिंग और बम फेंके गए। अतीक और उनके भाई अशरफ अहमद मुख्य आरोपी थे और उन्हें पुलिस ने गिरफ्तार किया था। 15 अप्रैल, 2023 की रात को प्रयागराज में मेडिकल जाँच के लिए ले जाते समय, पत्रकारों के भेष में आए लोगों ने उनकी गोली मारकर हत्या कर दी।

शिल्पा शेट्टी और उनके पति राज कुंद्रा पर 60 करोड़ की ठगी का मामला दर्ज

मुंबई (एजेंसी)। बॉलीवुड एक्ट्रेस शिल्पा शेट्टी और उनके पति राज कुंद्रा पर मुंबई के एक कारोबारी ने 60 करोड़ की ठगी का मामला दर्ज कराया है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक यह मामला उनकी बंद हो चुकी कंपनी बेस्ट डील टीवी प्राइवेट लिमिटेड से जुड़ा है, जिसे शिल्पा और कुंद्रा ने बिजनेस बढ़ाने के नाम पर लिया और कथित तौर पर निजी खर्चों में इस्तेमाल किया। रिपोर्ट के मुताबिक शिकायतकर्ता का आरोप है कि 2015 से 2023 के बीच उन्होंने कपल को 60.48 करोड़ दिए। शिकायतकर्ता के मुताबिक वह 2015 में एजेंट राजेश आर्या के जरिए शिल्पा और कुंद्रा से मिले थे। उस समय ये दोनों ऑनलाइन शॉपिंग प्लेटफॉर्म बेस्ट डील टीवी के डायरेक्टर थे और शिल्पा के पास कंपनी के 87 फीसदी से ज्यादा शेयर थे। उन्होंने बताया कि एजेंट राजेश ने कंपनी के लिए 75 करोड़ का लोन 12 फीसदी सालाना ब्याज पर मांगा था, लेकिन ज्यादा टैक्स से बचने के लिए राजेश ने सलाह दी कि इस रकम को 卐निवेश卐 के रूप में दिया जाए। इसके बाद एक बैठक हुई और समय पर पैसा लौटाने के वादे के साथ डील फाइनल हो गई। अप्रैल 2015 में शिकायतकर्ता दीपक कोठारी ने पहली किस्त के तौर पर 31.95 करोड़ ट्रांसफर किए, लेकिन टैक्स से जुड़ी समस्या बनी रही। इसके बाद सितंबर में दूसरी डील हुई। शिकायतकर्ता का दावा है कि जुलाई 2015 से मार्च 2016 के बीच उन्होंने 28.54 करोड़ और ट्रांसफर किए। 3.19 लाख स्टांप ड्यूटी समेत उन्होंने कुल 60.48 करोड़ शिल्पा-कुंद्रा को दिए।

राहुल गांधी के वकील ने लिया यू-टर्न, जान को खतरा का दावा करने वाली अर्जी वापस लेंगे

मुंबई (एजेंसी)। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी के वकील ने जान को खतरा का दावा करने वाली अर्जी पर यू-टर्न लेते हुए कहा है कि वह इसे वापस लेंगे। आपको बता दें कि विपक्ष के नेता राहुल गांधी के वकील ने महाराष्ट्र के पुणे की एक अदालत में अर्जी दायर कर दावा किया था कि राहुल गांधी को सात्यकि सावरकर से जान का खतरा है। हालांकि, कुछ ही घंटों के भीतर उन्होंने यू-टर्न लेते हुए कहा कि अर्जी राहुल गांधी की सहमति के बिना दायर की गई थी। जैसे ही राहुल गांधी ने अर्जी पर कड़ी नाराजगी जताई, इसके बाद वे अदालत में अर्जी वापस ले लेंगे। स्वातंत्र्यवीर सावरकर के पोते सात्यकि सावरकर ने पुणे की विशेष एमपी/एमएलए अदालत में राहुल गांधी के खिलाफ मानहानि का मुकदमा दायर किया है। बुधवार को एडवोकेट मिलिंद दत्तात्रेय पवार ने राहुल गांधी की ओर से अदालत में अर्जी दायर कर कहा था कि गांधी को उनके वंश के कारण सात्यकि सावरकर से खतरा है। आवेदन में कहा गया है कि सात्यकि सावरकर के मातृ परिवार में महात्मा गांधी की हत्या के मुख्य आरोपी नाथूराम गोडसे और गोपाल गोडसे, और उनके पैतृक परिवार में विनायक दामोदर सावरकर शामिल हैं। सात्यकि की मां हिमानी सावरकर, गोपाल गोडसे की बेटी हैं और उनका विवाह सावरकर

के भतीजे से हुआ था। याचिका में यह भी उल्लेख किया गया है कि महात्मा गांधी की हत्या एक तात्कालिक प्रतिक्रिया नहीं थी, बल्कि एक विचारधारा से जुड़ी एक सुनियोजित साजिश थी। याचिका में उस राजनीतिक आंदोलन का भी उल्लेख किया गया है जिसे राहुल गांधी वर्तमान में चला रहे हैं। 11 अगस्त को, उन्होंने संसद में वोट चोर सरकार कहा था और मतदाता सूची में अनियमितताओं को उजागर किया था। याचिका में राहुल गांधी को मिली दो धमकियों का भी उल्लेख है- एक केंद्रीय मंत्री रवनीत सिंह बिट्टू द्वारा, जिसमें उन्हें देश का नंबर एक आतंकवादी कहा गया था, और दूसरी भाजपा नेता तरविंदर सिंह मारवाह द्वारा। वहीं सात्यकि सावरकर ने राहुल गांधी के खिलाफ 2023 में लंदन यात्रा के दौरान दिए गए एक भाषण को लेकर मानहानि का मुकदमा दायर किया है। उस भाषण में, गांधी ने सावरकर के लेख में एक घटना का उल्लेख किया था, जहाँ उन्होंने कथित तौर पर कहा था कि उन्हें एक मुस्लिम व्यक्ति पर हमला करने में खुशी मिलती है। सात्यकि ने गांधी के खिलाफ भारतीय दंड संहिता (आईपीसी) की धारा 500 के तहत मामला दर्ज किया है और दंड प्रक्रिया संहिता (सीआरपीसी) की धारा 357 के तहत मुआवजे की मांग की है। मामले की अगली सुनवाई 10 सितंबर को निर्धारित है। अब राहुल गांधी के वकील मिलिंद पवार ने एक विज्ञप्ति जारी कर जानकारी दी है कि वह शिकायत वापस ले लेंगे। उन्होंने इस प्रेस विज्ञप्ति में कहा है कि राहुल गांधी हमारे द्वारा व्यक्त किए गए विचार से सहमत नहीं हैं। हमने इस संबंध में उनकी सहमति के बिना अदालत को अर्जी सौंपा था। राहुल गांधी इससे पूरी तरह असहमत हैं। इसलिए, हम यह अर्जी वापस ले रहे हैं।

चुनाव आयोग से 'मृत' घोषित लोगों संग राहुल गांधी ने पी चाय, बिहार मतदाता सूची पर गरमा रही सियासत

नई दिल्ली। बिहार में मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) को लेकर सियासी घमासान तेज हो गया है। कांग्रेस सांसद और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने एक वीडियो साझा कर चुनाव आयोग पर तीखा कटाक्ष किया। वीडियो में राहुल गांधी कथित तौर पर उन लोगों के साथ चाय पीते दिख रहे हैं, जिन्हें निर्वाचन आयोग की सूची में 'मृत' घोषित कर दिया गया है। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर वीडियो शेयर करते हुए लिखा, जीवन में कई दिलचस्प अनुभव हुए, लेकिन 'मृत लोगों' के साथ चाय पीने का मौका पहली बार मिला। इस अनोखे अनुभव के लिए धन्यवाद, चुनाव आयोग! कांग्रेस नेता का यह व्यंग्यात्मक हमला विपक्ष के आरोपों को बल देता है कि मतदाता सूची में गड़बड़ियां कर लोगों को वोट देने से रोका जा रहा है।

रॉबर्ट वाड्रा की लोगों से अपील, राहुल गांधी की मेहनत को समझें

नई दिल्ली(एजेंसी)। कांग्रेस नेता राहुल गांधी के जीजा रॉबर्ट वाड्रा ने लोगों से राहुल गांधी की मेहनत को समझने का आग्रह किया है। वाड्रा का मानना है कि यदि लोग जागरूक नहीं होते हैं, तब भाजपा गलत तरीके से चुनाव जीतती रहेगी। यह बयान उन्होंने पंचकूला के गुरुद्वारा नाडा साहिब में मत्था टेकने के बाद दिया। प्रियंका गांधी वाड्रा के पति वाड्रा ने केंद्र पर गलत काम करने का आरोप लगाकर कहा कि इस काम को रोका जाना चाहिए। उन्होंने राहुल और प्रियंका गांधी की मेहनत की सराहना कर कहा कि लोगों को उनकी मेहनत को समझना चाहिए, क्योंकि इसका सबूत सबके सामने है। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि लोग जागरूक नहीं हुए, तब केंद्र सरकार लोगों को बांटती रहेगी और उन्हें मुश्किल में डालेगी। सोनिया गांधी के दामाद वाड्रा का यह बयान राहुल गांधी के वोट चोरी के आरोपों के बाद आया है, जिसमें उन्होंने कहा था कि चुनाव आयोग मामले में चुप है। राहुल ने पहले आरोप लगाया था कि उनकी पार्टी के शोध में कर्नाटक की एक विधानसभा सीट पर एक लाख से ज़्यादा वोट फर्जी मिले हैं। बात दें कि वाड्रा ने हरियाणा भूमि सौदे से जुड़े मनी लॉन्ड्रिंग मामले पर भी बात की। उन्होंने कहा कि वह 24 बार प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) जा चुके हैं और उन्होंने कुछ भी गलत नहीं किया है। उन्होंने ईडी से सबूत दिखाने की बात कही और कहा कि उनके पास छिपाने के लिए कुछ भी नहीं है।

अगर आपके भी हैं दो वोटर कार्ड तो तुरंत कराएं रद्द, नहीं तो खड़ी हो सकती है परेशानी

नई दिल्ली, (एजेंसी)। बिहार विधानसभा चुनाव से पहले स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन (एसआईआर) के दौरान दो बड़े नेताओं पूर्व उपमुख्यमंत्री और आरजेडी नेता तेजस्वी यादव और उप मुख्यमंत्री विजय कुमार सिन्हा के नाम पर दो-दो वोटर कार्ड मिलने का मामला सामने आया है। चुनाव आयोग ने दोनों को नोटिस जारी कर जवाब मांगा है। भारत में जन प्रतिनिधित्व अधिनियम के तहत, एक ही चुनाव क्षेत्र या अलग-अलग क्षेत्रों में एक से ज्यादा वोटर कार्ड रखना गैरकानूनी है। दोषी पाए जाने पर जुर्माना या जेल हो सकती है।

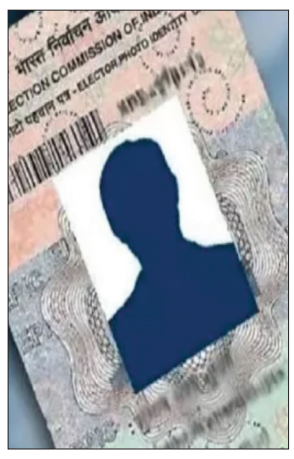

ऐसे मामलों से चुनावी प्रक्रिया की पारदर्शिता और निष्पक्षता पर सवाल उठते हैं। डुप्लीकेट कार्ड के जरिए एक व्यक्ति एक से ज्यादा बार मतदान कर सकता है, जिससे नतीजों पर असर पड़ सकता है। इसके अलावा अलग-अलग क्षेत्रों में पंजीकरण से चुनावी रिकॉर्ड में भ्रम पैदा होता है। चुनाव आयोग की वेबसाइट या वोटर हेल्पलाइन ऐप पर जाएं। अपना नाम, पिता का नाम, जन्मतिथि और राज्य डालकर सर्च करें। अगर आपके नाम पर एक से ज्यादा कार्ड हैं, तो उनकी डिटेल स्क्रीन पर दिख जाएगी। अपने क्षेत्र के बीएलओ से संपर्क करें। उनके पास आपके इलाके के मतदाताओं की पूरी सूची होती है और वे जांच कर सकते हैं।

अगर आपके नाम पर एक से ज्यादा कार्ड दर्ज हैं, तो फॉर्म-7 भरकर उनमें से एक को रद्द करवाएं। यह फॉर्म चुनाव आयोग की वेबसाइट से डाउनलोड किया जा सकता है या बीएलओ के पास रहता है। तेजस्वी यादव और विजय कुमार सिन्हा की तरह अगर आपका नाम डुप्लीकेट सूची में पाया गया तो आयोग का नोटिस मिल सकता है। जवाब न देने पर कानूनी कार्रवाई हो सकती है। अपनी वोटर आईडी की जानकारी समय-समय पर जांचें और गड़बड़ी मिलने पर तुरंत सुधार कराएं। लोकतंत्र में वोट का अधिकार केवल अधिकार ही नहीं, बल्कि जिम्मेदारी भी है और इसका सही इस्तेमाल तभी संभव है जब आपका रिकॉर्ड साफ और अद्यतन हो।

कबूतरखाना विवाद पर बोले राज ठाकरे- मंत्री हों या धार्मिक हस्तियां, कोई भी कानून से ऊपर नहीं

मुंबई (एजेंसी)। मुंबई में कबूतरों को दाना खिलाने पर लगे प्रतिबंध को लेकर जारी विवाद ने अब सियासी रंग ले लिया है। बॉम्बे हाईकोर्ट के स्पष्ट निर्देशों के बावजूद दादर के कबूतरखाना में दाना खिलाने का विरोध और आंदोलन तेज़ हो गया है। इसी बीच महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना (मनसे) के प्रमुख राज ठाकरे ने इस मामले में कड़ा रुख अपनाते हुए कहा कि कानून से ऊपर कोई नहीं है, चाहे वह मंत्री हों या फिर धार्मिक हस्तियां।

गुरुवार को मुंबई में पार्टी पदाधिकारियों की बैठक के बाद राज ठाकरे ने कहा कि बॉम्बे हाईकोर्ट ने सार्वजनिक स्थलों पर कबूतरों को दाना खिलाने पर रोक स्वास्थ्य कारणों से लगाई थी। डॉक्टरों ने पहले ही चेतावनी दी है कि कबूतरों से कई गंभीर बीमारियां फैल सकती हैं। इसके बावजूद अदालत के आदेश की अवहेलना हो रही है। ठाकरे ने कहा कि यदि जैन मुनि या कोई अन्य व्यक्ति इस आदेश का उल्लंघन करता है, तो प्रशासन को कार्रवाई करनी चाहिए।

उन्होंने आश्चर्य जताया कि राज्य मंत्री मंगल प्रभात लोढ़ा भी विरोध प्रदर्शन में शामिल हुए। ठाकरे ने सवाल उठाते हुए कहा, कि क्या उन्हें अदालत के आदेश की जानकारी नहीं है या वे इसे नज़रअंदाज कर रहे हैं? लोढ़ा परिवार को यह नहीं भूलना चाहिए कि वे राज्य के मंत्री हैं, किसी धर्म के नहीं। मनसे प्रमुख ने आगे कहा कि जब मराठी समाज ने विरोध प्रदर्शन किया, तो पुलिस ने उन्हें गिरफ़्तार किया और पत्रकारों के साथ भी मारपीट हुई। लेकिन अदालत के आदेश का उल्लंघन करने वालों पर ठोस कार्रवाई नहीं हुई। ठाकरे ने इस पर नाराज़गी जताई और कहा कि यह सरकार की दोहरी नीति है।

राज ठाकरे ने आरोप लगाया कि चुनाव नजदीक आते ही सरकार समाज में दरार डालने की कोशिश कर रही है। उन्होंने कहा, पहले हिंदी थोपने की कोशिश की, अब कबूतरों का मुद्दा खड़ा किया जा रहा है। सरकार को तभी कार्रवाई करनी चाहिए थी जब आंदोलन शुरू हुआ था।

गौरतलब है कि बीएमसी ने हाल ही में दादर के कबूतरखाने को ढक दिया था और

हाईकोर्ट ने साफ कहा था कि विशेषज्ञ समिति की रिपोर्ट आने के बाद ही इस मामले में कोई नया फैसला होगा। इसके बावजूद जैन समुदाय ने आदेश मानने से इंकार कर दिया और लोग दाना डालना जारी रखे हुए हैं।

यमन में नर्स निमिषा की जान को खतरा नहीं, सुप्रीम कोर्ट को दी जानकारी

नई दिल्ली(एजेंसी)। यमन में नर्स निमिषा प्रिया की जान को कोई खतरा नहीं है। गुरुवार को इसकी जानकारी सुप्रीम कोर्ट को दी गई। साथ ही निमिषा की मदद कर रही संस्था के वकील ने मामले को स्थगित करने की मांग की। कोर्ट ने सुनवाई आठ हफ्ते के लिए टाल दी है। यमन की कोर्ट ने निमिषा को मौत की सजा देने के लिए 16 जुलाई की तारीख तय की थी, लेकिन धर्मगुरुओं और सरकार ने यमन सरकार से बातचीत कर इसे सजा को टाल दिया गया। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक जस्टिस विक्रम नाथ और जस्टिस संदीप मेहता की बेंच मामले की सुनवाई कर रही थी। वहीं सेव निमिषा प्रिया इंटरनेशनल काउंसिल की तरफ से कोर्ट पहुंचे वकील ने मामले को स्थगित करने की मांग की। उन्होंने कोर्ट को बताया कि बातचीत चल रही है। फिलहाल निमिषा को कोई खतरा नहीं है। कृपया इसे चार सप्ताह के लिए स्थगित कर दें। उम्मीद है कि तब तक सब कुछ ठीक हो जाएगा। याचिकाकर्ता के वकील ने कहा कि कुछ अर्जेंट होता है, तो वह इस मामले को कोर्ट के सामने पेश करते। बीते महीने कोर्ट को जानकारी दी गई थी कि निमिषा की सजा-ए-मौत को फिलहाल टाल दिया गया है। 18 जुलाई को केंद्र सरकार ने भी कोर्ट को बताया था कि निमिषा को बचाने की पूरी कोशिश की जा रही है। बता दें केरल के पलक्कड़ जिले के कोल्लेंगोडे की रहने वाली नर्स को जुलाई 2017 में एक यमनी नागरिक की हत्या का दोषी ठहराया गया है। भारतीय नागरिक निमिषा को 16 जुलाई को मौत की सजा दी जानी थी, लेकिन धर्मगुरुओं और भारतीय अधिकारियों के हस्तक्षेप के बाद इसे स्थगित कर दिया गया था। निमिषा यमन की राजधानी सना की एक जेल में बंद है, जो ईरान समर्थित हूती विद्रोहियों के नियंत्रण में है। रिपोर्ट के मुताबिक यह पता चला है कि यमन में भारत की कोई राजनयिक मौजूदगी नहीं है और सऊदी अरब में भारतीय मिशन के राजनयिक इस मामले को देख रहे हैं।

मतदाता सूची से हटाए गए 65 लाख लोगों के नाम चुनाव आयोग करेगा जारी, खत्म होने को एसआईआर विवाद

नई दिल्ली (एजेंसी)। बिहार में मतदाता सूची से हटाए गए 65 लाख लोगों के नाम चुनाव आयोग अब जारी करेगा। सुप्रीम कोर्ट ने बिहार में वोटर लिस्ट के एसआईआर के खिलाफ दर्ज याचिकाओं पर सुनवाई कर यह आदेश दिया। बेंच ने कहा कि आयोग 19 अगस्त तक उन 65 लाख लोगों के नाम उजागर करे, जिन्हें वोटर लिस्ट से हटाया गया है। इसके अलावा 22 अगस्त तक आदेश के पालन की रिपोर्ट भी सौंपे। सुनवाई के दौरान निर्वाचन आयोग ने मृत, जिला स्तर पर पलायन कर चुके या दूसरे स्थानों पर जा चुके मतदाताओं की सूची साझा करने पर सहमति जाहिर की।

अगली सुनवाई अदालत में अब 23 अगस्त को होगी। बेंच ने कहा कि जिन लोगों के नाम गलत तरीके से हटे हैं, उन्हें सुनवाई के लिए 30 दिन का मौका मिलेगा। इसके अलावा आयोग बताएगा कि इन लोगों के नाम क्यों लिस्ट से हटाने का फैसला हुआ है। यदि किसी को आपत्ति होगी,

तब वह संपर्क करेगा और जरूरी दस्तावेज देने के बाद उनके नामों को शामिल किया जा सकेगा।

अदालत ने कहा कि आप वेबसाइट और स्थान के विवरण के लिए सार्वजनिक नोटिस जारी करने पर विचार करें, जहां लोगों (मृत, पलायन कर चुके या दूसरे स्थानों पर चल गए) की जानकारी साझा की जा सके। इस पर चुनाव आयोग ने बताया कि हमारे द्वारा राजनीतिक दलों के कार्यकर्ताओं को मृत, पलायन कर चुके या दूसरे स्थानों पर चले गये लोगों के नामों की सूची दी थी। इस पर अदालत ने सख्त रुख अपनाया। जस्टिस सूर्यकांत और जस्टिस जॉय बागची की बेंच ने कहा कि हम नहीं चाहते कि नागरिकों के अधिकार राजनीतिक दलों के कार्यकर्ताओं पर निर्भर रहें।

बेंच ने कहा कि मृत, पलायन कर चुके या दूसरे स्थानों पर गए मतदाताओं के नामों को नोटिस बोर्ड या वेबसाइट पर प्रदर्शित करने से अनजाने में हुई त्रुटियों को सुधारने का मौका मिलेगा। आयोग ने कहा कि राजनीतिक दलों के कार्यकर्ताओं को मृत, पलायन कर चुके या दूसरे स्थानों पर चले गये लोगों के नामों की सूची दी गई है। बेंच ने कहा कि आप इन नामों को नोटिस बोर्ड या वेबसाइट पर क्यों नहीं डाल सकते? जिन्हें दिक्कत है वह लोग 30 दिन के भीतर सुधारात्मक उपाय कर सकते हैं। इस पर आयोग ने कहा कि बिहार में एक मोटे अनुमान के मुताबिक करीब 6.5 करोड़ लोगों को एसआईआर के लिए कोई दस्तावेज जमा करने की आवश्यकता नहीं है।

"आव्या 3.0" वेडिंग एक्ज़ीबिशन के अंतिम दिन उमड़ी भीड़

सूरत,अग्रवाल विकास ट्रस्ट महिला शाखा द्वारा आयोजित "आव्या 3.0" वेडिंग एक्ज़ीबिशन के अंतिम दिन महिलाओं की भरी भीड़ उमड़ी। बुधवार से चल रही एक्ज़ीबिशन में महिलाओं ने डिज़ाइनर ज्वेलरी, डिज़ाइनर कपड़े, होम डेकॉर सहित शादी के लिए अनेकों सामान की खरीदारी की। एक्ज़ीबिशन में आगामी त्यौहार एसीएन शादियों को देखते हुए कपड़ों और गहनों की नयी-नयी डिजायन देखने को मिली। एक्ज़ीबिशन में देश के अनेकों शहरों के उधमियों ने हिस्सा लिया एवं सभी की स्टॉल पर भरी भीड़ रहीं। सभी दर्शकों ने एक्ज़ीबिशन को काफी सराया। एक्ज़ीबिशन में सुबह से ही भीड़ रही जो देर शाम तक रही। एक्ज़ीबिशन में आने वाले सभी के लिए एश्योर्ड गिफ्ट रखा गया था। इस अवसर पर महिला शाखा के पदाधिकारी एवं अनेकों सदस्या उपस्थित रहीं।

पहले लूला और फिर ज़ेलेंस्की ने पीएम मोदी को फोन लगाया, दुनिया में भारत की बढ़ती ताकत का एहसास

नई दिल्ली (एजेंसी)। ब्राजील के राष्ट्रपति लूला और यूक्रेन के राष्ट्रपति ज़ेलेंस्की द्वारा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को फोन करने के पीछे कई अहम वजहें हैं। ये दोनों नेता अलग-अलग कारणों से पीएम मोदी से संपर्क कर रहे हैं, लेकिन उनकी रणनीति का मूल एक ही है। अंतरराष्ट्रीय मंच पर भारत के बढ़ते प्रभाव का लाभ उठाना और अपनी समस्याओं के समाधान में भारत की मदद लेना।

ब्राजील के राष्ट्रपति लूला दा सिल्वा ने पीएम मोदी को उस समय में फोन किया है, जब अमेरिका ने कई देशों पर 50 प्रतिशत टैरिफ लगाने की बात कही है। इस टैरिफ से भारत और ब्राजील, दोनों ही प्रभावित हैं। ब्राजील चाहता है कि भारत ब्रिक्स जैसे मंचों का इस्तेमाल करके अमेरिका की एकतरफा नीतियों का मुकाबला करे। ब्राजील और भारत दोनों ही ब्रिक्स के संस्थापक सदस्य हैं। लूला को उम्मीद है कि भारत अपनी राजनयिक ताकत और वैश्विक प्रभाव का उपयोग करके टैरिफ युद्ध को संतुलित कर सकता है।

दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था होने के नाते, भारत में ट्रंप की नीतियों को प्रभावित करने की क्षमता है। ब्राजील चाहता है कि जब भारत अपने केस की पैरवी करे, तब वह ब्राजील के हितों का भी ध्यान रखे। यूक्रेन के राष्ट्रपति ज़ेलेंस्की का पीएम मोदी को फोन करना, एक अलग लेकिन उतना ही महत्वपूर्ण मुद्दा है। ज़ेलेंस्की को डर है कि अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप और पुतिन के बीच होने वाली बैठक में यूक्रेन को दरकिनार किया जा सकता है। भारत के रूस और पश्चिमी देशों, दोनों के साथ अच्छे संबंध हैं। ज़ेलेंस्की को उम्मीद है कि पीएम मोदी युद्धविराम वार्ता में यूक्रेन की स्थिति को मजबूत करने में मदद कर सकते हैं। जेलेंस्की चाहते हैं कि कोई भी समझौता यूक्रेन की भागीदारी के बिना न हो। वह पीएम मोदी से आग्रह कर रहे हैं कि वे उनकी चिंताओं को वैश्विक मंच पर रखें, ताकि यूक्रेन के हितों की अनदेखी न की जाए।

ब्राजील और यूक्रेन, दोनों के नेताओं को पता है कि ट्रंप की आक्रामक और अप्रत्याशित विदेश नीति से अंतरराष्ट्रीय संबंध अनिश्चित हो गए हैं। इसके बाद भारत की वैश्विक विश्वसनीयता और संतुलित विदेश नीति उसे एक महत्वपूर्ण डीलब्रेकिंग स्थिति में ले आती है। इसकारण ये नेता अपनी समस्याओं के समाधान के लिए लगातार पीएम मोदी से संपर्क साध रहे हैं। वे भारत के बढ़ते प्रभाव का उपयोग करके अपनी चुनौतियों का सामना करना चाहते हैं।